ISSN 2349-6614

जनवरी, 2018 मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

'प्रत्यूष'
16वां वर्ष

नई जिम्मेदारियों से रूबरू राहुल गांधी
हर कदम पर चुनौतियां लेंगी इम्तिहान

गुजरात व हिमाचल विधानसभा चुनाव

पंजे से छूटा हिमाचल
गुजरात फिर हुआ केसरिया

नववर्ष 2018 : हार्दिक शुभकामनाएं

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 15 अंक 11 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2015-2017 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth (Deemed) University

Airport Road, Pratap Nagar, Udaipur – 313001 (Rajasthan)
Phone: 0294-2492440, Fax: 0294-2492441Email: admissions@jrnrvu.edu.in

ADMISSIONS OPEN 2017-18

"NAAC Accredited 'A' Grade University"

Faculty of Management Studies (F.M.S.) Ph. 0294-3296232, 2490632

- Master of Business Administration (M.B.A.)
- Master of Business Administration Human Resource Management (M.B.A.- H.R.M.)

Manikya Lal Verma Shramjeevi College Ph. 0294-2413029, 9460826362
Faculty of Social Sciences and Humanities

Post Graduate :
- M.Phil. – English, Hindi, Sanskrit, Political Science, Sociology, Geography, Economics, History
- M.A.– English, Hindi, Sanskrit, Political Science, Sociology, Geography, Economics, History

Graduate :
- Bachelor of Arts (B.A.) in all subjects
- B.J.M.C

Diploma Courses :
- PG Diploma in G.I.S. and Remote sensing
- Proficiency in English and Communication Skills
- PG Diploma in Yoga Education

Certificate Course : •Spoken English

Faculty of Commerce, 0294-2413029, Mob. 9413481657

- M.Phil. – Business Administration and Accounting
- M.Com. – A.B.S.T., Business Administration
- Bachelor of Commerce (B.Com.)

Diploma Courses
- PG Diploma in insurance and Banking Management
- Marketing and Sales Management
- Taxation •Computer Basics and Accounting

Certificate Courses •Tally ERP 9.0 •Accounting Technicians (CAT) (in collaboration with ICAI)

Jyotish and Vastu Sansthan, Mo. 9460030605

- M.A. – Jyotirvigyaan
- Diploma in Jyotish and Vastu
- Certificate – Pooja Paddhati and Karm Kand
- Certificate – Bhartiya Jyotish and Hastrekha Vigyaan

Evening College, Mo. 9414166169, 9829332300, 0294-2426432

- M.A./M.Sc. (Psychology) (Inds./Educational/Clinical) (9460490072)
- M.A. Yoga Education (9829797533)
- M. Music, Vocal & Intrumental •M.Sc. Chemistry
- M.Com. – Accounting / Business administration
- M.A. – English, Hindi, Sanskrit, Political Science, Sociology, Geography, Economics, History, Public Administration, Psychology, Yoga
- B.Ed. Special Education (M.R.) (9414291078)(R.C.I. Approved)
- B.A. (all subjects) & (Psychology, Yoga, Rajasthani, Physical Education, Jyotier Vigyan, Drawing)
- B.Com. •B.Sc. •B.Lib. •M.Lib. • BCA • MCA
- B. Music •Bachelor in Special Education (HI/LD) (B.Ed. Special HI/LD)
- Bachelor in Special Education BI (B.Ed. Special BI) •B.A. (Additional) in all subjects.
- PG Diploma – Guidance and Counseling
- P.G. Diploma – Yoga Education (9352500445)
- Diploma in Special Education (MR, HI and VI) *(to be approved)*
- Certificate in Spiritual Values and Human Values •Diploma in Heart Fulness and Health Management
- Diploma and Certificate in Fine Arts •Certificate– French/German/Spanish Language
- Diploma in Dietetics and Applied Nutrition

Department of Business Management Studies, Ph. 0294-2413029, 9460022300

- Bachelor of Business Administration – (B.B.A.)
- Master of International Business – (M.I.B)
- Master of NGO Management •P.G. Diploma – Training and Development

Department of Physical Education, Mo. 9829943205, 9352500445

- Master in Physical Education (M.P.Ed.) •M.A. (Yoga Education)

Department of LAW, Mo.: 9414343363, 9928246547

- LL.M. (2 Year Degree Course)
- LL.B. (3 Year Degree Course)
- B.A. – L.L.B. (5 Year Integrated Course)
- P.G. Diploma in Forensic Science (1 Year)
- P.G. Diploma in Labor LAW (1 Year)
- P.G. Diploma in Cyber LAW (1 Year)

Faculty of Computer Science and Information Technology
(Ph. 0294-2494227, 2494217, Mo.: 9887285752)

- M.Phil. (Computer Science)
- M.C.A. Lateral Entry in II Year
- B.C.A. (Bachelor of Computer Application)
- B.Sc. (Computer Science)
- M.C.A. (Master of Computer Application)
- P.G.D.C.A.
- M.Sc. (Computer Science)

Faculty of Engineering and Technology, Mo. 9829009878, Ph.: 0294-2490210

- B.Tech. - Civil, Electrical, Mechanical, Electronics and Communication, Computer Science Engineering
- Diploma – Civil, Electrical, Mechanical, Electronics and Communication, Computer Science Engineering

Institute of Rajasthan Studies (Sahitya Sansthan) Ph.: 0294-2491054

- M.A. – Ancient History of India, Culture and Archeology
- P.G. Diploma in Archeology

Udaipur School of Social Work, Ph.: 0294-2491809

- Master of Social Works (MSW)
- Master of Social Works (Executive)
- P.G. Diploma in N.G.O. Management
- P.G. Diploma in H.R.M.
- P.G. Diploma in Rural Development
- Certificate Course in Road Safety

Directorate of Janshikshan and Extension Programme Mob. 94 14 737125

- **Department of Agricultural Sciences – 98872 71976**
  -B.Sc. Agriculture Honors
- **Department of Rural Technology and Management – 98872 71976**
  - B.Sc. Rural Technology and Management
- **Department of Women Studies - 0294-2490234**
  -Diploma in Computer Application (D.C.A.)
  -P.G. Diploma in Gender Studies and Technology
- **Maharana Kumbha Sangeet Kala Kendra – 94602 54432**
  -Sangeet Bhushan – One Year Course
  -Sangeet Prabhakar – Two Years Course
- Mangalmurty Indira Gandhi Janta College
- Department of Lok Shikshan
- Department of Community Centres
- Department of Janpad

Faculty of Education
Lok Manya Tilak Teachers' Training College, Dabok (Ph.: 0294-2655327, 2657753)

- M.Phil. •M.Ed. •M.A. (Education) •B.Ed. •B.A. – B.Ed. (Integrated)
- B.Sc. – B.Ed. (Integrated) •B.Ed. (Child Development) •D.El.Ed.
- M.P.Ed. •B.Ed. – M.Ed. (Integrated)

Manikya Lal Verma Shramjeevi Girls College, Dabok, (Ph. 0294-2655223, Mo. 9460856658)

- B.A. •B.Com. •M.A. •M.Com.

Faculty of Medicine
Rajasthan Vidyapeeth Homeopathic Medical College and Hospital, Dabok,
Ph.: 0294-2655974-5 Mo.: 9414156701, 9351343740

- Bachelor of Homeopathic Medicine and Surgery (B.H.M.S.)

Department of Physiotherapy Ph.: 0294-2656271, Mo.: 9414234293

- Master of Physiotherapy •Bachelor of Physiotherapy
- Post Graduate Fellowship in Geriatric Rehabilitation

Vocational Education

- Bachelor of Vocation (B.Voc.) in Hospitality & Catering Management

For more information visit University website www.jrnrvu.edu.in

Registrar

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक **विष्णु शर्मा हितैषी**

सम्पादक **रेणु शर्मा**

प्रबन्ध सम्पादक **नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा**

विपणन प्रबन्धक **नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता**

टाइप सेटिंग **जगदीश सालवी**

Supreme Designs
कम्प्यूटर ग्राफिक्स **विकास सुहालका**

मुद्रक **पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.**
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कमावत, जितेन्द्र कमावत,
ललित कमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग वेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313001

प्रत्यूष
सफलता के 15 वर्ष

समय की रेत पर छोड़ें कामयाबी के निशां

व्यक्ति रुक सकता है, लेकिन समय एक पल भी ठहरता नहीं। यही उसकी नियति है और स्वभाव भी। दिन, सप्ताह, माह और वर्ष कब बीत जाते, पता ही नहीं चलता। परिवर्तन ही सृष्टि का शाश्वत नियम है। इसलिए प्रकृति से तादात्म्य बनाए रखना प्राणिमात्र के लिए ज़रूरी है। बदलाव के दौर में जो पीछे रह जाता, वह 'आउट ऑफ डेट' अथवा 'आउट ऑफ डेस्टिनी' है। सन् 2018 के रूप में हमें एक और नए साल की सौगात मिली है। पिछले साल के सिंहावलोकन का यह बेहतरीन मौका है कि हमने क्या पाया और क्या खोया? भूलों को सुधारते हुए नए संकल्प और सपनों के साथ आगे बढ़ें। संकल्प के पुरोधा वक़्त की वल्गा को थाम लेते हैं। हार-जीत, आशा-निराशा, उपलब्धि-अनुपलब्धि जीवन के अभिन्न हिस्से हैं। क्षणभंगुर जीवन में इंसान की आयु ही कौनी है। फिर भी वह है, अनंत परमात्म शक्ति का लघुतम अणु, इसीलिए उसमें परम अणु बनने की अपार संभावनाएं भी मौजूद हैं। व्यक्ति आत्मकल्याण से जन कल्याण के दिव्य मार्ग पर चल कर हजारों लोगों का भला कर सकता है। श्रीकृष्ण कहते हैं जब-जब धर्म की हानि होती है, मैं धर्म की स्थापना के लिए जन्म लेता हूं। यानी पुरातन के गर्भ से जब भी नई संभावनाएं प्रस्फुटित होने के लिए संघर्ष कर रही होती, तो कुछ व्यक्ति माध्यम बनकर नए जीवनदर्शन के वाहक बनते हैं। ऐसे ही दिव्य पुरुष, राम, कृष्ण, जीसस, मोहम्मद, जरथुस्त्र, बुद्ध और महावीर होते हैं। गुजरी सदियों में मार्टिन लूथर किंग, लिंकन, लेनिन, रूसो, गांधी, कृष्णामूर्ति, विवेकानंद आदि भी थे। बहुत से ऐसे नाम भी होंगे, जिन्हें इतिहास अपने पन्नों पर उकेरने से चूका अथवा जान-बूझकर भूल गया। फिर भी वे थे तो संघर्ष के राही, जिन्होंने मानव मात्र की भलाई के लिए अपना जीवन समर्पित किया। सामान्यजन में भी ऐसे नायक, समाजसेवी और जनकल्याण को समर्पित अनेक व्यक्तित्व हैं, जिनके प्रयासों से राष्ट्र के पथ पर विकास रथ का पहिया अविरल घूम रहा है।

पिछली सदियों में ज्ञान-विज्ञान, धर्म और विचारों का काफी फैलाव हुआ। कम्युनिकेशन और मीडिया के एडवांस्ड संसाधनों के कारण देश-विदेश की हर अच्छी-बुरी ख़बरें पलक झपकते ही विश्व के एक कोने से दूसरे कोने पर पहुंच रही है। कम्प्यूटर, इंटरनेट, गूगल के सर्च इंजन तहखाने में सहेजी जानकारी को मिनटों में आपके दृश्य पटल पर ले आते हैं। यह एक अच्छी उपलब्धि तो है, परन्तु इन संसूचनाओं के बीच अपने मौलिक चिंतन, मनन और नीर-क्षीर विवेक को भी बनाए रखने की जरूरत है। ज्ञान-विज्ञान, नैतिक उपदेश और साधु-सन्तों के नियमित व्याख्यान के बावजूद इंसान की सोच में अपेक्षित बदलाव की अभी ज़रूरत है। वह अपनी कल्पनाओं, समस्याओं और समाधान के नाम पर जहां का तहां, बल्कि उससे भी बदतर हालत पर खड़ा है। जीवन के गहरे द्वंद्वों का उसके अन्तः रणस्थल पर घमासान मचा है। एक अति से दूसरी अति के बीच वह पैंडुलम बना है। गौतम बुद्ध ने कहा - 'जीवन है तो समस्याएं भी होंगी। दुःख है तो उसका कारण भी है और निरोध भी। दुःख दूर करने का उपाय भी है और जीवन की एक दुःखमुक्त अवस्था भी है।' हरेक को कर्मपथ पर चलना ही पड़ेगा। विवेकानन्द कहते, 'उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक मंजिल न मिल जाए।' हर युग के महापुरुषों ने जीवन को उत्सव कहा है, जिसे पूरे आंनद के साथ जीना चाहिए। शाश्वत विचारों, आहार और विहार के मध्य सामंजस्य व समाहार की जरूरत है। उत्कर्ष के शिखर पर वे ही विचार प्रतिष्ठत व सार्थक होते हैं, जो युग के देश-काल, स्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार हों। इनमें नई बातों को जोड़ना जरूरी है। कोई विचार पुराना होने से ही सर्वकालिक नहीं बन जाता और नया होने पर त्याज्य नहीं हो जाता। समय की कसौटी पर परखने के बाद संशोधन समझदारी है। नया विचार और युगानुरूप संव्यवहार ही नई दुनिया का सर्जक होगा। युग के कल्पतरु पर नई कौंपलों का प्रस्फुटन सनातन नियम है। हमारे यहां दुनिया से पहले ज्ञान की ज्योति जली और हमसे ही दुनिया ने ज्ञान-विज्ञान सीखा। इस मिथ्या दंभ ने ढाई हजार साल तक हमारे ही पैरों में गुलामी की बेड़ियां डाले रखी। इस पर गंभीर चिंतन की जरूरत है कि दुनिया की सबसे पुरातन सभ्यता-संस्कृति का विराट सर्जक होने के बावजूद भारत को क्यों पराधीनता की गुहा में असहाय अवस्था में रहना पड़ा? क्यों हमारा वैभव लुट गया और हम दीन-हीन, निर्बल, कातर बने रहे? क्यों हम पुरुषार्थ और नवोन्मेष से विमुख रहे? आजादी के बाद देश का चिंतन बदला, दिशा बदली, परन्तु आम जनमानस परमुखापेक्षी ही बना रहा। अब भारत को उठना होगा। देश के एक अरब तीस करोड़ देशवासी तंद्रा की अवस्था छोड़ कर उठ खड़े होंगे, तो भारत फिर से विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक ताकत बन जाएगा। इस दृढ़ संकल्प की आज जरूरत है। आपकी पारिवारिक पत्रिका 'प्रत्यूष' आपके लाड़-प्यार और आशीर्वाद से प्रकाशन के 15 वर्ष पूर्ण कर 'सोलहवें' में प्रवेश कर रही है। इसे आगे भी आपके सहयोग और मार्गदर्शन की आवश्यकता रहेगी। आपने हौसला दिया, तदर्थ आभारी हूं। नए साल पर नए उत्साह, नए जोश, नए संकल्प और नई आशाओं के साथ आत्म कल्याण और राष्ट्र निर्माण के महायज्ञ के यशस्वी बनें। शुभकामनाएं स्वीकारें।

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com, pankajkumarsharma2013@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

साढ़े चार साल के चिंतन और संघर्ष के बाद

राहुल गांधी ने उठाया सत्ता के 'ज़हर' का प्याला

पार्टी कार्यसमिति ने की निर्विरोध निर्वाचन की घोषणा

मां ने आशीष के साथ ही सौंपी कांग्रेस के 60वें अध्यक्ष की कमान

पंकज शर्मा

132 बरस पुरानी 'द ग्रैंड ओल्ड पॉलिटिकल पार्टी ऑफ इंडिया' की कमान अब राहुल गांधी के हाथों में हैं। कांग्रेस कार्यसमिति की ओर से घोषित चुनाव कार्यक्रम के अनुसार पिछले साल यानी पिछले माह चार दिसम्बर को एकमात्र प्रत्याशी राहुल गांधी ने अपना नामांकन भरा और पांच दिसम्बर को ही स्पष्ट हो गया कि वे ही कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष होंगे। यानी यह चुनाव प्रतीकात्मक ही था। हालांकि राहुल गांधी ने अपनी ताजपोशी को लेकर कोई जल्दी कभी नहीं दिखलाई और ना ही उनकी मां सोनिया गांधी ने, जो विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी के अध्यक्ष के तौर पर निर्बाध उन्नीस वर्ष पूरा कर चुकी है। नेहरू-गांधी परिवार के वारिस राहुल गांधी इस परिवार के छठे शख्स हैं, जिन्हें यह अहम पद मिला है। 132 साल में नेहरू-गांधी परिवार 44 साल अध्यक्ष रहा। कांग्रेस की स्थापना 1985 में ए. ओ. ह्यूम ने की थी। इसके पहले अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे। उनके बाद अब तक करीब 59 लोग कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। आजादी के बाद नेहरू-गांधी परिवार का साया कांग्रेस पर पूरी तरह छाया रहा। देश को आजादी मिलने के बाद जवाहर लाल नेहरू ने 40 साल की उम्र में कांग्रेस संगठन के बलबूते 17 साल केन्द्र की सत्ता संभाली। उनकी पुत्री इंदिरा गांधी ने 41 वर्ष की आयु में 18 साल देश की बागडोर संभाली तथा इन्दिराजी के पुत्र राजीव गांधी ने 41साल की उम्र में पांच साल देश पर शासन किया। इस तरह 1947 के बाद 40 साल तक यह परिवार सत्ता में रहा। मनमोहन सिंह के यूपीए शासन के 10 साल अप्रत्यक्ष सत्ता के जोड़े दें तो आधी शताब्दी हो जाती है। क्योंकि इस दौरान वे सत्तारूढ़ यूपीए गठबन्धन की चेयरपर्सन भी थी। नेहरू-गांधी परिवार ने आजादी के पहले और आजादी मिलने के बाद देश सेवा की अप्रतिम मिसाल पेश की, जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

सोनिया गांधी का क्रिटिकल दौर

निवर्तमान अध्यक्ष सोनिया गांधी ने अपने जीवन में इतने उतार-चढ़ाव देखे कि उनके वास्तविक जीवन में 'हैपिली एवर आफ्टर' जैसा कभी कुछ देखने को नहीं मिला। 1968 में राजीव गांधी से शादी कर जब वे 'हाउस वाइफ' के दायरे तक प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की बहू बनी और सोलह साल तक सिर्फ परिवार तक सीमित रही। उनके जीवन की दर्दनाक घटना 31 अक्टूबर 1984 की सुबह घटित हुई, जब वे सास का खून से लथ-पथ शरीर गोद में रख कर सफदरजंग अस्पताल पहुंची। दूसरा वज्रपात उन्हें तब सहना पड़ा। 'जब 21 मई, 1991 को दिल्ली से दो हजार किलोमीटर दूर श्रीपेरूम्बुदूर से उनके पति राजीव गांधी का शव दिल्ली लाया गया। वे तब पत्थर की मूर्ति सी बन गई, जब उनके अश्रुरूदन के बीच इक्कीस साल का बेटा राहुल और उन्नीस साल की बेटी प्रियंका ने अपनी गोद में झुलाने वाले प्यार पिता का रक्तरंजित शव देखा और उन्होंने कारुणिक क्रंदन शुरू कर दिया। परमेश्वर किसी के जीवन में ऐसा अनहोना पल किसी को न दिखावे। सोनिया गांधी ने विषम प्रतिकूल स्थितियों मे भी साहस की डोर थामे रखी। बाद के वर्षों में कितने सदमों और दु:स्वप्नों से गुजर कर उन्होंने अपनी

जिम्मेदारियों का धैर्य के साथ निर्वहन किया। मई 1991 में राजीव की हत्या के बाद वरिष्ठ नेताओं ने पूछे बिना ही उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाए जाने की घोषणा कर दी, परन्तु सोनिया ने स्वीकार नहीं किया, क्योंकि उन्होंने कभी भी राजनीति में न आने की कसम खाई थी। 1996 में नरसिंह राव की सरकार जाने के बाद पार्टी की चिंता और बढ़ गई।

1997 में सोनिया ने कांग्रेस पार्टी के एकीकरण और देश सेवा का संकल्प जताया। अगले ही वर्ष उन्हें सीताराम केसरी के नेतृत्व में पार्टी की चुनावी हार पर अध्यक्ष बनाया गया, जिसे उन्होंने अनमने भाव से स्वीकार किया। भाजपानीत सरकार बन जाने पर उन्होंने लोकसभा में विपक्ष का नेता पद संभाला। पांच साल बाद ही उन्होंने कड़ा संघर्ष और पार्टी का व्यापक फैलाव कर कांग्रेस को 2004 में सत्ता के शिखर तक पहुंचा दिया। भारतीय राजनीति के इतिहास में सर्वाधिक मर्मस्पर्शी घटना के तहत अप्रत्याशित कुर्बानी वाला क्षण तब आया, जब उन्होंने सत्ता की जीती हुई बाजी में भारत का प्रधानमंत्री बनने का अवसर अस्वीकार कर मनमोहन सिंह के सिर ताज रख दिया। दस साल तक वे सत्ता के शिखर पर जल-कमलवत रही, जिसकी देश के सार्वजनिक जीवन में दूसरी मिसाल नहीं। उन्होंने दो बार केन्द्र में और 26 राज्यों में कांग्रेस की सरकारें बनवाई। 2014 में कांग्रेस ने पिछले 70 साल में सबसे खराब प्रदर्शन किया। कांग्रेस दो अंकों में सिमट गई और सात राज्यों में खाता तक नहीं खुल सका। सोनिया गांधी अब स्वास्थ्य कारणों से कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष पद छोड़कर त्याग की दूसरी मिसाल पेश कर चुकी है। देशवासी यह तो याद रख ही सकते हैं कि उनकी त्याग, तपस्या, देशप्रेम और निर्णय स्वहित में नहीं रहा। भले ही उनके बाद उनके पुत्र राहुल गांधी इस बार कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बन गए, परन्तु वह एक सांगठनिक प्रक्रिया का सहज हिस्सा है और देश-दुनिया में भी ऐसी ढेरों नजीरें सामने हैं। वंशवाद के आरोप इस सियासी परिवार के अतुलनीय बलिदान और साहसिक योगदान के सामने तिरोहित हो जाते हैं।

राहुल ही आशा की किरण

ज़रा याद करें वह भावुक वक्तव्य, जो राहुल गांधी ने आज से चार वर्ष पूर्व जयपुर में 19 जून, 2013 को आयोजित चिंतन शिविर में कांग्रेस का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद दिया था कि पिछली रात मेरी मां ने चिंतित स्वर में कहा था कि 'सत्ता और राजनीति एक ज़हर है।' तब उन्होंने कहा था कि देश और संगठन की खातिर मुझे यह ज़हर पीना भी स्वीकार है। भला ऐसा साहसी वक्तव्य कौन दे सकता है, जिसने कुछ बरस पहले ही अपनी दादी और अपने पिता की रक्तरंजित लाशें देखी हों? राहुल गांधी ने डेढ़ दशक पहले 2004 में सियासी जीवन की शुरुआत अपने 34वें जन्मदिन से ज़रा ही पहले अमेठी से लोकसभा चुनाव जीत कर की। यूपीए-प्रथम कार्यकाल के दौरान 2007 में उन्हें पार्टी का राष्ट्रीय महासचिव तथा यूथ कांग्रेस एवं एनएसयूआई का प्रभार दिया गया। 2009 में कांग्रेस को दोबारा सत्ता मिली। उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल होने का अवसर मिला, परन्तु उनकी दिलचस्पी सत्ता में नहीं रही और उसकी जिम्मेदारियों में बिल्कुल नहीं। वे देशभर में घूम कर पार्टी की रीति-नीति और जनमुद्दों पर तीखी प्रतिक्रियाएं देते रहे। कई बार तो अपनी ही सरकार के खिलाफ भी जनाक्रोश के बीच खड़े मिले। भट्टा-परसौल में जबरदस्ती सस्ते दाम पर भूमि अधिग्रहण के मुद्दे पर वे विरोध पक्ष के साथ तन कर खड़े हो गए। दोषी राजनेताओं को अयोग्य ठहराने वाले अपनी ही पार्टी की सरकार द्वारा प्रस्तावित अध्यादेश को 'कम्प्लीट नॉनसेंस' करार दिया। 2013 में उन्हें कांग्रेस उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। हालांकि 2014 के आम चुनाव में कांग्रेस सिर्फ 44 सीटों पर सिमट गई। फिर भी वे ऐसे योद्धा राजकुमार बन गए, जो अन्याय से लड़ने की कसम खा चुके हैं। उन्होंने पुराने दिग्गजों को दरकिनार कर युवा फौज बना डाली। हालांकि 2014 के आम चुनाव और बाद में हुए राज्य चुनावों में उनका साबका नरेन्द्र मोदी जैसे अनुभवी सियासतदां से पड़ा। हकीकत यह भी है कि मोदी की जीत कांग्रेस की कमजोरी नहीं बल्कि, यूपीए राज में कुछ भ्रष्ट मंत्रियों के घपले-घोटालों का परिणाम था। इतिहास गवाह है कि कांग्रेस जब भी कमजोर हुई, अपने ही लोगों ने उसे छला। मोदी की महाविजय के बाद पंजाब व कर्नाटक को छोड़ कर अधिकतर राज्यों में कांग्रेस हाशिए पर चली गई। हिन्दी पट्टी के राज्य राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ़ आदि के साथ महाराष्ट्र, हरियाणा, जम्मू कश्मीर और असम को भी कांग्रेस ने खो दिया। भारतीय राजनीति में कोई भी दल तभी उभरता है जब राज्यों में ताकतवर होता है। लेकिन पूरे देश में कांग्रेस की प्रदेश इकाइयां एकदम छिन्न-भिन्न हो गई। पार्टी का वोट बैंक पूरी तरह खत्म हो गया। 2017 के विधानसभा चुनावों में भाजपा 'मुकद्दर का सिकंदर' बन कर उभरी, जिसे यूपी और उत्तराखण्ड में छप्पर फाड़ विजय मिली।

सबसे बड़ी चुनौती

राहुल के समक्ष पहली सबसे बड़ी चुनौती संगठन को मुकाबला लायक बनाने की होगी। फिलहाल कुछ राज्यों को छोड़ दें तो कांग्रेस पूरे देश में सत्ता से बेदखल है और उसका साफ असर लगातार चुनावी पराजयों से दिख भी रहा है। बतौर अध्यक्ष राहुल गांधी को पार्टी कार्यकर्ताओं को टूटते मनोबल से उत्पन्न हताशा से निकालना होगा, ताकि वे विरोधियों के जमीन पर होने वाले हमलों का जवाब दे सकें। गुजरात चुनाव अभियान में राहुल ने उस क्षमता का प्रदर्शन भी किया, लेकिन इसे बरकरार रखकर 2019 तक लगातार होने वाले विधानसभा चुनावों में पार्टी की सत्ता में वापसी सुनिश्चित करनी होगी। तभी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस मजबूती से लड़ पाएगी।

कांग्रेस सिर्फ पंजाब में अच्छी विजय का स्वाद चख पाई और तो और गोवा, मणिपुर में तो जीती हुई बाजी भी कांग्रेस हार गई। भाजपा ने अपनी मर्जी के व्यक्ति को राष्ट्रपति भवन में निर्वाचित करवा दिया, वहीं उपराष्ट्रपति पद भी कांग्रेस से छीन लिया और राज्यसभा में भी अपनी स्थिति मजबूत कर ली है।

संघर्षों के हमराही को जनता का मिला विश्वास

राहुल गांधी ने भारी पराजय को संघर्ष में बदलने की ठानी और अमेरिकी विश्वविद्यालय परिसर में प्रभावी भाषणों ने राहुल को ग़जब का आत्मविश्वास दिया। गुजरात में तो एक बारगी तो भाजपा के पांव उखड़ने लगे थे। राहुल ने भाजपा के विकास के वादे का मजाक उड़ाते हुए मोदी को कठघरे में खड़ा किया। अमित शाह के बेटे जयशाह के कंपनी घोटाले को खूब भुनाया और जीएसटी को 'गब्बर सिंह टैक्स' बता कर सुर्खियां बटोरी। उन्होंने उन लोगों को करारा जवाब दिया जो उनके हिन्दू होने पर प्रश्न उठा रहे थे। उन्होंने मंदिरों में श्रद्धा और विश्वास के साथ मत्था टेककर गुजरात के लोगों में अपनी खास जगह बनाई। हार्दिक पटेल, जिग्नेश मेवाणी और अल्पेश ठाकोर की तिकड़ी को अपने साथ लाकर वोटों का तगड़ा ध्रुवीकरण किया। परन्तु राजनीति और क्रिकेट का खेल भारी अनिश्चितता वाला है, जिसमें थोड़ी सी चूक या विरोधी पक्ष की चालबाजी नतीजों को पलट देती है। इसके अलावा उनका मुकाबला सीधे प्रधानमंत्री से था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने गुजरात चुनाव को नाक का सवाल बना कर तमाम संसाधन झोंक दिए। लेकिन वहां हार कर भी कांग्रेस ने अच्छी टक्कर दी। इसी के साथ हिमाचल प्रदेश में पांच साल से काबिज कांग्रेस को मुंह की खानी पड़ी। 2013 में राहुल के उपाध्यक्ष बनने के बाद 29 राज्यों में विधानसभा चुनाव हुए, जिनमें मिज़ोरम, मेघालय, पुडुचेरी, पंजाब, कर्नाटक में ही कांग्रेस को जीत मिली। सोनिया गांधी के अध्यक्ष बनने के वक्त देश के 19 प्रतिशत इलाके पर कांग्रेस का शासन था। जो अब घटकर 10 फीसद इलाके पर रह गया। अत: राहुल के सामने चुनौती गंभीर है।

फर्श से अर्श तक पहुंचना असंभव नहीं

राजनीतिक परिदृश्य बदलते रहते हैं। राहुल गांधी हाल ही में हुई कांग्रेस की हार से कतई निराश नहीं हैं। उन्होंने चुनाव के दौरान जो आत्मविश्वास का परिचय दिया, जो तल्ख तेवर दिखाया, वह काबिल-ए-तारीफ है। वे चुनावी लड़ाई को भाजपा के घर में भीतर तक ले गए। उन्होंने कांग्रेस मुक्त बनाने का सपना संजोने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को दिसम्बर की तीखी सर्दी में पसीने-पसीने कर दिया। अब वे कांग्रेस को पूरे भारत की पार्टी बनाने का सपना पाले रणक्षेत्र में उतरे हैं। अब तक का इतिहास है, जब कांग्रेस में सब तरफ निराशा होती है तो गांधी परिवार ही पार्टी को संकट से उबारता है। उन्हें बड़बोले और संकट पैदा करने वाले बयानी नेताओं को तुरंत बाहर का रास्ता दिखाना होगा और जनता से जुड़े लोगों को ऊपर लाना होगा। पार्टी को वापस शहर के चौराहों व गांव के चौबारों तक जाना होगा, जहां पार्टी का मूल आधार है। सड़कों पर नारेबाजी और बंद कमरों की गोष्ठियां उसे आगे नहीं बढ़ा पाएगी। अपने आप को खोजना और नई राहों को तलाशना होगा। कांग्रेस के सिद्धान्त उन मूल्यों से बने हैं, जो उसे आजादी के आंदोलन से हासिल हुए। कांग्रेस पूरी तरह जिंदा है और वह जनता के दिलों में आज भी धड़क रही है। राहुल को देश गंभीरता से ले रहा है। उन्हें मोदी का जवाब मान रहा है। सोनिया गांधी यूपीए को एकसूत्र में बांधे रखने के लिए कांग्रेस की मुख्य संरक्षक की हैसियत में बनी रहेगी। प्रियंका गांधी कांग्रेस की बंद मुट्ठी है। उन्हें भी कांग्रेस की मजबूती के लिए प्राणपण से जुटना होगा। आम कार्यकर्ताओं को सम्मान देना होगा। अगले साल कई राज्यों के विधानसभा चुनाव होने हैं और 2019 में आम चुनाव। राहुल को कांग्रेस का पुराना वैभव लौटाने के लिए जुटना होगा। कांग्रेस की मजबूती देश और समाज के लिए जरूरी है।

राहुल नामा

जन्म : 19.06.1970

शिक्षा : हार्वर्ड से ग्रेजुएट, कैम्ब्रिज विवि से एमफिल

जॉब : मैनेजमेन्ट गुरु माइकल पोर्टर के साथ तीन साल तक जॉब

राजनीतिक पारी : 2004 में पहली बार राहुल पारंपरिक चुनाव क्षेत्र अमेठी से चुनाव लड़े व जीत हासिल की।

उपाध्यक्ष बने : 2013 में चिंतन शिविर में राहुल को पार्टी का उपाध्यक्ष बनाया गया। जापानी मार्शल आर्ट आईकिडो से ब्लैक बेल्ट, तैराकी-दौड़ से लगाव

1885 में रखी गई कांग्रेस की नींव

कांग्रेस अध्यक्ष	वर्ष
सोनिया गांधी	1998-2017
सीताराम केसरी	1996-98
पीवी नरसिंह राव	1992-96
राजीव गांधी	1985-91
इंदिरा गांधी	1978-84
देवकांत बरुआ	1975-77
शंकरदयाल शर्मा	1972-74
जगजीवन राम	1970-71
एस. निजलिंगाप्पा	1969
के. कामराज	1964-67
नीलम संजीव रेड्डी	1960-63
इंदिरा गांधी	1959
यूएन ढेबर	1955-59
जवाहरलाल नेहरु	1951-54
पुरुषोत्तम दास टंडन	1950
पट्टाभि सीतारमैया	1948-49
जे बी कृपलानी	1947 आजादी से पहले

प्रमुख कांग्रेस अध्यक्ष

अबुल कलाम आजाद	1940-46
सुभाष चंद्र बोस	1938-39
जवाहरलाल नेहरु	1936-37
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	1934-35
मदन मोहन मालवीय	1932, 18, 09
सरदार वल्लभभाई पटेल	1931
जवाहरलाल नेरु	1929-30
मोतीलाल नेहरु	1928, 1919
मुख्तार अहमद अंसारी	1927
सरोजिनी नायडू	1925
महात्मा गांधी	1924
अबुल कलाम आजाद	1923
लाला लाजपत राय	1920
एनी बेसेंट	1917
गोपाल कृष्ण गोखले	1905
दादाभाई नोरोजी	1906, 1893

With Best Compliments, Complition fifteen year's of the 'Pratyush'

Deepak Bordia

Chartered Engineer. M.I.E., F.I.V.
Approved Valuer

BORDIA & ASSOCIATES

ARCHITECTURAL DESIGNER, PLANNER & BUILDER EXECUTE
ALL KIND OF CIVIL ENGINEERING WORKS

211, Shubham Complex, 11-A New Fatehpura, Near Sukhadia Circle
Uaipur -313 004 (Raj.), Ph.: 2419465 (O) 2524202 (R)
e-mail : deepakbordia@hotmail.com I bordiaandassociates@gmail.com

2019 के चुनाव की राह हुई आसान

हिमाचल में हारा 'पंजा'

गुजरात में फिर 'कमल' कायम

हिमाचल में भाजपा ने कांग्रेस से सत्ता छीनकर दो-तिहाई सीटें यानी 44 सीटें जीत ली, वहीं कांग्रेस को मात्र 21 सीटें मिली। गुजरात में भाजपा को मात्र 99 सीटें मिली, जो बहुमत के जादुई आंकड़े से मात्र 7 ज्यादा है, कांग्रेस ने भी पिछले बत्तीस सालों का रिकॉर्ड तोड़ते हुए 77 सीटें प्राप्त की। कांग्रेस तीन दशक से भी अधिक समय से गुजरात में सत्ता से बाहर है। मतदाताओं ने दोनों ही दलों के नेताओं को आईना दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। चुनावी नतीजे दोनों के लिए सबक और 2019 के लिए गंभीर चेतावनी है।

18 दिसम्बर को घोषित चुनाव परिणामों पर पूरा देश की नज़र रही। दोनों प्रमुख दलों के तमाम अन्तर-विरोध और सियासत की ऊहापोह के बीच इस बार गुजरात विधानसभा चुनाव में भाजपा ने लगातार छह बार जीत का परचम फहरा कर राजनीतिक पंडितों को चौंका दिया। गुजरात में राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने इस बार अदम्य साहस दिखाया और भाजपा को बाजी जीतने के लिए नाकों चने चबाने पड़े।

शांतिलाल शर्मा

हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी राज्य में बुशहर के राजा के 'हाथ' से उसका मजबूत किला निकल गया। यहां पर कांग्रेस को अपनी अन्दरूनी कलह ले डूबी और एंटी इन्कंबेंसी से सत्ता गंवानी पड़ी। भाजपा ने यह राज्य कांग्रेस से छीन लिया। साबरमती के संत महात्मा गांधी और भारत के लौहपुरुष माने गए सरदार पटेल के गुजरात राज्य में भाजपा ने बाईस साल से अभेद्य रहे 'गढ़' पर अपना कब्जा बरकरार रखते हुए चुनाव में विधानसभा की कुल 99 सीटें जीत कर फिर अपना रुतबा कायम रखा। पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश में 1977 से हर पांच साल में सत्ता बदलने की परम्परा इस बार भी प्रभावी रही। जनता ने कांग्रेस के 'हाथ' से सत्ता छीनते हुए भाजपा को 44 सीटें देते हुए 'कमल' खिला दिया है। दोनों ही राज्यों में मुख्यमंत्री के चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो गई है, वहीं कांग्रेस ने भी प्रतिपक्ष के नेता के चयन की कसरत शुरू कर दी है। गुजरात और हिमाचल में भाजपा सरकारें बनने पर उन्नीस राज्यों पर उसका कब्जा हो गया है और कांग्रेस अब पांच राज्यों में सिमट गई है।

गुजरात में मोदी को राहत, पर राहुल को न किया आहत

दो दशकों से ज्यादा समय से गुजरात में सत्ता पर काबिज भाजपा अपने 'गौरव' बचाने में कामयाब तो रही, मगर दिसम्बर की ठण्डी रातों में पसीने से तरबतर हो गई। 150+ का ख्वाब देख रही बीजेपी 99 पर अटक गई। उसने पिछले चुनाव के मुकाबले 16 सीटें गंवाई। आश्चर्यजनक रूप से कांग्रेस ने अपना वोट बैंक बढ़ाते हुए 77 सीटें जीत ली, जो पिछले बत्तीस सालों में सर्वाधिक है। कांग्रेस के लिए यह बहुत बड़ी मनोवैज्ञानिक जीत है, वहीं भाजपा के रणनीतिकार इस मामूली जीत पर

अपना सिर धुन रहे हैं। सबसे लम्बी समुद्री सीमा वाले समृद्ध गुजरात राज्य की सियासत की गाथा काफी रोचक है। इस राज्य को भाजपा का गढ़ और हिन्दुत्व की प्रयोगशाला माना जाता है। गुजरात में भाजपा 1980 से चुनाव मैदान में है। उसने 1990 में सीटों की अच्छी छलांग लगाई, परन्तु अकेले दम पर सत्ता प्राप्त नहीं कर सकी। 1995 में पार्टी ने फिर अंगड़ाई ली और 121 सीटें जीत कर केशुभाई पटेल और बाद में सुरेश मेहता मुख्यमंत्री बने। तब से अब तक यहां भाजपा की लगातार सरकारें रही। 1996-97 में कुछ समय बीजेपी के बागी शंकरसिंह वाघेला मुख्यमंत्री रहे कांग्रेस के समर्थन से, परन्तु वे थे तो संघ विचारधारा के ही। फिर केशुभाई पटेल 1998 में दुबारा मुख्यमंत्री बने और उन्हें साढ़े तीन साल बाद ही दरकिनार कर भाजपा ने फायरब्रांड नेता नरेन्द्र मोदी को आगे बढ़ाया, जिन्होंने लोगों के बीच उम्मीदों के पुल का निर्माण किया। वे 2001 से मई 2014 तक तेरह साल से ज्यादा समय तक मुख्यमंत्री रहे। उनकी चुनावी हैट्रिक नेतृत्व की उम्मीदें और संकल्प के इनाम का एक मिला-जुला मज़मून गढ़ती रही। उनकी लोकप्रियता का दायरा गुजरात की सरहदों से भी आगे बढ़ता रहा। 26 जून को नरेन्द्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री बने तो गुजरात में आनंदी बेन पटेल और तदंतर विजय रूपाणी को मुख्यमंत्री पद प्राप्त हुआ।

जन मुद्दे हुए गौण, हुआ ध्रुवीकरण

2017 का विधानसभा चुनाव मुख्यमंत्री पद की घोषणा के बिना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने ही लड़ा था। नरेन्द्र मोदी ने भावुक अपील कर कहा कि उनका द्वारका से दिल्ली का उत्कर्ष साढ़े छह करोड़ गुजरातियों के संकल्प व आशीर्वाद का ही फल है। इस उपलब्धि को बनाए रखना आप सबकी जिम्मेदारी है। चुनाव के दौरान जब कांग्रेस के एक नेता ने उन्हें 'नीच' कहा तो प्रधानमंत्री ने इसे गुजरात का अपमान बता कर पासा ही पलट दिया। उन्होंने प्रचार के दौरान राहुल की कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में ताजपोशी और पाकिस्तानी पूर्व हुक्मरानों के साथ कांग्रेस नेताओं की बैठक को भी खूब भुनाया। जाहिर सी बात है इन चुनावों में मोदी-शाह की प्रतिष्ठा दांव पर थी। भाजपा को हाल ही में केन्द्रीय स्तर पर लिए गए नोटबंदी और जीएसटी लागू करने के फैसले से राज्य में नुकसान की आशंका थी। दूसरी ओर यहां पर कुछ अर्से से दो बड़े जातीय आन्दोलन से उभरे असंतोष से पार्टी की जान हलकान में थी। विधानसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राहुल गांधी अब तक के सियासी जीवन में सबसे अच्छे शह सवार बन कर उभरे। उन्होंने भाजपा और मोदी सरकार पर चुन-चुन कर हमले बोले और भाजपा के पैरों तले बिछी हिन्दुत्व की चादर खींच कर गुजरात के मंदिरों की परिक्रमा कर नरम हिन्दुत्व का वातावरण बनाया। इससे पहले गुजरात में राज्यसभा चुनाव के दौरान भी कांग्रेस ने अपने खास रणनीतिकार अहमद पटेल को यहां से जीता कर भाजपा पर बढ़त हासिल कर कांग्रेस पार्टी को संजीवनी दी थी। हालांकि राहुल गांधी की सभाओं में उमड़ती भारी भीड़ कांग्रेस को सत्ता के शिखर पर न पहुंचा पाई। चुनाव से ऐनवक्त पहले कांग्रेस में रहे संघनिष्ठ शंकर सिंह वाघेला का पार्टी छोड़ना भी भारी पड़ गया, क्योंकि वहां कांग्रेस का कोई सर्वमान्य नेता नहीं रहा, जो भाजपा को टक्कर दे सके। इस कमी को पूरा करने के लिए कांग्रेस ने राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पार्टी महासचिव अशोक गहलोत को गुजरात भेजा। जिन्होंने राजनीति के चाणक्य कहे जाने वाले भाजपा के अमित शाह के चुनावी स्ट्रक्चर को तहस-नहस कर दिया। बचाव में आई भाजपा को भारी-भरकम दल, बल और संसाधन झोंकने को मजबर होना पड़ा।

कांग्रेस की बनाई 'तिगड़ी' की चली नहीं करामात

ऐसा चुनाव गुजरात में पहली बार देखा गया, जिस पर भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व की नजरें लगी थी। कांग्रेस ने जिन लोगों को चुनावी वैतरणी पार करने के लिए पतवार बनाया, वे निहायत फिसड्डी साबित हुए। जिस तीन 'तिगड़ी' पर भरोसा किया, वे सभी चुनाव से पहले तक अपनी शर्तें मनवाने को लेकर कांग्रेस को हैरान करते रहे। हार्दिक पटेल, अल्पेश ठाकोर और जिग्नेश मेवाणी के बीच इतने अन्तर्विरोध थे कि उन्हें एक मंच पर लाना मेंढकों को तौलने जैसा दुष्कर कार्य था। हार्दिक पटेल तो चुनाव नहीं लड़े, परन्तु अल्पेश ठाकोर और जिग्नेश मेवाणी चुनाव जरूर जीत गए, परन्तु पूरे प्रदेश के ओबीसी और दलित वोट कांग्रेस को न दिला सके। जाति समूहों के वरिष्ठ लोगों ने इन्हें पुचकारा-दुलारा तो जरूर था, परन्तु मोदी के करिश्माई नेतृत्व के सामने इन्हें

प्रत्यूष की प्रकाशन यात्रा के सोलहवें वर्ष में प्रवेश पर कोटिशः शुभकामनाएं। शेक्सपीयर ने कहा था, 'जो मक्खी के डंक से डरता है, वो कभी शहद नहीं पा सकता।' जोखिम लेने का साहस और चुनौतियां स्वीकारने का जज़्बा, ये दो सूत्र कर्मपथ के सच्चे हमराही हैं। जीवन चाहता है कि हम उसे मक्खी का डंक नहीं शहद का छत्ता माने। और चुनौतियों का सामना करने के लिए साहस का कंबल खोज लें। यह सबक सीखने के बाद न कोई बाधा डरा सकती और न कोई कठिनाई रास्ता रोक सकती। प्रत्यूष के उत्तरोत्तर आरोहण की आत्मीय कामना।

डॉ. लोकेश जैन, (शिक्षाविद्)

बचकाना ही माना और जब वोट देने का वक़्त आया तो ये भाजपामय हो गए। ऐसा लगता है गुजरात के व्यापारी वर्ग और आम जनता ने भी एक बार आर्थिक मंदी और भाजपा के बड़े आघातों को सह कर भी फिर से विश्वास जताया। सूरत में जीएसटी एक बड़ा मुद्दा मानकर कांग्रेस ने यहां डेरा डाल दिया था। दक्षिणी गुजरात और सूरत ने उसे 'हिट विकेट' कर दिया। इस इलाके की 35 सीटों में से भाजपा की झोली में 25 सीटें आ गई। सौराष्ट्र से भाजपा को सर्वाधिक घाटा हुआ। यह इलाका पाटीदार बहुल है और यहां 55 फीसद सीटें कांग्रेस को मिली।

उत्तर गुजरात भी पाटीदार बहुल है, परन्तु पाटीदारों ने भाजपा को डेढ़ गुना ज्यादा बढ़त दिलाई। शहरों ने भाजपा के 'हूं छू विकास' को माना और 84 में से 57 सीटें भाजपा को मिली। परन्तु गांवों ने कांग्रेस के 'विकास पागल हो गया' नारे पर मोहर लगाई और 98 सीटों में से 56 पर कांग्रेस को जिताया। युवाओं ने इस बार राहुल गांधी पर भरोसा किया, क्योंकि उनकी नजर में वे भारत का 'युवा भविष्य' हैं। नाराज व्यापारी, फिर भाजपा के साथ हो गए, परन्तु खेतों-खलिहानों का गुस्सा निकलकर वोटों में दिखा। कांग्रेस द्वारा अल्पेश और जिग्नेश को तवज्जो देना भी पटेलों को अखरा। पटेलों को आरक्षण देने के वायदे से भी एससी, एसटी, ओबीसी नाराज दिखे, क्योंकि उन्हें तय सीमा से ही आरक्षण मिल सकता है। मुस्लिम बहुल 18 सीटों में से 9 बीजेपी और 7 पर कांग्रेस विजयी रही। इस बार भी भाजपा के पक्ष में 'टीना' (देयर इज नो अल्टरनेटिव) फैक्टर ने काम किया। भाजपा के कई पारंपरिक मतदाताओं ने नोटा(नन ऑफ द अबॉव) का बटन दबाया, जिससे भाजपा 20 सीटों पर हार गई। इसमें कोई संदेह नहीं कि नरेन्द्र मोदी राज्य के लोगों के लिए गुजराती अस्मिता का प्रतीक माने जाते हैं। भारत विजय की अश्वमेध यात्रा पर निकले मोदी-शाह को यदि अपने ही घर में पराजय का मुंह देखना पड़ता तो 2019 के आम चुनाव वाटरलू का रण ही साबित होते। इसलिए भाजपा ने यहां पूरी शक्ति की बाजी लगा दी। गुजरात चुनाव भाजपा के लिए दूसरी दीवाली की तरह खुशियां लेकर आया। भाजपा गुजरात का चुनाव जीत गई है, लेकिन जीत का अंतर इतना कम है कि यह बेहद शर्मनाक है। 150 सीटों का लक्ष्य निन्यानवे के फेर में धूल-धूसरित हो गया। प्रधानमंत्री के गृहनगर से भाजपा हार गई। वे अगर अंतिम समय में धुंआधार प्रचार नहीं करते तो भाजपा की हार पक्की मानी जा रही थी। उनकी अजेय होने की छवि उनके गृह प्रदेश में ही टूट गई। गुजरात के चुनाव परिणाम चकित करने वाले हैं। गुजरात में भाजपा चुनाव जीत कर भी हार गई और कांग्रेस चुनाव हार कर भी जीत का स्वाद लेने लायक स्थिति में आ गई और पिछले वर्षों में सबसे ज्यादा सीटें जीतने में कामयाब रही।

	गुजरात				हिमाचल			
	कुल सीट 182				कुल सीट 68			
	वर्ष	प्रतिशत	वर्ष	प्रतिशत	वर्ष	प्रतिशत	वर्ष	प्रतिशत
	2012		2017		2012		2017	
भाजपा	115	63.18	99	54.39	26	38.23	44	64.70
कांग्रेस	61	33.51	77	42.30	36	52.94	21	30.88

कांग्रेस से छीन लिया भाजपा ने अपना किला

पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश में सत्ताधारी कांग्रेस के 6.6 फीसद वोट खिसक गए, जिससे बीजेपी की जीत आसान हो गई। हिमाचल में भाजपा का जीतना तय बात थी, क्योंकि वहां सत्ता हर पांच साल में कांग्रेस और भाजपा के पास आती जाती रही है। इस बार भाजपा को 48.5 फीसद और कांग्रेस को 41.9 फीसद वोट हासिल हुए। वर्ष सतहत्तर से कांग्रेस व भाजपा के बीच आंख-मिचौनी चलती रही है। दोनों ही पार्टियां इस राज्य में मजबूत जनाधार रखती है। इसलिए सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ्य, स्कूल जैसे फौरी मुद्दे भी सरकार बदल जाने का कारण बनते रहे हैं। इस राज्य में निजी कंपनियों को बिजली या अन्य उद्योग के लिए अर्से से मनमर्जी से जमीनें या अन्य संसाधन आवंटित होते रहे हैं, जिनमें भ्रष्टाचार अहम मुद्दा बन कर चर्चित रहा। ज्यादातर समय यहां कांग्रेस सत्ता में रही। इसलिए ये मुद्दे उससे जुड़ते गए, परन्तु भाजपा भी जब-जब सत्ता में रही, वह पूर्ववर्ती सरकार के पदचिह्नों पर ही चलती रही। कांग्रेस में ज्यादातर समय तक बुशहर के राजा वीरभद्र सिंह का दबदबा रहा। वहीं आनंद शर्मा, विद्या स्टोक्स, कौल सिंह ठाकुर जैसे नेताओं ने भी अपनी पकड़ बनाए रखी है। 2012 के चुनाव में वीरभद्र सिंह ने अन्य दावेदारों को पटखनी देकर मुख्यमंत्री की कुर्सी हथियाई थी। छह बार मुख्यमंत्री रहने का उनका विशिष्ट रिकार्ड है। उनके पास केन्द्र सरकार में रहने का भी अनुभव हैं। उन पर तथा उनकी पत्नी पर आय से अधिक संपत्ति रखने के मामले भी हैं। 1990 से हिमाचल प्रदेश की जनता ने किसी भी पार्टी को लगातार दूसरा कार्यकाल नहीं सौंपा है। नब्बे में वीरभद्र के हारने के बाद भाजपा के शांता कुमार मुख्यमंत्री बने। इसके बाद एक साल तक राष्ट्रपति शासन रहा। 1993 में वीरभद्र की फिर से वापसी हुई, लेकिन 98 में धूमल ने बाजी मार ली। 2003 में वीरभद्र जीते तो 2007 में धूमल, लेकिन 2012 में जनता ने फिर वीरभद्र को सत्ता की चाबी सौंप दी। 2014 में केन्द्र में मोदी सरकार बनने के बाद भाजपा

वीरभद्र सिंह

हारे सेनापति

प्रेम कुमार धूमल

ने चतुराईपूर्वक कांग्रेस में दल-बदल करवाया तथा कांग्रेस को सत्ता से बेदखल करवाने की सुनियोजित चाल चली। परन्तु सुप्रीम कोर्ट ने भाजपा की चाल को विफल कर दिया। केन्द्रीय मंत्री जेपी नड्डा और पूर्व मुख्यमंत्री प्रेमकुमार धूमल ने सत्ता बदलने की ठान कर पूरी ताकत झोंक दी थी। 2017 के इस चुनाव में प्रेम कुमार धूमल अपनी ही पार्टी के बागी प्रत्याशी राजिंदर राणा से चुनाव हार गए, यानि सेनापति ही पराजित हो गए। आश्चर्यजनक यह रहा कि चुनाव से ऐनवक्त पहले ही भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने धूमल को मुख्यमंत्री पद का भावी उम्मीदवार बनाया था। यही नहीं हिमाचल भाजपा के अध्यक्ष सतपाल सिंह सत्ती भी चुनाव हार गए। कांग्रेस के मुख्यमंत्री पद के दावेदार माने गए वीरभद्र सिहं चुनाव जीत गए, परन्तु उनकी टांग-खिंचाई करने वाले उनकी ही पार्टी के दिग्गज ठाकुर कौल सिंह चुनाव में पराजित हो गए। भाजपा ने यहां दो-तिहाई सीटें जीतकर कांग्रेस और बुशहर के राजा को पटखनी दे दी।

हिमाचल प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस के बीच फिर एक बार पुराने यौद्धाओं के बीच जंग हुई। चुनाव नया जरूर था। परन्तु जंग वही पुरानी रही। 27 साल से इस पहाड़ी राज्य की सियासी जंग वीरभद्र सिंह और प्रेम कुमार धूमल के बीच ही लड़ी जा रही है। एक तरफ कांग्रेस के सूरमा 83 साल के वीरभद्र और दूसरी तरफ 73 वर्षीय धूमल। दोनों ही राजनीति के धुरन्धरों के बीच दिलचस्प मुकाबला हुआ। आश्चर्यजनक यह रहा कि दोनों महारथियों की टांग खिंचने वाले अपनी ही पार्टी के सूबेदार अंतिम समय तक डटे रहे। वीरभद्र के पीछे पड़े ठाकुर सिंह कौल वही धूमल के पीछे जेपी नड्डा। दोनों ही मुख्यमंत्री पद के दावेदार थे। दोनों महारथियों में से वीरभद्र अपनी सीट बचाने में सफल रहे, वहीं धूमल चारों खाने चित्त हो गए। भाजपा की भारी विजय के बाद भी पार्टी को अब मुख्यमंत्री पद का नया चेहरा खोजना पड़ रहा है। यहां पर कांगड़ा क्षेत्र सबसे वजनदार है, क्योंकि यहां पर सबसे ज्यादा विधानसभा सीटें आती है। मंडी क्षेत्र का भी अपना काफी दबदबा है। पहाड़ी जिलों में रोजगार सीमित है। पनबिजलीघर, पर्यटन, फल उत्पादन से ही राज्य की जनता को रोजगार मिलता है और सरकार के राजस्व का जरिया भी यही है। इस बार केन्द्र में भाजपा की सरकार होने से लोग आशान्वित हुए कि राज्य का समुचित विकास होगा। इसलिए उन्होंने भाजपा को वोट दिए। दूसरा, हिमाचल के पड़ोसी राज्य उत्तराखंड में भाजपा की सरकार बनने का भी फायदा हुआ।

रेत में मिले लोहे के कणों को आप दो तरह से अलग कर सकते हैं - या तो अंगुलियों का इस्तेमाल करें या चुंबक का टुकड़ा ढूंढ लें ..... यकीन मानिए अगर आपने अपने लिए चुंबक का कोई टुकड़ा खोज लिया है, तो इन बाधाओं की रेत में मिला जीवन का लोहा आप बड़ी आसानी से अलग कर लेंगे। प्रत्यूष परिवार यह काम बड़ी खूबी से करते हुए अपनी युवावस्था के सोलहवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है और यह इसका सौभाग्य है कि इसे पाठकों, सहयोगियों और आशीर्वाददाताओं के रूप में कई चुम्बकीय व्यक्तित्व का साथ मिल रहा है।

ललित सुहालका

With Best Compliments, Complition fifteen year's of the 'Pratyush'

Aashirwad Minerals & Marbles

Mfg. of Soap Stone Powder (Talc Powder), Calcium Carbonate Powder
China Clay Powder, Silica Powder & Dolomite Powder

Office :
E-93, Pratap Nagar,
Udaipur - 313001 (Raj.) INDIA

Factory :
Jyoti Mineral Industries
Plot No. G-1-80, IID Centre
RIICO Ind. Area, Kaladwas, Udaipur (Raj.)

Telefax : 0294-2490194 | E-mail : ashirwadtalc@yahoo.com | www.ashirwadminerals.com

अमृत तत्व के अवगाहन और ताज़गी का पर्व

मकर संक्रांति

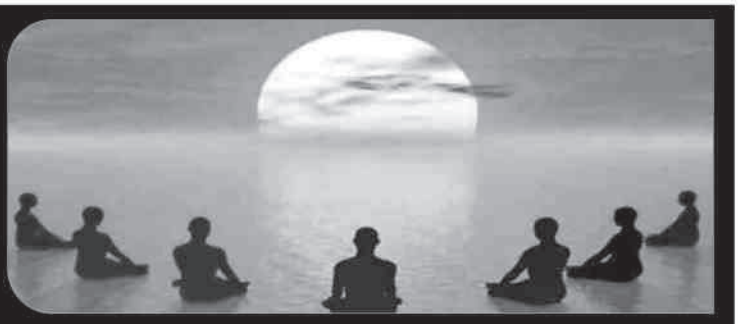

हमारे मुनियों, महात्माओं ने अंतर्ग्रही प्रवाहों की गति को

उमेश शर्मा

देख-परख कर पर्वों का निर्धारण किया। ऐसा करते समय उन्होंने मुख्यः चार बातों पर ध्यान दिया। पहली उत्तरायण, दक्षिणायन की गोलार्द्ध स्थिति, दूसरी चन्द्रमा की घटती बढ़ती कलाएं, तीसरी नक्षत्रों का भूमि पर आने वाला प्रभाव तथा चौथी - सूर्य की अंश किरणों का मार्ग। इन सब का शरीरगत ऋतु अग्नियों के साथ संबंध होने से क्या परिणाम होता है, मन की गति इनके अनुसार किस तरह परिवर्तित होती है? इन सूक्ष्म तत्वों का पर्वों के निर्धारण से गहरा संबंध था। इन सब का मनुष्य के जीवन और मूल्यों से भी गहरा संबंध है। इस अवधि में सूर्य बहुत ही तेजस्वी, प्रतापी होता है, इसी कारण सूर्य संबंधी सभी पर्वों का हमारे आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में विशेष महत्व है।

मकर-संक्रांति, लोहड़ी और पोंगल जनवरी माह के महत्वपूर्ण त्योहार हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार राशी बारह होती हैं। वर्ष के बारह महीनों में सूर्य इनके चक्कर लगाता है। जिस दिन सूर्य एक राशी से दूसरी में प्रवेश करता है, उस दिन को संक्रांति कहते हैं। प्राय: प्रतिवर्ष जनवरी मास में 14 तारीख को ऐसा होता है। इस दिन से सूर्य उत्तर की ओर घूमना प्रारंभ कर देता है। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार मकर-संक्रांति के दिन से देवताओं के दिन प्रारंभ होते हैं जो अगले छ: माह तक चलते है। इसे 'उत्तरायण' कहते हैं। मकर संक्रांति के अवसर पर उत्तर भारत में सर्दी थोड़ी कम हो जाती है। दक्षिण भारत विशेषकर तमिलनाडु में धान की नई फसल पककर तैयार हो जाती है। सूर्य के मकर राशि में संक्रमण का यह महत्वपूर्ण अवसर उत्तर भारत के कुछ भागों में 'खिचड़ी' या 'संक्रांति' के नाम से जाना जाता है। इस दिन लोग, गंगा, जमुना और दूसरी पवित्र नदियों में स्नान करते हैं। मंदिरों में अपने इष्ट देव का दर्शन और पूजन करते हैं। कुछ लोग भगवान शिव को तिल की भेंट से प्रसन्न करते हैं। इस दिन लोग दाल, चावल की खिचड़ी, तिल, गुड़, घी, नमक आदि का पंडितों को दान करते हैं और स्वयं भी खिचड़ी खाते हैं। पुराणों में तिल दान को पाप से मुक्त करने वाला बताया है।

मकर संक्रांति की पूर्व संध्या पर देश में विशेषकर पंजाब और हरियाणा प्रदेशों में धूम-धाम से 'लोहड़ी' नामक त्योहार मनाया जाता है। यह पंजाबियों का बहुत ही प्रिय त्योहार है।

शाम के समय आग जलाई जाती है, लोग अग्नि के चारों और चक्कर काटते हैं, उस पर रेवड़ी, चावल के, चिर्वुदै, मक्का की खिले आदि की भेंट चढ़ाई जाती है। लोग एक-दूसरे को लोहड़ी की बधाई देते हैं। घर में वधू और बच्चे की पहली लोहड़ी बहुत उत्साह से मनाई जाती है। इस मौके पर संबंधियों और मित्रों को मिठाई बांटी जाती है।

लोहड़ी के अगले दिन मकर-संक्रांति पर पंजाब में जगह-जगह पर मेले लगते हैं। सबसे अधिक प्रचलित मेला मुक्तेश्वर में लगता है। ये सिखों का बहुत बड़ा मेला है, जो तीन दिन चलता है। पहले दिन श्रद्धालु पवित्र नदियों में नहाते हैं। दूसरे दिन जुलूस बनाकर तीन पवित्र पहाड़ियों पर जाते हैं, जिन्हें रिकब साहब टीनिया और मुख्वंजा साहब कहते हैं। इस दिन गन्ने के रस से खीर बनाई जाती है। तमिलनाडु और आंधप्रदेश में मकर संक्रांति पर पोंगल नामक त्योहार मनाया जाता है, पोंगल तमिलों का सबसे बड़ा पर्व है। तमिल में 'पोगु' शब्द का

मकर संक्रांति पर सूर्य का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि उसकी गति उत्तरायण की ओर बढ़ती है और ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर हम सब को चेता रहा है 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् अंधकार को छोड़ प्रकाश की ओर बढ़ो। इस क्रम में मकर संक्राति को सूर्य(सविता) के अमृत तत्व के अवगाहन(निमज्जन) पर्व की संज्ञा दी गई है। शास्त्रकारों के मत से इस पर्व की खोज छान्दोग्य उपनिषद् में वर्णित मधुविधा के प्रवर्तक महर्षि प्रवाहण ने की थी। उन्होंने अपनी साधना के अनन्तर इसी दिन पंचम अमृत को उपलब्ध किया था। वेदवेत्ता मनीषियों के अनुसार शरद्काल के वातावरण में सूर्य के अमृत तत्व की प्रधानता रहती है। मकर संक्राति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। शाक, फल, वनस्पतियां इस अवधि में अमृत तत्व को अपने में सर्वाधिक आकर्षित कर उन्हें पुष्टिकर बनाती हैं। शीत के प्रतीकार तिल, तेल, तूल (सई) बताए हैं। इनमें तिल मुख्य हैं। पर्व के सब कृत्यों में तिलों के प्रयोग की विशेष महिमा गाई गई है। साधना विज्ञान के मर्मज्ञों एवं दिव्य दृष्टा, ऋषियों के अनुसार शिशिर ऋतु में माघ मास का महत्व सबसे अधिक है। इसी कारण वैदिक काल में इसी महीने का उपयोग प्राय: सभी लोग आध्यात्मिक साधनाओं के लिए करते थे।

अर्थ है उबलना। कुछ दूसरी चीजों के साथ विशेष कर दूध में उबाले गये चावल को तमिल में पोंगल कहते हैं। इसलिये इस पर्व का नाम भी पोंगल पड़ा हैं। पोंगल मूलत: फसल सम्बन्धी त्योहार है। यह तीन तीन दिन तक मनाया जाता है।

पहला दिन 'भोगी पोंगल' कहलाता है, ये सूर्य के दक्षिणायन पथ के अंतिम दिन मनाया जाता है। दूसरे दिन यानि मकर संक्रांति से ही उत्तरायण का प्रारंभ हो जाता है। इस दिन घरों में रंगोली सजाई जाती है। हर गृहस्थ अपने घरों की लिपाई-पुताई और साज-सज्जा करता है। पूजा-पाठ, गाना-बजाना और खान-पान की खुशियां घर-घर में दिखाई देती हैं। दूसरे दिन को पोंगल या सूर्य पोंगल कहते हैं। यही संक्रांति का दिन है। इस दिन नई धान को कूट कर निकाला गया चावल, दूध, घी और गुड़ के साथ नये घड़ों में उबाला जाता है। बच्चे उन उबले हुई चावलों के चारों और जुट जाते हैं और घंटिया बजा-बजा कर चिल्लाते है 'पोगलो-पोगलो'। इस प्रकार जो खीर तैयार होती है, उसे सूर्य देवता को अर्पित किया जाता है। इस दिन सभी जगह सूर्य देवता के साथ ही वायु देवता और गृहदेवता की पूजा भी की जाती है।

पोंगल का तीसरा दिन मोट्टू पोंगल कहलाता है, मोट्टू का अर्थ है 'पशु'। इस दिन पशु की पूजा की जाती है। बैलों को नहलाया जाता है। उनके सींगो को रंगों से चमकाया जाता है। बैलों के गले में मालाएं और घंटियां डाली जाती हैं। बैलों के रोमांचकारी प्रदर्शन भी होते हैं।

धरोहर है 'प्रत्यूष'

गुजरते पंद्रह सालों से पाठकों की बौद्धिक क्षुधा को अनवरत, अथक शांत करने वाली 'प्रत्यूष' पत्रिका को कोटि कोटि बधाई और साधुवाद! पंकज शर्मा व विष्णु शर्मा हितैषीजी को, जिन्होंने राजस्थान को एक लम्बी आयु वाली सार्थक पत्रिका दी।

'प्रत्यूष' यानी सूर्य की भांति इसमें उजास, उष्मा व ऊर्जा तीनों का संगम है। इसमें छपने वाला प्रत्येक सम्पादकीय, पाठक के मन-मस्तिष्क के अन्तरतम को उजास से भर देता है और तर्क संगत विचारोत्तेजक समीक्षा का मार्ग प्रशस्त करता है। परिवार व समाज केन्द्रित लेख, जो पर्व-त्योहारों की मूल जानकारी देते हैं वो वर्तमान परिपेक्ष्य के मृत प्राय मानवीय मूल्यों व रिश्तों को उष्मा प्रदान करते है। राजनैतिक उठा-पठक, देश-प्रेम, देशभक्ति संबंधित लेखनी से सुधि पाठक विशेषकर युवा वर्ग में जो ऊर्जा का संचार होता है वह काबिले तारीफ है।

सार यह है कि 'प्रत्यूष' पत्रिका पूरी तरह इस बात की द्योतक है कि 'अक्षर' का अर्थ है 'अ' 'क्षर' अर्थात् जिसका कभी क्षरण नहीं होता। अक्षरों से मिलकर बने शब्द सदियों का सफर तय करते हैं। सर्वशक्तिमान से यही कामना है कि प्रत्यूष यूं ही कदम दर कदम बढ़ती रहे, अपने पदचिह्न/अमिट छाप लोगों के दिलो-दिमाग पर छोड़ती हुई चहुंओर अपनी रश्मियां फैलाती रहे।

- डॉ. गायत्री तिवारी

'प्रत्यूष' के 16वें वर्ष में प्रवेश पर हार्दिक शुभकामनाएं

0294-2410444
09414155797 (M)

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ ज्योतिष कार्यालय

हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र के प्रसिद्ध जैन साधनानुसार

कांतिलाल जैन
(ब्रह्मचारी)

नाकोड़ा रूप भवन

167, रोड नं. 11, अशोक नगर, माया मिष्ठान के पास, उदयपुर-313001 (राज.)
मिलने का समय : दोपहर 3 से सायं 7 बजे तक

नाकोड़ा रूप भवन

Ph: 022-24123857, 093220-90220 (M)

ब्लॉक नं. 10, केलकर बिल्डिंग, नयागांव के.ए. हाउसिंग सोसायटी, प्लॉट नं. 60-बी,एस.एम. जाधव मार्ग, कृष्णा हॉल के सामने, दादर (ईस्ट) मुम्बई-14

रविवार चौकी एवं आरती

मिलने का समय : दोपहर 3 से सायं 7 बजे तक

जन-गण के विरोध से 'काला कानून' दफ़न

जगदीश सालवी

यूं तो किसी भी सरकार को जनता के हित में कोई अध्यादेश या विधेयक पारित कराने का पूरा अधिकार है। परन्तु राजस्थान सरकार तो पिछले दिनों भ्रष्ट नेताओं और अफसरों को बचाने वाला अध्यादेश ले आई, जिसका चौतरफा भारी विरोध हुआ और सरकार को कदम पीछे हटाने पड़े, उसका ऐसा करना लोकतंत्र में काले अध्याय के रूप में याद किया जाएगा। 'प्रत्यूष' ने पिछले अंक में ही इसे सख्त लहज़े में '**सामंती मानसिकता की वापसी**' का संकेत बताया था। पिछले साल सितम्बर में सरकार ने आनन-फानन में अध्यादेश जारी किया और विधानसभा का सत्र शुरू होते ही यह काला कानून विधेयक पेश कर दिया। विपक्षी दलों, मीडिया और जनता के भारी विरोध के चलते शर्मिंदगी से बचने के लिए राज्य सरकार ने इसे कई दिनों बाद प्रवर समिति को सौंपा। और आख़िरकार यह अध्यादेश विधानसभा में बिल पेश करने की तारीख से नियत समय पर 42 दिन में यानी 4 दिसम्बर को स्वत: समाप्त हो गया। अभी भी सरकार की ओर से यही बताया जा रहा है कि इस तिथि को अध्यादेश समाप्त हुआ है, विधेयक नहीं। इसका सीधा आशय है इस कानूनी पेंच के आधार पर सरकार जब चाहेगी प्रवर समिति को ढाल बना कर इसे विधानसभा में पेश कर भी सकती है।

विवाद की शुरुआत दो प्रावधानों के कारण हुई। पहला, अफसर-नेताओं के खिलाफ दायर परिवाद पर जांच से पूर्व सरकार की मंजूरी का अनिवार्य होना और दूसरा, अभियोजन स्वीकृति तक आरोपियों के नाम उजागर करने पर दो साल की सजा का प्रावधान किया जाना। हाल-फिलहाल तो विवादित अध्यादेश दफ़न होने से लोकसेवक, जज या मजिस्ट्रेट के खिलाफ दायर इस्तगासे की पुलिस जांच के लिए सरकार की मंजूरी की आवश्यकता नहीं रहेगी। भ्रष्ट अफसर-नेताओं के नाम उजागर करने पर सजा की पाबंदी भी हट गई है। हालांकि काला कानून प्रचलन में रहने के दौरान कुछ लोग इसके शिकार भी रहे। जो हाईकोर्ट तक अपील के लिए पहुंचे। दरअसल सत्ता में आने के बाद हर अफसर और राजनेता सत्ता में अधिकाधिक हिस्सेदारी चाहता हैं और जनता को रेवड़ की तरह हांकना चाहता हैं। अफसरों को तो सेवानिवृत्ति तक असीमित अधिकार मिल जाता, क्योंकि वे अंगद के पांव की तरह होते हैं। उनको हिलाना प्राय: जनता के वश में नहीं होता। सर्वाधिकार सम्पन्न ब्यूरोक्रेट्स सरकारी नीतियों से ज्यादा तो अहंकार के घोड़े दौड़ाते दिखलाई पड़ते हैं। उनके तिलिस्म को भेद पाना प्राय: असंभव होता है। कोई बड़ा घपला आरटीआई या लोकपाल के जरिए प्रकाशित भी होता है, तो भी 'समरथ को नहीं दोस गुसाईं' की तर्ज पर होने वाली कार्रवाई के नाम पर सिर्फ लीपापोती ही होती है। क्या हुआ खनन विभाग के महाघोटाले के आरोपी अशोक सिंघवी का और उसकी भ्रष्ट टीम का? सबको पता है। 'राज की बात' जानने वाले राजदार तो ये ही लोग हैं और कुछ साल के लिए सत्ता के सिंहासन पर आसीन होने वाले राजनेता भी इस अबूझ रहस्य से भलीभांति परिचित होते है। अफसरशाही पर ज्यादा निर्भरता लोकतंत्र की अवधारणा के विपरीत है। राजनेता भी प्राय: पांच साल तक सत्ता के अधिकार का जायज-नाजायज

'प्रत्यूष' के पिछले अंक में प्रकाशित

याचिकाकर्ताओं की जीत

लोकसेवकों को संरक्षण देने सम्बन्धी अध्यादेश और विधेयक के खिलाफ कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष सचिन पायलट, अधिवक्ता पूनमचन्द भण्डारी व अन्य ने हाईकोर्ट में याचिकाएं दायर की थीं। मुख्य न्यायाधीश प्रदीप नान्द्रजोग व न्यायाधीश डी सी सोमानी की खण्डपीठ ने 8 दिसम्बर को याचिकाओं को निस्तारित करते हुए आदेश दिया कि अध्यादेश 3 दिसम्बर को रात 12 बजे बाद निष्प्रभावी हो चुका है। कोर्ट ने कहा कि इस अध्यादेश के प्रभावी रहते कोई व्यक्ति इससे प्रभावित रहा हो तो वह अदालत में अध्यादेश को चुनौती दे सकेगा।

इस्तेमाल करने से नहीं चूकते। इस दौरान ब्यूरोक्रेसी उनकी ख़ैवनहार बनती है। सूचना का अधिकार और लोकपाल अधिनियम भी सभी को न्याय कहां दिला पाता है? सिस्टम में अदृश्य रूप से पसरे भ्रष्टाचार का घुन मैग्नीफाइंग ग्लास से भी नहीं दिखता। ऐसा कोई विभाग नहीं, जिसमें आम आदमी को अपना काम करवाने के लिए कुर्सी पर बैठे 'हाकिमों' की जेबें गर्म न करनी पड़ती हो। न्याय प्रक्रिया की मंथर चाल भी भ्रष्टों का हौसला बढ़ाती है। कोर्ट-कचहरी कायदे-कानून, अंग्रेजी हुकूमत के पैटर्न पर ही चल रहे हैं। भले ही 'काला कानून' निष्प्रभावी हो गया, परन्तु सामंती मानसिकता वाली राजस्थान की मौजूदा सरकार अपनों को संरक्षण देने के लिए 'बोतल में बंद जिन्न' मौका मिलते ही बाहर ला सकती है। शासन से भ्रष्टाचार मुक्त करने का दावा कर सत्ता में आई मोदी सरकार के लिए राजस्थान में भ्रष्टाचार को कानूनी पनाह देने की वसुंधरा सरकार की पहल को पार्टी आला कमान किस रूप में लेगी या इससे उसे कितनी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी, समय ही बतायेगा।

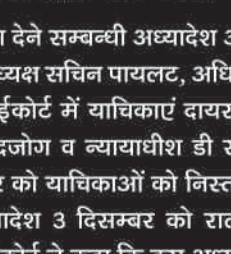

With Best Compliments, Complition fifteen year's of the 'Pratyush'

प्रत्यूष
सफलता के 15 वर्ष

जे पी ऑर्थोपेडिक हॉस्पिटल
उदयपुर

25 वर्षो से
आपके लिए

For More Visit Us : www.jporthohospital.com

24x7 HELPLINE No: +91 7229933999

Facilities

- ICU, Modular Theater
- Digital X-Ray
- Modular Plaster Room
- C-ARM Machine
- Physiotherapy
- All Kinds Of Orthopadic Surgery
- Nailing
- Plating
- Prosthesis,
- Fixator etc.

100, Main MB College Road, Kumharo Ka Bhatta

Udaipur-313001. Tel : 0294-2413606

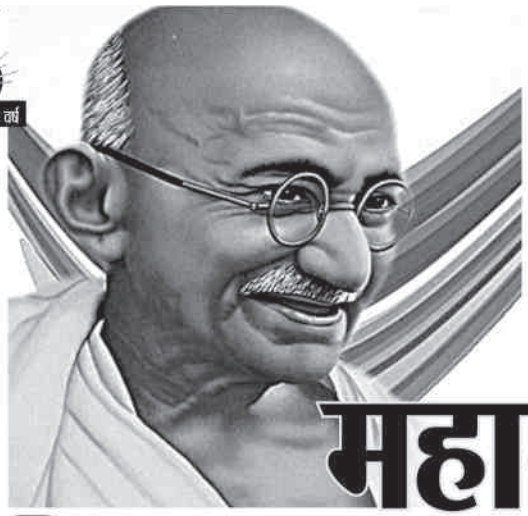

गांधीजी एक शाश्वत महामानव

महात्मा गांधी के जन्म को 148 वर्ष हो गए और निर्वाण को सत्तर वर्ष। नई दिल्ली में उनकी पुण्यतिथि 30 जनवरी को पर वे सभी लोग शामिल होंगे, जो उनके आदर्शों को मानने का दावा करते और वे भी जो उनके सिद्धान्तों को आया-गया मानते हैं। यानी उनके अनुयायी और आलोचक दोनों का मज़मा लगता है। हर युग का दस्तूर रहा है कि हम किसी व्यक्ति को या तो देवता बना देते या उसे दानव, परन्तु उसके भीतर छिपे मनुष्यत्व को स्वीकारने में हमें कठिनाई होती है। गांधीजी की पुण्यतिथि पर पूरे देश में खासकर राजधानियों में उनकी मूर्तियों पर मालाएं डाली जाएंगी। कई जगह उनकी रीति-नीतियों पर आख्यान-व्याख्यान सुनाए जाएंगे। परन्तु गांधी-दर्शन को अपने जीवन में आत्मसात् करने की जहमियत शायद ही कोई उठाएगा। उस दिन टेलीविजन पर सर रिचर्ड एटनबरो की 'गांधी' या श्याम बेनेगल की 'द मेकिंग ऑफ महात्मा' या अनुपम खैर की 'मैंने गांधी को नहीं मारा' प्रसारित जरूर होगी। लोकप्रियता के पैमाने पर अन्य कार्यक्रमों से गांधी जीवन दर्शन की बातें पिछड़ जाएंगी। कहीं एक दिन ऐसा न आए कि महात्मा गांधी अन्य ग्रहों के एलियन्स की तरह माने जाएं। भारत संवेदनहीनता के साथ गांधीजी से दूर होता जा रहा है। दक्षिण अफ्रीका के लोगों ने कभी कहा था कि भारत ने हमें मोहनदास करमचंद गांधी सौंपा, लेकिन हमने उसे 'महात्मा गांधी' बनाकर फिर से भारत को दिया था। दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहानिसबर्ग में कुछ साल पहले ही गांधीजी की मूर्ति स्थापित की गई और देश के लोगों ने एक शताब्दी पहले हुई गलती के लिए क्षमा भी मांगी थी। दक्षिणी अफ्रीका में ही इस शख्स को जायज टिकट होन के बावजूद एक अंग्रेज ने प्लेटफार्म पर फिंकवा दिया। क्योंकि उस वक़्त गौरी हुकूमत में अश्वेतों के साथ इसी तरह का बर्ताव होता था। उस दिन रेलवे के प्लेटफार्म पर कुछ ही क्षणों में धूल झाड़कर खड़े हुए व्यक्ति ने ही बाद में उन अंग्रेजों की दासता से भारत सहित कई मुल्कों को आजाद कराया था, जिनके राज में कभी सूरज अस्त नहीं होता। गांधीजी को भारत में राष्ट्रपिता का सम्मान मिला। जिन्होंने एक नए देश को जन्म दिया बिना एक भी गोली चलाए या हिंसक कार्रवाई का सहारा लिए। गुजरात के इस सपूत ने सिद्ध कर दिया कि जीवन में कैसी भी विपरीत स्थिति क्यों न आए हिंसा का सहारा लेना कतई जरूरी नहीं। और विश्व में उन्हें सत्य, अहिंसा और शान्ति का मसीहा कहा गया। पूरी दुनिया के कई राष्ट्राध्यक्षों ने उन्हें अपना आदर्श माना। गांधी-दर्शन की मूल अवधारणा मनुष्यत्व में निहित है, जिसमें जाति-पांति, धर्म, सम्प्रदाय इत्यादि के बीच भाईचारा, आपसी समझ और प्रेम पहली शर्त है। दरअसल गांधीजी के अधिकांश सिद्धान्त और आदर्श सर्वकालीन है और आज के दौर में उनकी निहायत ज़रूरत है। भारत की धरती पर मोहनदास करमचंद गांधी का मानव के रूप में अवतरण भारत के लिए ही नहीं सारे विश्व के लिए गौरवमयी साबित हुआ। 30 जनवरी 1948 की उस भयानक शाम को दुनिया कभी भूल नहीं सकती। विश्व को सत्य और अहिंसा का रास्ता दिखाने वाले महात्मा गांधी को एक सिरफिरे नाथूराम गोडसे की गोलियों ने हमेशा के लिए हमसे छीन लिया। उनके अंतिम शब्द 'हे राम!' भारत की एकता-अखण्डता को मजबूत कर सकते हैं, बशर्ते कि उसे विशेष धार्मिक नज़रिए से न देखा जाए। उनका समूचा जीवन सर्वधर्म समभाव, मनुष्यत्व, भाईचारा और विश्व बंधुत्व का पुख़्ता सबूत है।

गोपालकृष्ण शर्मा

वे फिर आयेंगे

- वेदव्यास

वे फिर आयेंगे!
क़लम के दावेदार बनकर
'तमसो मां ज्योतिर्गमय' कहते हुए
वे फिर आयेंगे!
समय की महाभारत लिखते हुए
'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का मंत्र लेकर
वे फिर आयेंगे!
बुद्ध, महावीर और गांधी की तरह
और क़बीर, मीरा तथा नानक को गाते हुए
वे फिर आयेंगे!
'आदि विद्रोही' की चेतना लेकर
21वीं शताब्दी के अंधेरे में
विवेकानंद, रवीन्द्र, अम्बेडकर और
भगतसिंह के साथ,
पुनर्जागरण करते हुए
वे फिर आयेंगे!
इसलिये तुम उठो, जागो,
और मानव मुक्ति का
अपना इतिहास फिर से पढ़ो!
क्योंकि विकल्पहीन नहीं है धरती
और विकल्पहीन नहीं है आगत कल,
ये पूंजी का बाजार
और विज्ञान का आविष्कार
सनातन, प्रकृति और मनुष्य का
निर्माता नहीं है,
सुनो! ये ही तो सांस्कृतिक अभ्युदय का -
समय है,
जिसमें संघर्ष ही शब्द का गौरव है।
अतः 'भागो मत दुनिया को बदलो'
क्योंकि हमारे पास
खोने को बेड़िया
और पाने को जहान है,
वे फिर आयेंगे!
हम सबके लिये सागर में लहरों की तरह
हिंसा में अहिंसा और जीवन में सत्य लेकर
वे फिर आयेंगे!

प्रत्यूष पत्रिका के 16वें वर्ष प्रवेश पर हार्दिक शुभकामनाएं
ॐ
Purohit Cafe
A South Indian Food Joint
N. K. Purohit
आपका विश्वास ही हमारी पहचान
वर्ष 1970 से 1980 तक दुबई में तथा 1981 से 1986 तक लंदन-अमेरिका में सफल सेवाओं के बाद अब 1987 से उदयपुर शहर में
(तीन दशक से आपके विश्वास पर खरा सिद्ध)
❊ कैफे में पधारकर एक बार सेवा का मौका अवश्य देवें। ❊ आप व आपके परिवार की जायकेदार और लाजवाब पसंद,
शुद्ध और स्वादिष्ट इडली, डोसा, मसाला और अन्य व्यंजन। ❊ सपरिवार बैठने की व्यवस्था।
❊ पूर्ण रूप से वातानुकूलित, शान्त एवं आरामदायक। ❊ सेवकों द्वारा विनम्र आवभगत।
"Anand Plaza" Nr. Ayad Bridge, University Road,
Udaipur (Raj.) 313 001 Ph. : 0294-2429635
Visit us : www.purohitcafe.com

जिनके मस्तक पर दायित्व का सेहरा, वे कब समझेंगे गणतंत्र का मर्म !

-पुष्कर जोशी

26 जनवरी, 1950 को भारत में गणतांत्रिक व्यवस्था का श्रीगणेश हुआ। यानी इस दिन देश को अपना संविधान मिला, जिसके तहत लोकतांत्रिक राज्य का संचालन संभव हुआ। राजशाही व्यवस्था में शासक के मुंह से निकला आदेश सर्वोपरि होता, लेकिन गणतंत्र में ऐसा संभव नहीं। लोकतंत्र में शासक एक राजा नहीं, अपितु जनता का सेवक होता है। इसलिए लोकतांत्रिक गणराज्य में अदने से लेकर सर्वोच्च जनप्रतिनिधि या किसी लोकसेवक को वही करना पड़ेगा जो संविधान के तहत स्वीकार्य है। यदि ऐसा नहीं होता है तो अदालत में आपराधिक मामला भी चल सकता है। संविधान निर्माताओं ने सारी दुनिया के विधानों का अध्ययन करने के बाद एक बेहतरीन संविधान बनाया। उससे भारत की एकता, अखंडता व संप्रभुता सुनिश्चित है। भारत के पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान, नेपाल इत्यादि में आए दिन जो मध्ययुगीन हालात बन रहे, इसकी पृष्ठभूमि में उनके लुंज-पुंज संविधान ही हैं। संविधान यानी कानून का राज, जिसमें न कोई शोषक होगा, न शोषित, न मालिक होगा, न कोई मजदूर, न अमीर होगा, न कोई गरीब। हमारा गणतंत्र जाति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग या खास विचारधारा से निरपेक्ष और सभी देशवासियों के लिए समान अवसर उपलब्ध कराता है। हरेक नागरिक को शिक्षा, रोजगार, चिकित्सा और उन्नति की समान राह मिलना लोकतंत्र की सफलता की पहली आवश्यकता है। यह सही है कि आजादी के बाद देश का तेजी से विकास हुआ। भारत अब विज्ञान, तकनोलॉजी, आर्थिक और सैन्य दृष्टि से काफी मजबूत स्थिति में है। और इसका श्रेय सात दशकों से नेतृत्व करने वाले राष्ट्र निर्माताओं को जाता है। फिर भी आज अधिकांश लोग आम जन हाशिये पर खड़े हैं।

पहले राष्ट्र, फिर दूसरे मुद्दे खोजें

प्रतिवर्ष राजधानी के लाल किले की प्राचीर से आशा और विश्वास का भरोसा दिया जाता। पूरे देश में जश्न के आयोजनों के बीच आज अनेक ज्वलंत प्रश्न मुंहबाएं खड़े हैं। ये प्रश्न इसलिए खड़े हैं, क्योंकि आज भी देश का आम नागरिक न सुखी बना और न स्वावलम्बी। धन-सम्पदा के सारे स्रोत मुट्ठी भर हाथों में सिमट कर रह गए। स्वहित की अभीप्सा परमार्थ की भावना को लील गई। हिंसा, आतंकवाद, जातिवाद, नक्सलवाद, क्षेत्रीयवाद, धर्म, भाषा और दलीय स्वार्थों के सियासती विवादों ने आम नागरिक का जीना मुहाल कर दिया है। राष्ट्रीयता की भावना को सूली पर चढ़ाने की सोच चहुंओर विकसित हो रही है। आपसी सौहार्द, सहअस्तित्व, सहनशीलता और विश्वास के मानक बदल गए। घृणा, स्वार्थ, शोषण, अन्याय और मायावी मनोवृत्ति ने मनुष्यत्व के विकास की संभावनाओं पर विराम लगा दिया। जिन लोगों के मस्तक पर दायित्व का सेहरा बंधा है, वे ही अपने स्वार्थों की फसल को धूप-छांव देने की तलाश में हैं। आजादी दिलाने वाले और स्वाधीनता के बाद देश को नवनिर्माण की राह पर ले जाने वाले राष्ट्रीय नेताओं के कद छोटे होते गए और सत्ता की परछाइयां बड़ी होती गई। क्षेत्रीय मुद्दों की रोटियां सेक कर क्षत्रप संघीय व्यवस्था को चुनौती देने की स्थिति में आ गए। अखण्डता और एकता सिर्फ नारों तक सिमटती जा रही है। राष्ट्रीय चरित्र का क्षरण इस तरह हो रहा है मानो वह एक बुराई है, जिसे मिटाना जरूरी समझ लिया गया। स्वार्थ सिद्धि के आगे अपना कर्तव्य बोध शांत खड़ा मिलता। वोटों के खातिर हर राजनीतिक दल देश की अस्मिता और राष्ट्रप्रेम को ताक में रख कर निर्लज्जता का चोला धारण किए मौन खड़े हैं।

आजादी के सत्तर साल बाद भी खुशहाली सपना!

भ्रष्टाचार ने राष्ट्रीय जीवन को लकवा मार दिया। शासन व्यवस्था के चारों पाये एक-दूसरे के बीच प्रतिस्पर्द्धा में उलझे हैं। वे स्वयंभू बनने के लिए दूसरे के कद को लघुतम बनाने को आमादा नजर आते। इन्हें शायद यह नहीं पता कि उन्हें राष्ट्र की एकता-अखण्डता बनाये रखने की गुरुतर जिम्मेदारी राष्ट्रनायकों ने सौंपी, जिस पर वे खरे नहीं उतर पा रहे हैं। राष्ट्र की जनता उनकी ओर आस लगाए बैठी है जिन्हें आजादी के सत्तर साल बाद भी खुशहाली नसीब न हो पाई। किसान, मजदूर, दिहाड़ी वेतन भोगी, छोटे व्यवसायी और हाशिए पर खड़े कमजोर वर्ग के लोगों की आंखों से निकलते आंसू कलेजा कंपा देते हैं। जीएसटी और नोटबंदी जैसे बड़े मुद्दे अधूरी तैयारी से लागू कर दिए गए, जिससे पिछले एक साल से अर्थव्यवस्था और उद्योगों की गाड़ी बेपटरी होकर हिचकोले खा रही है। मंहगाई दिनोंदिन आसमान छू रही और बेरोजगारी, किसानी औंधे मुंह पड़ी है। राजनैतिक दल चुनावों में मशगूल होकर एक-दूसरे के चीरहरण पर उतारू हैं। किसी को 2018 के विधानसभा चुनाव दिख रहे तो किसी को 2019 में होने वाले आम चुनाव की फसल लहलहाती नजर आ रही है। आम मतदाताओं को समझ नहीं आ रहा कि इन हालातों पर जश्न मनाएं या अश्रुरुदन करें। अमीरी-गरीबी के बीच खाई अब तो दुर्गम दर्रा बन गई। संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकार अब भी सपना बने हुए हैं। यदि अब भी नहीं संभले तो देश का भला कब और कैसे होगा? यह जिम्मेदारी अकेले शासन की नहीं, सभी देशवासियों की है। लोकतंत्र के चारों पाये मजबूत रहें, इसके लिए उन्हें भी अपनी हदबंदी कायम करनी होगी। गणतंत्र में तंत्र तो मजबूत बन गया अब गण को मजबूत बनाने की बारी है। देश एकसूत्र में बंधा रहे, आपस में भाईचारा कायम रहे, स्वहित से पहले राष्ट्रहित की अवधारणा पैदा हो, यही तो गणतंत्र और संविधान का पहला सोपान है।

श्रद्धांजलि

जन्म
2 फरवरी 1931

निधन
30 जनवरी 2016

उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल भोमट (झाड़ोल-फ.) क्षेत्र में घर-घर शिक्षा की अलख जगाने वाले सरलमना, प्रेरक व्यक्तित्व, कीर्तिशेष

श्रीयुत पं. जीवतरामजी शर्मा

(संस्थापक, राजस्थान बाल कल्याण समिति)

की प्रथम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि।

श्रद्धावनत :

समस्त परिवार।

प्रत्यूष
सफलता के 15 वर्ष

लाज़वाब बाटी-चूरमा-दाल

सर्दी में खाए सो निहाल

जनवरी में कड़ाके की ठण्ड है। कहा जाता है शीतकाल में हर प्राणी की जठराग्नि कुछ तेज ही रहती है, जिसके चलते गरिष्ठ और भारी खाना भी आसानी से पच जाता है। राजस्थान में बाटी, चूरमा, दाल परम्परागत व्यंजन है, जिसे यहां आने वाला पर्यटक भी खूब चाव से खाता है। कहावत भी है 'चूरे सूं बाटी मिले, अर उड़द की दाल, ऊपर से नीबू पड़े तौ बरफी कांई माल।' राजस्थान में तो शीतकाल में हर घर में अक्सर यह व्यंजन बनाया ही जाता है। प्रस्तुत है परम्परागत और ज़रा अलग तरीके से बाटी-दाल-चूरमा बनाने की कुछ विधियां, जिसे बता रहे हैं पाक कला विशारद : मानस मनोहर।

बाटी बनाने की विधि

मुख्य रूप से बाटी तीन तरह से बनती है। एक, आटे में चने का सत्तू या मटर, आलू वगैरह भर कर आग पर पकाई जाती है। दूसरी, बिना कुछ भरे, आटे की गोल लोइयां बना कर सीधे आग पर पका ली जाती हैं और तीसरी, आटे में सत्तू भर कर तेल में पूड़ी की तरह तल ली जाती है। आमतौर पर बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में सत्तू वाली बाटी पंसद की जाती है। बगैर कुछ भरे बनाई जाने वाली बाटी उत्तरप्रदेश के कुछ हिस्सों, राजस्थान और मध्यप्रदेश में खाई जाती है। इसके साथ दाल, चोखा, रायता और अचार बाटी खासकर बिहार और पूर्वी उत्तरप्रदेश में पसंद किया जाता है। इसके अलावा राजस्थान और मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों में भी पसंद की जाती है। दरअसल, यह चरवाहों का भोजन है। जिस प्रकार इटली के चरवाहे मोटी रोटी पर मक्खन और सब्जियां रख कर खाया करते थे और वही बाद में पिज्जा के रूप में दुनिया भर में व्यंजन की तरह फैल गया, उसी तरह राजस्थान, बिहार, उत्तरप्रदेश के चरवाहों ने बाटी बनाने की विधि विकसित की। बाटी और दाल पकाने के लिए बहुत बर्तनों, चूल्हे-चौके की आवश्यकता नहीं पड़ती। आटा गूंथा, उसमें भरावन डाला या नहीं भी डाला और उपले की आग पर सीधा पका लिया। इसी तरह आलू-बैंगन वगैरह को सीधा आग में भूना और चोखा बना लिया। केले, कमल या पलाश के पते पर रख कर खा लिया। मगर अब बाटी-दाल-चोखा-चूरमा ने बड़े शहरों के रेस्तरां के 'मीनू' में भी अपनी खास जगह बना ली है।

सत्तू वाली बाटी

सत्तू वाली बाटी बनाने में असल कौशल सत्तू का भरावन तैयार करने में होता है। सत्तू का भरावन तैयार करने के लिए चने का सत्तू लें। यह बाजार में आसानी से मिल जाता है। न मिले तो भुने हुए चने को मसाला पीसने वाले मिक्सर में डाल कर सत्तू तैयार किया जा सकता है। सत्तू को छान लें। एक बाटी में बीस से पच्चीस ग्राम सत्तू की जरूरत होती है। उसी हिसाब से सत्तू लें। बड़े आकार का एक प्याज, आठ-दस लहसुन की कलियां, चार-पांच हरी मिर्चें और अदरक का एक टुकड़ा बारीक-बारीक काट लें। सत्तू में इन सबको डाल दें। फिर एक चम्मच अजवाइन के दाने और एक चम्मच कलौंजी यानी अनियन सीड्स डालें। स्वाद के मुताबिक नमक मिलाएं। फिर दो नीबू निचोड़ कर उसका रस और चार-छह चम्मच सरसों का कच्चा तेल डालें। इन सबको देर तक मसलते हुए मिलाएं। दोनों हथेलियों पर रख कर बार-बार मलें, ताकि नीबू का रस और सरसों तेल पूरे सत्तू में ठीक से मिल जाए। मुट्ठी में भर कर बांधे और देखें-सत्तू लड्डू की तरह बंध रहा है, तो भरावन सही तैयार है।

मुट्ठी नहीं बंध रही है, तो एक नीबू निचोड़ कर उसका रस और डाल दें। सरसों का तेल अधिक न डालें, नहीं तो स्वाद कड़वा हो सकता है। अब आटा तैयार करें। आटा गूंथते समय उसमें एक गिलास दूध और दो चम्मच देसी घी डाल लें। आटा मलते हुए घी और दूध को अच्छी तरह मिला लें। फिर पानी के छींटे देते हुए आटा गूंथ लें। ध्यान रखें कि आटा ज्यादा नरम न हो। अब आटे की लोइयां बना कर अंगूठे से गड्ढा बनाते हुए फैला लें और उसमें एक से डेढ़ चम्मच भरावन डाल कर बंद कर लें। बाटी का आकार गोल ही रखें।

अब बाटियों को आग पर पलटते हुए पकाएं। शहरों में जगह की समस्या होने पर ओवन में (माइक्रोवेव में नहीं) भी बाटी पका सकते हैं। अगर आपके पास कुकिंग रेंज है, तो गैस के ओवन में भी बाटी पकाई जा सकती है। वैसे चिकन ग्रिल करने वाले ओवन में बाटी बहुत अच्छी तरह पकती है। इन सबमें से कोई साधन उपलब्ध नहीं है, तो कुकर में भी बाटी पका सकते हैं। कुकर की सीटी निकाल दें। कुकर में दो चम्मच घी डालें और गरम करें। उसमें बाटी डाल कर पका लें। कुकर में बाटी पकाते समय थोड़ी-थोड़ी देर बाद उन्हें पलटते रहें।

तली हुई बाटी

बाटी को तल कर बनाने में भी सत्तू का भरावन आग पर पकाने वाली बाटी की तरह ही तैयार किया जाता है। उसमें बाटी का आकार थोड़ा छोटा रखा जाता है और भरावन भरने के बाद बाटी को हथेलियों के बीच दबा कर चपटा कर लिया जाता है। फिर उन्हें मद्धिम आंच पर सरसों तेल या रिफाइंड में सुनहरा होने तक तला जाता है। इस बाटी को ठंडा होने के बाद भी खाया जा सकता है।

बगैर भरावन की बाटी

बगैर भरावन वाली बाटी के लिए घी और दूध से गूंथे आटे की गोल-गोल लोइयां तैयार करें। चाहें तो बीच में खोखला रखते हुए भी बाटी को आकार दे सकते हैं। इन्हें आग पर सिकने वाली बाटी की तरह ही बनाएं। इस बाटी को चोखा, दाल, रायता और अचार के साथ परोसें।

ध्यान दें – आग पर या ओवन में सेक कर बनी बाटी पर देसी घी लगाना न भूलें।

मनभावन मीठा चूरमा

परम्परागत तरीका

चूरमा और बाटी का व्यंजन प्राय: साथ-साथ बनाया जाता है। परम्परागत रूप से बनाया जाने वाला चूरमा देहात में आज भी गोबर के कंडों की आग जला कर अंगारे बन जाने पर उस पर सेक कर बनाया जाता है। इसे जल्दी-जल्दी में कई बार फेरना पड़ता है, अन्यथा उसकी सतह सख्त और जल जाती है। फिर उसे कपड़े से अच्छी तरह झटक-पोंछ लिया जाता है। अच्छी तरह सिक जाने पर उसे प्लास्टिक बोरे या इमामदस्ते में भरकर कूट-पीट कर बारीक कर छलनी में छाना जाता है। बचे हुए मोटे टुकड़ों की मिक्सी में पिसाई कर ली जाती है। उसमें देशी घी और गुड़, बारीक मेवा इत्यादि मनपसंद चीजें डाली जाती हैं। सब को मिक्स-अप करने के बाद लड्डू बना कर परोसा जाता है। खास बात यह है कि चूरमे का आटा बाटी से कुछ मोटा-दरदरा रखना पड़ता है और उसे बाटी की तरह गूंदने के बजाय हल्के हाथों से छोटे-छोटे आटे के टुकड़ों को मिलाकर बाटी की लोई से भी तिगुना बड़ा बनाया जाता है।

तल कर बनाया जाने वाला चूरमा

चूरमा बनाने का यह सबसे आसान तरीका है। इस पद्धति से बनाया जाने वाला चूरमा जल्दी भी बन जाता है। इसे बनाने के लिए दरदरे आटे की लोई बना कर चाकू से मनवांछित आकार में छोटी-बड़ी काट कर खौलते घी या तेल की कड़ाही में तल कर सुनहरा होने तक सिकाई की जाती है। फिर उसे मिक्सी या ग्राइंडर में पीसकर छोटा कर लिया जाता है। बड़े टुकड़ों को फिर से मिक्सी मे पीस कर बारीक बनाया जाता है। इसमें जरूरत के मुताबिक देशी घी, बारीक शक्कर, मेवा इत्यादि मिला कर लड्डू बना लिए जाता है। इसका स्वाद बेमिसाल बन जाता है।

दाल : बाटी के लिए दाल आमतौर पर चने, उड़द और मसूर को मिला कर मसाले वाली, थोड़ी तीखी और गाढ़ी तैयार की जाती है। इसमें हींग, जीरा, लाल मिर्च और लहसुन का तड़का लगाएं।

चूरमा और बाटी के साथ आजकल चावल पका कर भात के रूप में भी परोसा जाता है। इस अनूठे मिश्रित व्यंजन में सादा, मीठा और चरका-चटपटा स्वाद ऐसा रंग जमाता है कि खाने वाला वाह कह उठता है।

प्रत्यूष से मेरा नाता

एक पुस्तकालय में प्रत्यूष पढ़ने का अवसर मिला। मासिक पत्रिका को शुरू से आखिर तक पढ़ा और अगले ही दिन अपना एक आलेख लेकर 'प्रत्यूष' कार्यालय पहुंच गया। दरवाजे पर प्रो. आनंदी लाल शर्मा की नेमप्लेट देखकर आंखों को यकीन नहीं हो रहा था कि मैं मेरे गुरुदेव के आवास के बाहर खड़ा हूं। अत्यंत प्रसन्नता के साथ भीतर प्रवेश किया और उनके पुत्र यानी 'प्रत्यूष' के प्रकाशक अपने गुरु भाई पंकज शर्मा से मिला। मेरा वह आलेख तो छपा ही और भी कई छपे।

प्रत्यूष की 15 वर्षीय सफलतम प्रकाशन यात्रा पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

- तरुण कुमार दाधीच (साहित्यकार)

थाली में 'हरा ज़हर'

रसोईघर अथवा किचन आराधना कक्ष के समान ही घर का पवित्र और शुचितापूर्ण स्थान है। जहां बनने वाले भोजन का प्रभु को भोग लगाया जाता और बाद में प्रसाद के रूप में उसका परिजन-मेहमान उपयोग करते हैं। किचन में क्या और कैसे तैयार हो रहा है। इसका स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। हरी सब्जियों के नाम पर रसोईघर में जो तैयार हो रहा है, कहीं वह हरा ज़हर तो नहीं? शासकीय जिम्मेदार महकमे फूड सेफ्टी स्टेण्डर्ड ऑथोरिटी ने पिछल तीन दशकों में तो पेस्टीसाइड के इस्तेमाल की सीमा का पुनर्निर्धारण ही नहीं किया है।

पहले तो दूध, घी, आटा, तेल व अन्य खाद्य पदार्थों में मिलावट की खबरें आती थीं, पर अब तो हरी सब्जियों में उनकी उपज के ही दौरान खतरनाक ज़हर प्रवेश कराया जा रहा है। हरी सब्जियों व फलों के ज़्यादा से ज़्यादा उपयोग की सलाह आयुर्वेद ही नहीं होम्योपैथी और एलोपैथी के चिकित्सक भी देते हैं। इसके अलावा आजकल शायद ही कोई ऐसा अवसर आता होगा, जिसमें मेहमानों को पक्वान्न के साथ सलाद न परोसा जाता हो। सलाद यानि हरी सब्जियों के टुकड़ों का ऐसा कच्चा मिश्रण जो सलीके से परोसा जाता है, लेकिन हरी सब्जियों की चाह में आज आदमी बीमारी और मौता के करीब जाने पर मजबूर है।

नंदकिशोर शर्मा

सेहत में कैसे होता इसका प्रवेश?

हरी सब्जियों के नाम पर जो ज़हर हमारी थाली में आ रहा है, उसका स्रोत क्या है ? मुनाफ़ाखोर इन्हें ज़हरीला बनाते कैसे हैं ? खेत, मंडी बाजार सब जगह हरे ज़हर का कारोबार फल-फूल रहा है। सबसे पहले हरी सब्जियां दूषित होती हैं उन खेतों में जहां शहर भर के गंदे नाले और गटरों का पानी सिंचाई में प्रयुक्त होता है। विषाणुयुक्त सिंचाई अनाज, सब्जियों और फलों रेशे-रेशे को विषाक्त बना रही है। इतना ही नहीं देश की नदियों के किनारे उगाई जाने वाली फसलों-सब्जियों में भी ज़हरीले रसायन पाये गए हैं, क्योंकि अधिकांश नदियां कल-कारखानों से निकलने वाले घुलनशील जहरीले मैटल व केमिकल के उच्छिष्ठों की संवाहक हैं। भूजल में केडमियम, सीसा, कॉपर, जिंक, मर्करी, क्रोमियम और आर्सेनिक जैसी भारी धातुएं मिली रहती। जब हरी सब्जियां खेतों में लहलहाने लगती है किसान पेस्टीसाइड्स का बेरहमी से स्प्रे करता है। वह इतनी अधिकता से पेस्टीसाइड्स का छिड़काव करता है कि उसे अपनी सेहत तक का खयाल नहीं रहता है।

देश में सबसे ज्यादा अन्न, उपजाने वाले पंजाब के हजारों किसान अकाल मौत और असाध्य बीमारियों की चपेट में हैं। यह अकेले किसी एक राज्य की बात नहीं पूरे देश में यही हाल है। उपज पैदा करने वाले किसान हरी सब्जियों के पौधों-बेलड़ियों पर बड़े पैमाने पर प्रतिबंधित ऑक्सीटोसीन

जान की दुश्मन

हरी सब्जियों में मौजूद ज़हर को खाने से फेफड़ों में इंफैक्शन, अल्सर, कैंसर और एलर्जी जैसी घातक बीमारियां हो सकती है। क्रोमियम मैटल्स जैसी धातुओं के शरीर में पहुंचने से चर्मरोग व श्वास सम्बन्धी परेशानियों के साथ शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता नष्ट होने की विकट समस्या पैदा हो जाती। यानी फिर तो शरीर के भीतर कोई भी बीमारी आसानी से हमला कर सकती है। कॉपर मैटल की अधिकता से एलर्जी, चर्मरोग, आंखों के कार्निया का प्रभावित होना, उल्टी-दस्त, लिवर की खराबी होना और उच्च रक्तचाप बढ़ना आम बात हो जाती है। प्रदूषित सब्जियों को पकाने पर वे कड़वाहट का स्वाद ले आती है, जिसे कूकर ब्यूटेन भी कहते हैं। इन सब्जियों के उपयोग से व्यक्ति के स्वभाव में गुस्सा व चिड़चिड़ापन आता है। इसलिए जरूरी है कि फल-सब्जियों के इस्तेमाल में सावधानी रखी जाए। वैसे तो प्रदूषित सामग्री की सही पहचान तो लेबोरेट्री की जांच से ही हो पाती है। परन्तु कैमिकल कलर वाली सब्जियों को गुनगुने पानी में धोने पर पानी रंगीन हो जाता है। मोम का इस्तेमाल की गई सब्जियों को छूरी-चाकू से खुरचने पर उजली परत पर गौर किया जाए तो मोम नज़र आता है। बहुत ज्यादा हरी-भरी और चमकीली सब्जियों में रसायन पाए जाने की संभावना अधिक होती है। सब्जियों का सेवन करने के बाद यदि तबीयत खराब महसूस करें या जी मिचले अथवा उलटी आती है तो तुरन्त डॉक्टर के पास पहुंचे। उलटी को रोका नहीं जाए और जल्दी उलटी लाने और राहत के लिए एक गिलास गुनगुने पानी में दो चम्मच नमक डाल कर पिएं और चिकित्सा परामर्श लें।

इंजेक्शन लगा कर उसके फल को रातों-रात लम्बा-चौड़ा और वज़नी बना देते हैं। आलू से लेकर टमाटर, केला, लौकी, बैंगन, करेला इत्यादि सभी कैमिकल प्रोडक्टेड सब्जियां-फल हैं।

सब्जियों में कैमिकल्स की मिलावट उन्हें इस क़दर विषाक्त बना रही है, जिससे लोगों का स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा हा है। पेस्टीसाइड्स-इंसैक्टीसाइड का छिड़काव किए बिना तो अमूमन कोई भी सब्जी मार्केट में आती ही नहीं। बढ़ती जनसंख्या की मांग के अनुपात में सब्जी उत्पादकों को ज्यादा से ज्यादा माल उपलब्ध कराने के लिए यही एक आसान तरीका लगता है। इसलिए सब्जियों की बढ़वार और तुरंत उपलब्धि के लिए एंडो सल्फान, एचसीएच व एल्ड्रिन जैसे घातक पैस्टीसाइड्स का धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहा है।

फल-सब्जी उत्पादक ही दोषी नहीं हैं, उन्हें अपने उत्पाद का कभी वाजिब दाम मिला ही नहीं, दरअसल वे मुनाफाखारों के शिकार हैं। जैसे ही किसान का प्रोडेक्ट कृषि मंडी या मार्केट में पहुंचता है तो आढ़तिए और छुटकर दोनों ही कारोबारी निर्मम तरीके से सब्जियों पर कीटनाशकों की बौछार कर देते हैं। वे भी वजन बढ़ाने के लिए इंजेक्शन की पिचकारी फलों और बड़ी सब्जियों के अन्दर छोड़ देते हैं। परवल, तुरई, लौकी, भिंडी आदि जो एकदम ताजा व हरी दिखलाई पड़ती है, उतनी दरअसल होती नहीं। इन्हें रसायन युक्त पानी से धोया जाता है और कैमिकल रंग इन पर भी प्रयुक्त किया जाता है। टमाटर इत्यादि को जीएथ्री रसायन तो अन्य सब्जियों को चमकदार बनाने के लिए मोम की परत चढ़ाई जाती है। केले और पपीते को तो कैमिकल में डुबोकर ही चमकदार बनाया जाता और पकाया जाता है।

कैल्शियम कार्बाइड को पुड़ियों में डालकर फलों के ढेर के बीच रख दिया जाता और उस पर बर्फ रख दी जाती है। जिससे बूंद-बूंद पानी गिरता रहता तथा फल जल्दी पक भी जाता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, बड़े शहरों की सब्जी मंडियों में अलग-अलग सब्जियों का परीक्षण किया गया। इसमें टमाटरों के 28 नमूनों में से 46.43 प्रतिशत नमूनों में पैस्टीसाइड ज्यादा पाया गया। भिंडी के 25 नमूनों में से 32 फीसद, आलू के 17 में से 23.53, पत्ता गोभी के 39 में से 28, बैंगन के 46 में से 50 प्रतिशत नमूने प्रदूषित पाए गए। फूलगोभी सर्वाधिक प्रदूषित पाई गई, जिसके 27 में से 51.85 प्रतिशत नमूनों में यह ज़हर था।

दूसरों के भरोसे न छोड़ें सेहत

मिलावटी वस्तुओं और फल-सब्जियों में प्रदूषण को रोकने के लिए कई कानून हैं, परन्तु कानून की नज़र से मिलावटखोर व अपमिश्रणकर्ता अभी भी मजफूज़ ही बने हुए हैं। फूड सेफ्टी स्टैण्डर्ड ऑथोरिटी का महकमा नियम-कायदों की सेज पर ऊंघता ही नजर आता है। फल-सब्जियों में कीटनाशकों के अवशेष की कितनी इजाजत है, इसका पिछले तीन दशकों में सीमा का पुनर्निर्धारण तक नहीं किया गया है। हालात यह है कि इन वर्षों में हरित क्रांति की अगुआई में पेस्टीसाइड की मात्रा, जहरीलापन और संख्या में लगातार इज़ाफा हुआ है। बढ़ती जनसंख्या की मांग और खपत का मुकाबला करने के लिए कैमिकल व कीटनाशक का धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहा है। यह तो सच है कि मौजूदा दौर में कीटनाशकों पर पाबंदी लगाना संभव नहीं, परन्तु यह तो हो सकता है कि इसकी सही मात्रा और सही समय पर इस्तेमाल की विधियां, बताई जाएं व अत्यधिक हानिकारक रसायन प्रतिबंधित कर दिए जाएं। सब्जियों को खाने वालों के साथ, उगाने और विपणन करने वाले लोग भी तो इससे प्रभावित हो रहे हैं।

आज कृषि विशेषज्ञों व रसायनज्ञों की प्रिसिक्रिप्शन के बिना बाजार से पैस्टीसाइड व कैमिकल खरीदा-बेचा तथा भंडारित किया जा रहा है। जो लोग इनका असावधानीवश प्रयोग कर रहे हैं, वे कतई सुरक्षित नहीं हैं। हाथ, आंख, नाक व शरीर के अन्य अंगों के प्रिकोशन के बिना उपयोग करने की अज्ञानता और लापरवाही का चलन है। उपभोक्ता भी तो हरी सब्जियों को घर लाने के बाद बिल्कुल सावधानी नहीं रखते। 'लाया, पकाया, खाया' की तर्ज पर किचन मैथड प्रचलन है। किसी को भी दो पल रुक कर सोचने की फुर्सत नहीं कि हम जिन हरी-सब्जियों, फलों या सलाद के नाम पर जो कुछ खा रहे हैं, वह एक दिन हमारी जीवन लीला ही समाप्त कर देगा। हरी सब्जियों के नाम पर जो हम हरा ज़हर अपनी थाली में सजा रहे हैं, इस पर गंभीर चिंतन, मनन व एहतियाती उपाय की जरूरत है। धरती के वरदान को अभिशाप में बदलने वालों के खिलाफ आवाज उठनी ही चाहिए।

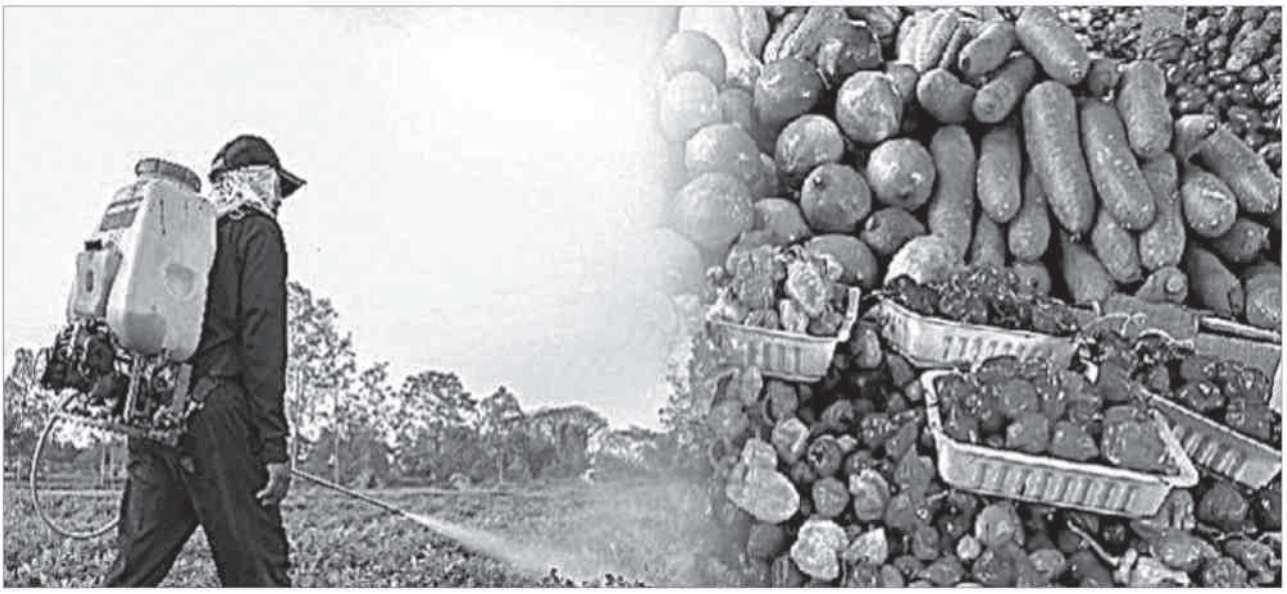

गेला वाळौ गाम

णू नी वात है जदी कणी-कणीक् गाम रो नाम मनख लेवताई कोनी। कंकू-पत्री दैई नै ठाकर काळ्या नै कियौ – थूं गेला वाळा गाम जाजै अर वठै रावळा म्हें दैई नै आवजै। वणी पूछ्यौ 'ओ गेळा वाळौ गाम कश्यौ है ?' 'वठै आगे

जवान सिंह सिसोदिया

घाटी परै पूछी लीजै मनख वताई दैवेला।' पण थोड़ौक आसरौ तो वतावौ ?' ठाकर बोल्या – 'थूं तो गेलो पकड़ जणी री वात कर। नवरा नेटा मती ले नै परौ ऊठ, गाम छैटी पड़े। पूछतौ-पूछतौ परौ पूग जै। मनख तो पूछता-पूछता गंगाजी परा जावै। वठै ठाकर रोट्यां री मनवार करै तो खाई लेणी नीतर आखौ दन भूखौई हड़पा तांणतौ रैवेला।'

खांदे पछेवड़ौ नांकी नै काळ्यौ गेले व्हियौ – ओ गेला वाळौ गाम कश्यौ वाजै ? ठा परी करां। घाटी परै जाईनै वणी एक जणा नै पूछ्यौ – 'गेला वाळा गाम रो नाम कांई है ?' वणी कियौ – 'परभात पैल्या वणी गाम रो नाम म्हनैहिज पूछी रियौ है ? थनै ठा कोनी ? वणी गाम रो नाम लेवा वाळा नै आखौ दन रोट्यां खावा कोनी मिले।' काळयौ समझ नी सक्यौ आ कांई वात है ? वणी दूजा मनख नै पूछ्यौ तो वणी गाम रो नाम तो वताई दीधौ पण काळ्या नै धरकारी दीधौ – थें आज म्हारौ दन वगाड़ी नाक्यौ। खैर म्हारौ तो व्हैई ज्यो व्हेई पण थूं रोट्यां रो सतुनो पैल्यां गांठी लीजै। थें रोळ मती करो अे तो जूनां मनखां वाळी वातां है। वठै 'रावळा' में आटा रो कांई घाटौ है। रोट्यां तो ठाठऊं जीमावै ला। दपरां में काळ्यौ वणी गाम जाई पूगो। ठाकर अमल-पाणी में तर हा। वणी मुजरौ कीधौ, कंकू-पत्री दैई नै अठी-वठी री वातां करतां वणी पूछ्यौ – 'मनख आपणै अणी गाम रो नाम कोनी लैणो चावै। कैवे के नाम लेवा वाळा नै आखौ दन खावा रोट्या नी मिले।' ठाकरां नै रीस आईगी पण काठा रैई नै बोल्या – 'मनखां री कई है ? जतरा मूंडा वतरी वातां। थारै तो कई कसर पड़ी जावै तो कीजै। नवरी वातां नी करणी।' ठाकर वणां रा 'हाळी' नै बुलायौ अर कियौ – कान खोलीनै हूंण ले। 'काळ्यां' नै धपाई नै रोट्यां खवाई दीजै। हाळी हूंकारो भरी लीधौ पछै ठाकर तो लाम्बी तांणी, नै नींद रा खर्राटा खेंचवा लागा। काळ्यौ रोट्या री वाट नाळतौ रियौ। 'थाळ अबे आवै ..... अबे आवै पण कूण लावै ? ठाकरां रो हाळी, मेले मुक्को तोई वजावै ताळी। व्हौ थोड़ी दांण पछै रावळा बारणै जातौ रियौ।

थाक्या-पच्या काळ्या नै तो भूखां – तरस्यांई नींद रा झोला आवा लागा। पछैवड़ी विछाई नै आडो व्हेई ग्यौ। ठाकर जागा तो होच्यौ 'डामर तो खाणौ खाई नै ठाठ सूं हूतौ है। ठाकरां रो मांचौ वांज्यौ तो काळ्यौ पाछौ ऊठी नै बैई ग्यौ। ठाकर पूछ्यौ – 'थूं तो केतौ हो के अणी गाम रो नाम लेवां तो रोट्यां खावा कोनी मिले, भूखौ तो नी रियौ ?' काळयौ बोल्यौ – 'रोट्यां तो हालतांई आई कोनी होकम! घणी भूख कोनी है अबे हीख अरज करणौ चाऊं ?' 'आ कांई वात करै ?' ठाकरां री आंख्यां राती चट् वैईगी। वणां हाळी ने पूछ्यौ – 'काळ्या नै रोट्यां कोनी खवाई ?' वणी कियौ – 'म्है तो धापमा खवाई दीदी।' ठाकर फेर पूछ्यौ – ओ तो कैवे के रोट्यां तो कोनी आई ? हाळी बोल्यौ – अरे होकम! म्हैं तो आंपणै 'काळ्या टेगड़ा' री वात जाणी, अणी रो नामई काळ्यौ है आ तो म्हनै ठा कोनी पड़ी.... । आ वात हूंणताई ठाकर तो वगार में मरच बळै ज्यूं रिसां बळ ग्या। घणी जोर री रीस आई गी। वणां तो जूतौ लैई नै जोर सूं हाळी परै फेंक्यौ। हाळी तो टळ ग्यौ अर जूतौ तो हूदो काळ्या रै मूंडा परै जाई लागो। काळ्यां नै तो वनाई वात भंमळेटी आई गी। गाबड़ वांकी व्हेई गी। व्हौ हाथ जोड़ी नै बोल्यौ – 'अरे होकम! अब म्हनै तो हेंमूची भूख कोनी। हीख अरज कररूं।' पछेवड़ौ खांदे नाक्यौ नै रावंळा बारणै जातौ दिख्यौ। आज म्हूं जाणी ग्यौ, मनख कैवे व्हा वात हांची है। अब तो अश्या गाम रो नी तो कदी नाम लेणौ, नी दूजा नै पूछणौ। म्हूं जीवतौ रियौ तो अश्या गेला वाळा गाम रै तो कदीई गेलेईज् नी जाऊंला जठै रोट्यां री जग्या जरबां खाणां पांती आवै। म्हूं भूखै मर्यौ अणी रो अतरौ होच कोनी पण मनख पूछैला 'के थारै मूंडा रै कांई व्हियौ ? तो कई केणौ रियौ ?'

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि प्रत्यूष अपनी प्रकाशन यात्रा के पन्द्रह वर्ष पूर्ण कर सोलहवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस शुभावसर पर सम्पूर्ण 'प्रत्यूष' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई। उन्हीं की समर्पण, निष्ठा, श्रम एवं लगन का यह सुफल है कि प्रत्यूष ने पन्द्रह वर्ष की यह यात्रा कीर्तिमान स्थापित करते हुए पूर्ण की है।

पुनः आप सभी को हार्दिक बधाई।

- जगदीश अरोड़ा

MIRAJ GROUP

तन भी शुद्ध, मन भी शुद्ध... तो वस्त्र क्यों रहे अशुद्ध !

मिराज शुद्ध
ऑयल सोप
100% पशु चर्बी रहित

MIRAJ TRADECOM PVT. LTD.
Miraj Campus, Nathdwara - 313 301 (Raj.) India / Email : fmcg@mirajgroup.in / Web: www.mirajgroup.in
Contact us at : 88759 92317, 88759 33370

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

वाशिंग पाउडर, डिटर्जेंट टिकिया एवं बर्तन बार

Mfd. & Mktd. by : AADHAR PRODUCTS PVT. LTD., UDAIPUR Trade Enquiry 7727864004 | visit us at : www.aadharproducts.in

प्रत्यूष : प्रकाशन यात्रा के 15 वर्ष पूर्ण

प्रत्यूष
सफलता के 15 वर्ष

सोलहवां साल!

'प्रत्यूष' हिन्दी मासिक पत्रिका का 184वां अंक पाठकों, सहयोगियों व शुभचिंतकों को समर्पित करते हुए मैं अत्यंत हर्षित हूं। आवश्यक संसाधनों के अभाव के बावजूद 'प्रत्यूष' की इस सफलता के सफ़र को मैं पाठकों व सहयोगियों की कृपा और आशीर्वाद का ही प्रसाद मानता हूं।

आज से 15 वर्ष पूर्व अक्टूबर 2002 की विजयादशमी पर इसके प्रथम अंक का लोकार्पण ही विजयादशमी पर्व के उसी संदेश को लेकर किया गया, जो आज भी जनजीवन में सर्वमान्य है और वह यह कि 'अच्छाई हमेशा बुराई को परास्त करती है' पत्र-पत्रिकाओं का उद्भव और प्रकाशन भी इसी उद्देश्य को लेकर देश-विदेश में होता रहा कि शुद्ध-बुद्ध समाज रचना में वे भी एक सजग प्रहरी की भूमिका का निर्वाह करते हुए व्यक्ति और समाज को रचनात्मक-सृजनात्मक दिशा प्रदान करें। शिक्षा पूर्ण करने के बाद जब मैं सामाजिक-राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय हुआ तभी से माता-पिता व गुरुजन के संस्कार मुझे उस राह चलने के लिए इंगित करते से दिखाई दिए, जिसके माध्यम से समाज और साहित्य के साथ-साथ मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना में अपना किंचित ही सही, योगदान सुनिश्चित कर सकूं। इस स्वप्न को साकार करने के लिए मित्रों और मार्गदर्शकों ने पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम आगे बढ़ाने की सलाह दी और इस तरह शुरू हो गया 'प्रत्यूष' हिन्दी मासिक का प्रकाशन।

पत्रिका के प्रवेशांक का विमोचन 30 अक्टूबर 2002 की संध्या को राजधानी जयपुर में तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. गिरिजा व्यास के हाथों हुआ। तब दोनों ही मान्य अतिथियों ने प्रवेशांक के कलेवर और सामग्री का ज़िक्र करते हुए एक बात कही थी, और वह यह कि 'पत्रिका की नियमितता बरकरार रहनी चाहिए।' इस आलेख के आरंभ में ही अब तक प्रकाशित अंकों की संख्या का उल्लेख भी इसीलिए किया गया कि - पन्द्रह वर्ष पूर्व व्यक्त हिदायत और विश्वास, आज भी प्रत्यूष की नींव में है। ऐसा कोई माह नहीं जब 'प्रत्यूष' पाठकों के हाथों और घरों तक न पहुंची हो। इसका श्रेय में सम्पादकीय, मार्केटिंग और मुद्रण टीम को हृदय से अभिनंदन करते हुए देना चाहूंगा। 'प्रत्यूष' देश-प्रदेश की समरसतापूर्ण संस्कृति और परम्पराओं की वाहक रही है। इसका हर स्तंभ और आलेख समसामयिक घटनाओं और प्रसंगों का विश्लेषण करने वाला दस्तावेज साबित हुआ है। यह समाज और परिवार के हर वर्ग की उपयोगी बन सकी। यही वजह है कि यह राजस्थान से नियमित निकलने और 15 साल का लम्बा सफ़र पूर्ण करने वाली मासिक पत्रिका का दर्जा पा सकी।

आपका सहयोग और मार्गदर्शन इसी तरह मिलता रहा तो न केवल इसकी प्रसार संख्या में और वृद्धि की जाएगी अपितु इसके रंगीन पृष्ठों की संख्या में भी इजाफा होगा। निष्पक्षता और विश्वसनीयता ही हमारी कसौटी है।

आपके सहयोग के प्रति कृतज्ञ

- पंकज शर्मा

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के सानिध्य में 'प्रत्यूष' की प्रति भेंट करते हुए पंकज कुमार शर्मा

उदयपुर यात्रा पर आए तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को 'प्रत्यूष' की प्रति भेंट करते पंकज कुमार शर्मा

न्यूज़ पेपर एसोसिएशन के कार्यक्रम में तत्कालीन केन्द्रीय संचार मंत्री डॉ. शकील अहमद से ''बेस्ट पब्लिशर''का पुरस्कार प्राप्त करते प्रकाशक पंकज कुमार शर्मा

पूर्व मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास को प्रत्यूष का पहला अंक भेंट कर विमोचन करवाते प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी, सम्पादक रेणु शर्मा, प्र. सम्पादक डॉ. वीणा शर्मा एवं अन्य

प्रत्यूष पत्रिका की ओर से आयोजित शिक्षक दिवस सम्मान समारोह में सम्मानित शिक्षकगण

वक़्त के कैनवस पर ज़िंदगी का कोलाज

- डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर

हिन्दी मासिक पत्रिका 'प्रत्यूष' ने पन्द्रह वर्ष की अनवरत यात्रा के बाद सोलहवें वर्ष में प्रवेश किया है, यह अपने आप में बड़ी बात है, क्योंकि अधिकांश पत्रिकाएं कुछ ही वर्ष में अपना अस्तित्व खो देती हैं। फलतः निश्चित ही इसमें कुछ ऐसा है जो पाठक को विश्वास दिलाता है कि वह उसके लिए ज़रूरी है।

आज लोकतंत्र का जिस तेजी से राजनीतिकरण होता जा रहा है, उसमें अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए जन को साथ लेकर चलना दुभर होता जा रहा है, क्योंकि राजनैतिक दल, सत्ता, सेठ, उद्योगपति और बाहुबली का दबाव दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है और विकास के नये दौर में भारतीयता की मूल संस्कृति सभ्यता, संस्कार, सोच, परंपरा आदि सभी पर आक्रमण हो रहा है। 'प्रत्यूष' इन्हीं जीवन तत्वों के लिए संरक्षक बना रहना चाहता है। उम्दा जैकिट, उम्दा कागज़ पर वक़्त के कैनवस पर ज़िंदगी के हर कोलाज की जद्दोजहद को अपने कलेवर में लेकर वह संवाद करता है और वह भी बेहतर कवरेज़ से रू-ब-रू कराते हुए एकदम हक़ीकत से लबरेज।

'प्रत्यूष' बहुआयामी पत्रिका है। उसमें सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य, राजनीतिक, ऐतिहासिक, कला, विज्ञान, फिल्म आदि समाये हुए हैं। दरअसल वह अपने समय की हर गतिविधि की धड़कनों में सुलझी-उलझी और बुनी-अनबुनी दुनिया को इस तरह बसाये है कि पाठक उसके शेष का हिस्सा बनने के लिए अपने को तैयार कर सके। तद् संदर्भ में कुछ शीर्षक प्रस्तुत हैं यथा - उपभोक्ता के भरोसे पर प्रहार, एफडीआई पर रखनी होगी निगरानी(संपादकीय), गिलूण्ड : मानव सभ्यता की पहली दस्तक, परछाइयां(मेरे उपन्यास के अंश) (प्रत्यूष अक्तूबर-नवम्बर 2012), सूर्यदेव का अगवानी पर्व, हिरन के वंशज है जिराफ, बुढ़ापे का अभिशाप 'अल्जाइमर', बेइन्तहा ख़ुशी लाया है चांद ईद का(जन. मार्च-अगस्त 13), देश की तक़दीर लिखेगा बनारस-अमेठी या कोई और, प्रकाश में आई जमींदोज विरासत, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया, पद्मनाथ मंदिर खजाने में सेंध(मई-जून 2013) नारियल-पेड़ों की छांव में समन्दर का गांव(दिसम्बर, 2016), बेणेश्वर : लोक संस्कृति का महाकुंभ(फरवरी 2017) आदि। वक़्त के कारुणिक, मार्मिक और संवेदनशील पंख उड़ना कैसे भूलने लगे हैं? क्यों और किसने भटका दिया है जनता की आस्था का प्यारा सा लोकतंत्र? अच्छे दिनों के स्वप्न भयावह क्यों लगने लगे हैं? क्या इसका कोई विकल्प हो सकता है? क्रॉस कल्चर के साथ कैसे एडजस्ट हों? संबंधों में लगी आग कैसे बुझे? इन प्रश्नों की जांच पड़ताल 'प्रत्यूष' ने की और 'प्रतिभा को निगलता आरक्षण का जिन्न'(जुलाई 2005), सैलाब ने जख्म दिए ..... सियासत ने दिए आँसू आदि(अगस्त 2013) आदि जैसे लेखों में उन पर गहराई से मंथन भी किया है। संपादक श्री विष्णु शर्मा हितैषी ने अपने संपादकीय में स्पष्ट लिखा, देश में कार्यपालिका तो कभी बदलाव की पहल नहीं करती। न्यायपालिका बार-बार प्रसंज्ञान लेकर कार्यपालिका के त्रुटिपूर्ण कानूनों पर रोक लगाती है। .... लोकतंत्र का तीसरा पाया व्यवस्थापिका अपना समय हुड़दंग में निकाल देता है, तो चौथा पाया कागज़ी सनसनी फैलाकर रह जाता है। यह है सत्य 'प्रत्यूष' का, उसकी निष्ठा का और उसके ज़मीर का, इन हौसलों के बदौलत वह जिंदा है। इसके लिए संपादक और प्रकाशक के साथ सम्पूर्ण पत्रिका परिवार का उत्तरदायित्वपूर्ण रवैया सम्मान योग्य है और इस तरह उसका अनागत भी उज्ज्वल है।

समर्पण खोलेगा प्रगति के नए गवाक्ष ....

- डॉ. देवेन्द्र इन्द्रेश

उदयपुर की हिन्दी मासिक पत्रिका 'प्रत्यूष' अपनी प्रकाशन यात्रा के पन्द्रह वर्ष पूर्ण कर सोलहवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। इस शुभावसर पर 'प्रत्यूष' परिवार को हृदय की अनंत गहराइयों से हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई! प्रत्यूष अपना शैशव काल पूर्ण करके परिपक्वता के साथ पत्रकारिता जगत में अपना साहित्यिक सौन्दर्य प्रस्फुटित करते हुए अनूठी मासिक पत्रिका होने का गौरव प्राप्त कर रही है। यद्यपि किसी भी मासिक पत्रिका को पत्रकारिता की कठिन चुनौतियों को पूर्ण करते हुए अपना सम्मानीय स्थान बनाने के लिए पन्द्रह वर्ष का समय बहुत अधिक नहीं होता, पर 'प्रत्यूष' ने अपनी निष्ठा एवं समर्पण से जो गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है, वह अत्यन्त श्लाघनीय है। और यह भी सत्य है कि 'प्रत्यूष' ने आज जो गौरवमय मुकाम प्राप्त किया है, वह उसके लिए इतना सहज एवं सरल भी नहीं था। इसकी यात्रा संघर्षपूर्ण रही है। यात्रा के हर सोपान पर इसे आर्थिक संसाधन, पत्रिका की लोकप्रियता का संकट तथा अपनी पहचान बनाने की जद्दोजहद से निरंतर जूझना पड़ा है। उदयपुर में ही नहीं राजस्थान में एक भी ऐसी मासिक पत्रिका का ना होना, जो समसामयिक राजनीतिक निष्पक्ष, निर्भीक एवं सटीक तथा विश्वसनीय घटनाओं को एक आकर्षक पत्रिका रूपी गुलदस्ते में सजा कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सके, जिसकी आवश्यकता प्रबुद्ध पाठकों ने लम्बे समय तक महसूस की। पाठकों की इस मंशा को ध्यान में रखते हुए उसके पूर्ण करने का बीड़ा उठाया, 'प्रत्यूष' के संस्थापक पंकज कुमार शर्मा ने, और संकल्प के साथ उसे साकार भी किया। लेकिन इस संकल्प को कार्य रूप में परिणित करना उस समय अत्यन्त कठिन था। पर जिस के सिर पर माता-पिता का आशीर्वाद रहता है, जिनकी प्रेरणा निरंतर शुभ संकल्प को साकार करने के लिए सम्बल बनी रहती हे, उसको सुफल अवश्य मिलता है। प्रत्यूष पत्रिका ने अपनी पन्द्रह वर्ष की यात्रा के संघर्ष को पार करते हुए जो गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया है, उसका सारा श्रेय मात-पिता के आशीर्वाद और प्रेरणा को ही है। प्रत्यूष को सजाने, संवारने एवं विश्वसनीय पत्रिका बना कर श्रेष्ठ स्थान दिलाने में प्रत्यूष परिवार का महनीय योगदान रहा है। उनके सहयोग, समर्पण, निष्ठा, साहित्यिक रूचि एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य का निष्पक्ष, सटीक आकलन करने की अनुभवी योग्यता के बिना संभव नहीं था। 'प्रत्यूष' के प्रधान सम्पादक भाई विष्णु शर्मा जी हितैषी के चिन्तपरक, सटीक तथा राजनीतिक परिदृश्यों को सूक्ष्म दृष्टि से उजागर करते हुए सम्पादकीय पाठकों में ना केवल लोकप्रिय हुए हैं, अपितु राजनीतिक परिप्रेक्ष्य पर सोचने के लिए विवश भी करते हैं।

पर अभी 'प्रत्यूष' की यात्रा पूर्ण नहीं हुई है। अब प्रत्यूष की यात्रा तरुणाई की ओर अग्रसर हो रही है। अब प्रत्यूष को निर्भय जोश की आवश्यकता है, पर जोश के साथ विवेक सम्मत होश भी रखना है। प्रत्यूष अभी और समर्पण मांग रहा है। वही प्रगति के नये गवाक्ष खोलता है। प्रत्यूष की साज-सज्जा के साथ नये-नये रोचक साहित्यिक आयाम जोड़ना भी आवश्यक है। कलेवर को और अधिक सुसज्जित करना है, पर यह प्रत्यूष के लिए कोई दुष्कर कार्य नहीं है। सम्पादकीय अनुभवी टीम का प्रगतिशील सोच तथा पंकज जी का प्रत्यूष के प्रति समर्पण भाव इतना प्रभावी है कि नये वर्ष से प्रत्यूष अपने नये-नये रोचक साहित्यिक सजे-धजे कलेवर से अपने पाठकों के समक्ष आएगा और उनकी साहित्यिक भूख को शान्त एवं राजनीतिक सोच को परिपक्व करेगा। हमें थक कर बैठना नहीं है। जय शंकर प्रसाद की इस प्रेरणास्पद कविता के साथ मैं पुनः 'प्रत्यूष' परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

इस पथ का उद्देश्य नहीं है, श्रान्त भवन में टिक रहना।
किन्तु पहुँचना उस सीमा पर, जिसके आगे राह नहीं।।..... **शुभम् भूयात्**

सर्वप्रिय पारिवारिक पत्रिका

'प्रत्यूष' का सोलहवें वर्ष प्रवेश पर हार्दिक स्वागत-अभिनंदन। यह ऐसी सर्वप्रिय पारिवारिक पत्रिका है जो अपनी विशिष्ट और विलक्षण पहचान से देशभर की सभी पत्रिकाओं में सिरमौर है क्योंकि इसमें युग का प्रतिनिधित्व करने की सूझबूझ और युवा धड़कन है। विभिन्न विषयों पर सारगर्भित सचित्र आलेख, पाठक में ताजगी, स्फूर्ति, ज्ञान वृद्धि, सोच की प्रखरता और कुछ करने की रचनात्मक क्रियान्विति की ऊर्जा का संचार करती है। विषय कोई भी हो, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, साहित्यिक, पुरातात्विक, व्यावसायिक, शैक्षिक, खेल, सिनेमा, ज्योतिष, खेती-वानिकी, विज्ञान, तकनोलोजी आदि पर सांगोपांग प्रस्तुति का एक अनूठा स्वरूप इसमें देखा जा सकता है। पुरस्कार-सम्मान-अलंकरण और उल्लेखनीय उपलब्धियों के सचित्र समाचार, सचित्र शोक-समाचार, वैश्विक उलटफेर, हलचल आदि पर आकर्षक विवरण, स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक के महत्वपूर्ण घटनाक्रम का समावेश है इसमें। इसका नियमित प्रकाशन भी इसकी प्रमुख विशेषता है। सीमित संसाधनों में भी उच्च कोटि के चिकने कागज पर बहुरंगी सचित्र लुभावना आवरण, बीच के बहुरंगी पृष्ठ भी विविध गतिविधियों-विज्ञापनों से सुसज्जित रहते हैं।

संपादकीय स्तंभ विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, विवरणात्मक और विचारोत्तेजक होता है। इसके लिए प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी साधुवाद के पात्र हैं। यहां मेरा एक विनम्र सुझाव है कि यदि 'प्रत्यूष' के अब तक के अंकों के संपादकीय आलेखों का एक पुस्तकाकार प्रकाशन किया जा सके तो वह सामग्री अनेक विषयों के जिज्ञासुओं-शोधार्थियों के लिए एक स्मरणीय संदर्भ ग्रन्थ बन जाएगा। 'प्रत्यूष' के प्रधान सम्पादक हितैषीजी और संपादन से जुड़ी हुई सजग, तत्पर-अध्यवसायी-व्यवहार चतुर-दूर दृष्टि सम्पन्न टीम को असंख्य बधाइयां। इस लुभावनी पत्रिका के स्वत्वाधिकारी-संस्थापक पंकज कुमार शर्माजी ने एक बहुत बड़ा जटिल, संघर्षपूर्ण और शिखर पर बने रहने का सपना इस रूप में साकार करते रहने का जो संकल्प किया है वह प्रशंसनीय है, बधाई! उदयपुर जैसे छोटे शहर से ऐसी पत्रिका निकलना राजस्थान के लिए भी गौरव की बात है।

- जगदीशचन्द्र शर्मा, गिलूण्ड(वरिष्ठ कवि-साहित्यकार)

देवीलाल डांगी
9414164094
9001229362

चन्दन वाड़ी फार्म

मांगलिक कार्यो हेतु 35000 वर्गफीट का हराभरा लॉन, मन-मोहन फव्वारे, आकर्षक विद्युत साज-सज्जा, पार्किंग की पूरी व्यवस्था, अत्याधुनिक केटरिंग व्यवस्था, बर्तन व पुष्प सज्जित स्टेज, दिन भर पानी, बंगाली साज-सज्जा व ठहरने की उचित व्यवस्था।

प्रेस नगर, रुप सागर रोड, युनिवरसिटी, उदयपुर (राज.)

करन फार्म

मांगलिक कार्यो हेतु 32000 वर्गफीट का हराभरा लोन, 80 व 60 फीट मेन रोड आकर्षक विद्युत साज-सज्जा, पार्किंग की पूरी व्यवस्था, अत्याधुनिक केटरिंग, बर्तन व पुष्प सजित स्टेज, खाना बनाने हेतु पानी, अन्य सुविधा उपलब्ध।

महावीर नगर, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर-313 001 (राज.)

A Product of
अर्चना Panch 5 mani™
Fragrance

अर्चना™
एक्टिव
डिटर्जेन्ट वॉशिंग पाउडर
कपड़े रहे एक्टिव अर्चना एक्टिव डिटर्जेन्ट के साथ

आधुनिक एवं सर्वश्रेष्ठ तकनीक का आविष्कार एक्टिव डिटर्जेन्ट पाउडर

1 Kg. वाले कट्टे में 25 पाउच
500 Gram वाले कट्टे में 40 पाउच
200 Gram वाले कट्टे में 80 पाउच

निर्माता : पंचमणी फ्रेगरेन्स

कार्यालय : ने. हा. 76, एयरपोर्ट रोड
ग्लास फैक्ट्री चौराहा, खेमपुरा की तरफ
उदयपुर-313001 (राजस्थान)

वेबसाईट : www.archanaagarbatti.com
ई-मेल : sales@archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

फोन : 0294-2492161, 2490899

व्यावसायिक पूछताछ एवं डीलरशिप हेतु आर्थिक रूप से सुदृढ़ पार्टियां (वितरक रहित क्षेत्र मे) सम्पर्क करें।

मो.: +91-98290 42705, +91-99508 15555

नकारात्मक प्रभावों को यूं करें समाप्त

सुशील अग्रवाल

वास्तुशास्त्र में बुरी शक्तियों को नकारात्मक ऊर्जा और अच्छी शक्ति को सकारात्मक ऊर्जा के रूप में देखा जाता है। ऊर्जा का प्रवाह जिस तरह से व्यक्ति और उसके घर पर होता है उसका असर व्यक्ति के स्वास्थ्य, सुख और धन पर भी होता है। वास्तुविज्ञान में कुछ ऐसे नियम हैं जिनका पालन किया जाए तो हम नकारात्मक ऊर्जा के प्रभाव को अपने से दूर करके सकारात्मक ऊर्जा से लाभ उठा सकते हैं।

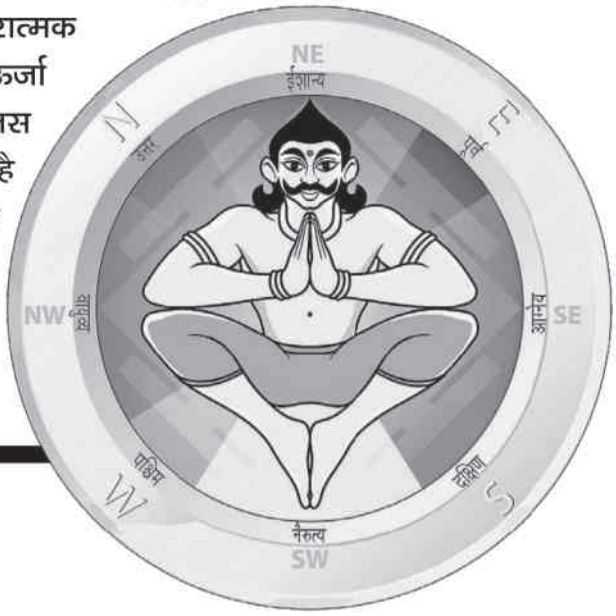

तुलसी का पौधा

बाहर से घर में आने वाले लोग भी कई बार नकारात्मक ऊर्जा लेकर आते हैं। जिनके घर के मुख्य द्वार पर तुलसी का पौधा होता है उनके घर में इस तरह की नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश नहीं हो पाता।

घोड़े की ऐसी तस्वीर

घोड़े की तस्वीर शुभ होती है। लेकिन इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो तस्वीर आप घर में ला रहे हैं, उनमें एक नहीं बल्कि सात घोड़े हों। अगर सात घोड़े के रथ पर सवार सूर्य देव हों तब यह तस्वीर और भी शुभ फलदायी होती है। इन तस्वीरों के घर में कहीं भी लगाने से आपको शुभ फल नहीं मिलता, अत: घोड़े की तस्वीर लगाने के लिए पूर्व दिशा को शुभ माना गया है।

पहाड़ या उड़ते हुए पक्षी

अतिथि कक्ष सुंदर हो इस बात का ध्यान आप भी रखते ही होंगे, लेकिन अतिथि कक्ष सिर्फ सुंदर हो और आपको नकारात्मक ऊर्जा के कारण नुकसान पहुंचाए तो आप बिल्कुल भी नहीं चाहते होंगे। अगर आप वास्तु की अनुकूलता का लाभ पाना चाहते हैं तो इस बात का ध्यान रखें कि इस कक्ष में पहाड़ या उड़ते हुए पक्षियों का चित्र लगाएं। ऐसी तस्वीरों से आत्मविश्वास और मनोबल बढ़ता है।

हवन कार्य

वास्तु सिद्धांत के अनुसार घर के आग्नेय कोण यानी दक्षिण पूर्व हिस्से में हवन की तस्वीर लगानी चाहिए। लेकिन अगर आपके घर में शयन कक्ष आग्नेय कोण में है तब इस तस्वीर की बजाय समुद्र की तस्वीर लगाएं। लेकिन ध्यान रखें समुद्र शांत हो। समुद्र में लहर उठती हुई तस्वीर लगाने से मानसिक शांति प्रभावित होती है। इससे पति-पत्नी के संबंधों पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है।

शंख का बड़ा महत्व

वास्तु विज्ञान में शंख का बड़ा महत्व है। शुभ मुहूर्त विशेष तौर पर होली, रामनवमी, जन्माष्टमी, दुर्गा पूजा, दीपावली अथवा रवि पुष्य योग या गुरु पुष्य योग में शंख को पूजा स्थल में रखकर इसकी धूप-दीप से पूजा की जाए तो घर में वास्तु दोष का प्रभाव कम होता है। अगर संभव हो तो शाम ढलने से पहले और सूर्योदय के समय शंख बजाएं इससे घर और आपके आस-पास का वातावरण शुद्ध और ऊर्जावान रहेगा।

गणेशजी की मूर्ति

घर के मुख्य द्वार का बड़ा महत्व है। अगर घर का मुख्य द्वार वास्तुदोष के प्रभाव में हो तब घर में रहने वाले भी अक्सर किसी ने किसी परेशानी में रहते हैं। मुख्य द्वार का वास्तुदोष व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर भी विपरीत प्रभाव डालता है। इसलिए मुख्य द्वार को नकारात्मक ऊर्जा और वास्तुदोष से मुक्त रखने के लिए मुख्य द्वार पर स्वास्तिक या ओम लगाना चाहिए। गणेशजी की मूर्ति मुख्य द्वार पर लगाई जाती है, लेकिन गणेशजी की मूर्ति लगाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि गणेशजी का मुख घर के अंदर की तरफ है।

रसोई में सिंदूरी गणेशजी

गणेशजी यूं तो हर रूप में मंगलकारी हैं। लेकिन वास्तुदोष को दूर करने में सिंदूरी रंग के गणेशजी का बड़ा महत्व है। जिस घर में रसोई घर दक्षिण पूर्व यानी आग्नेय कोण में नहीं हो तब वास्तुदोष को दूर करने के लिए रसोई के उत्तर पूर्व यानी ईशान कोण में सिंदूरी गणेशजी की तस्वीर लगानी चाहिए। रसोईघर आग्नेय कोण में होना शुभ फलदायी है।

'प्रत्यूष' का पन्द्रह वर्ष तक नियमित प्रकाश हिन्दी भाषा और साहित्य की बड़ी साधना है। विश्व, देश-प्रदेश व समाज के समसामयिक आयोजन, प्रयोजन और घटनाओं की जानकारी के साथ उनका सटीक और बेबाक विश्लेषण 'प्रत्यूष' की अपनी विशेषता रही है। 16वें वर्ष प्रवेश पर बधाई।

- एस. एस. सारंगदेवोत
कुलपति, जेआर नागर विश्वविद्यालय, उदयपुर

कितने दमदार आपके दांत

दांतों की कुछ समस्याएं जो पहले 40 पार में सुनने को मिलती थीं, वे अब कम उम्र में ही सामने आ रही हैं। तमाम जागरूकता के बावजूद आज भी हम दांतों पर उतना ध्यान नहीं देते जितना जरूरी है। यही वजह है कि युवाओं में दांतों में सड़न, सूजन व दर्द के मामले बढ़ रहे हैं। विशेषज्ञों से बात करके बता रही हैं – ऋचा झा

आज युवाओं में दांत से जुड़ी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। वे सांस में बदबू, मसूढ़ों में सूजन, दांत में सड़न जैसे रोगों से जूझ रहे हैं। जबकि शोधों के निष्कर्ष बताते हैं कि दांतों की बीमारी हमारे दिल तक को प्रभावित करती है। बदलते वक्त के साथ हमारी जीवनशैली तो बदली, मगर नहीं बदला, तो दांतों की उपेक्षा का भाव।

दांतों में सड़न

हमारा मुंख अनेक कीटाणुओं का घर है। ये कीटाणु दांत, मसूढ़े, जीभ जैसे हिस्सों पर चिपके रहते हैं। इनसे कुछ फायदेमंद भी हैं। मगर कई बड़ी मुसीबतें भी खड़ी करते हैं। हमें नुकसान पहुंचाने वाले ऐसे ही कीटाणु दांतों में सड़न की वजह बनते हैं। दांत मूल रूप से तीन परतों से बनता है – इनामेल, डेंटिन और पल्प। इनामेल ऊपरी ठोस परत है, जबकि डेंटिन मध्य का हिस्सा है और पल्प बीच का। सड़न का हमला सबसे पहले इनामेल पर होता है और फिर धीरे-धीरे वह रिसते हुए पल्प तक पहुंचता है। चिकित्सकीय परिभाषा में कहें, तो सड़न तब बढ़ती है, जब कुछ खास तरह के कीटाणु ऐसे अम्ल पैदा करते हैं, जो दांत के इनामेल और डेंटिन को नुकसान पहुंचाते हैं। और ये बैक्टीरिया कहीं बाहर से नहीं आते, बल्कि हमारी आदतों से पनपते हैं।

आदतों से मजबूर हम

अत्याधुनिक जीवन शैली ने सहूलियतें जरूर दी हैं, मगर इसने कई बुरी आदतों की सौगात भी हमें दी है। रात को देर से सोना और नींद भगाने के लिए मीठे पेय पदार्थों का सेवन बढ़ा है। कम्प्यूटर पर भी काम करते वक्त टेबल पर चाय, कॉफी या कोल्ड ड्रिंक के गिलास हमने गटकने शुरू कर दिए हैं। ये तमाम मीठे पेय पदार्थ एसिडिक ड्रिंक हैं। यानी ये एसिड(अम्ल) पैदा करते हैं, जो दांतों के लिए नुकसानदेह है। आज किसी भी ऑफिस में वातानुकूलन की वजह से बारह महीने एक नियत तापमान बना रहता है। इस वजह से हम पहले की तुलना में पानी कम पीने लगे हैं। पानी कम पीने की वजह से थूक या लार अपेक्षाकृत कम बनता है। चूंकि यह भी प्राकृतिक एंटीबायोटिक है, इसलिए इसकी कमी हमें कई रोगों का शिकार बनाती है।

सड़न की एक बड़ी वजह नशे का सेवन भी है। पान, गुटका, सिगरेट, अल्कोहल की तरफ युवाओं का रुझान बढ़ा है। वे पौष्टिक भोजन से बचने लगे हैं और उनका रुझान पिज्जा, बर्गर, नूडल्स जैसे रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट पदार्थों की तरफ बढ़ा है। ये खाद्य वस्तुएं दांतों से चिपक जाती हैं, जो सड़न की वजह बनती हैं। रही सही कसर व्यायाम से दूर रहने की मानसिकता ने पूरी कर दी। डेन्टिस्टों की मानें, तो इन तमाम आदतों से उम्र से पहले दांतों के गिरने की समस्या बढ़ी है। दांत की तकलीफ न बढ़े, इसके लिए तमाम तरहके उपाय किए जा सकते हैं। मगर यदि सड़न की वजह से दांतों के गिरने की नौबत आ रही है, तो एक ही उपाय है, आरसीटी।

आरसीटी यानी रूट कैनल ट्रीटमेंट। यह एक ऐसी विधि है, जिसके जरिये दांतों से संक्रमित हो चुके प्राकृतिक पल्प को निकालकर उसकी जगह कृत्रिम पल्प लगाया जाता है और दांतों में मौजूद नसों के संजाल की सफाई की जाती है। यह तकनीकी दांतों को नया जीवन देती है। हालांकि आरसीटी किए दांत में खून का बहाव नहीं होता और वह संवेदनहीन हो जाता है। बावजूद इसके वह बखूबी अपना काम करता है। यह करीब 30-40 वर्ष पुरानी तकनीक है, जो पिछले 15 वर्षों में खूब प्रचलित हुई। अब इसके लिए दांतों को निकालना नहीं पड़ता।

हाल के वर्षों तक आरसीटी को दुखदायी इलाज माना जाता था। फाइल और रीमर जैसे औजार स्टेनलेस स्टील के होते थे और मैनुअल तरीके से दांतों के अंदर की नसों को साफ किया जाता था। तब इलाज के क्रम में चार-पांच बार डॉक्टरों के पास जाना जरूरी होता था, अगर कीटाणु का प्रभाव बढ़ जाता, तो मरीज को दर्द निवारक दवाइयां और एंटीबायोटिक दिए जाते थे। यह तकनीक करीब दो दशकों तक प्रचलन में रही। साल 2000 के दशक की शुरुआत में निकल टाइटेनियम रोटरी फाइल का उपयोग शुरू हुआ। यानी जिस सुई का इस्तेमाल पहले मैनुअल तरीके से होता था, उसके लिए अब मशीन आ गई। निकल टाइटेनियम अपेक्षाकृत लचीला होता है, इसलिए दांत की भीतरी जड़ों को साफ करना आसान हो गया। नतीजतन एक या दो विजिट में ही मरीजों का काम होने लगा। इसमें सफलता की दर भी 65-70 फीसदी से बढ़कर 90 फीसदी तक पहुंच गई।

नए सुधार भी हैं जारी

हाल के वर्षों में आरसीटी में सेल्फ एडजस्टमेंट फाइल का प्रयोग हो रहा है। असल में दांतों की नसें अंडाकार होती हैं और जो औजार इस्तेमाल किए जा रहे थे, वे गोल थे। कैपिंग भी दो-तीन वर्षों में विफल हो जाती थी। नई फाइल एक तरह की जाली है। इस कारण अब आरसीटी के लिए सिर्फ एक ही बार

एक तरह की जाली है। इस कारण अब आरसीटी के लिए सिर्फ एक ही बार डॉक्टर के पास जाने की जरूरत होती है। इसमें दर्द भी बहुत कम होता है। एंटीबायोटिक की जरूरत भी नहीं होती। दो-तीन दिन में सामान्य तरह से भोजन कर सकते हैं।

फिलिंग है जरूरी

रूट कैनल के बाद फिलिंग जरूरी है, ताकि कीटाणु फिर से हमला न बोल दें, आमतौर पर इसके लिए रबड़ की तरह का मैटीरिअल, जिसे गट्टा-परचा कहा जाता, इस्तेमाल होता है। यह थर्मोप्लास्टिक मैटीरियल होता है। पहले यह नियत आकार में आया करता था और नसों को साफ करने के बाद इसे फिट करने के लिए जगह बनानी होती थी। मगर अब मॉल्टन रबड़ की तरह का पदार्थ उपयोग में लिया जाने लगा है, जिसे जड़ से ऊपर तक भर दिया जाता है। यह उस जगह को हमेशा के लिए सील कर देता है। अब अगर आरसीटी के बाद दांतों पर उम्दा किस्म के क्राउन लगा दिए जाएं, तो दांत की आयु दस-पंद्रह वर्षों तक बढ़ जाती है।

स्वस्थ रहते हैं सीधे दांत

इलाज अपेक्षाकृत आसान होने के बावजूद बेहतर यही है कि दांतों की सड़न को शुरुआती दौर में ही रोक लिया जाए। इसके लिए कुछ आदतें हमें जीवन में उतारनी होगी। सबसे पहले सही ब्रशिंग तकनीक को अपनाना चाहिए। दो दांतों के बीच की जगह को अच्छे से साफ करने के साथ ही वक्त-बेवक्त

माउथ वॉश का इस्तेमाल जरूरी है। इसी तरह, रात में खाना खाने के बाद ब्रश करना चाहिए। बेहतर है कि हर भोजन के बाद ढंग से कुल्ला अवश्य करें। इससे दांतों पर चिपके भोजन साफ हो जाते हैं। जरूरत दांतों की कतार सीधी रखने की भी है। चूंकि जीभ एक तरह का कपड़ा है, जो दांतों को साफ रखता है, इसलिए यदि दांत सीधे होंगे, तो गाल व जीभ स्वाभाविक तौर पर उसकी सफाई करेंगे। अगर 13-14 वर्ष तक दांतों की कतार सीधी नहीं हुई हो, तो डेन्टिस्ट से सलाह लें। पान-गुटका, धूम्रपान आदि से बचना चाहिए।

With Best Compliments, Complition fifteen year's of the 'Pratyush'

HP GAS

SHYAM GAS CENTRE

जीहाँ!

HP GAS

your friendly gas

Sabji Market, Near Pipli, Ganeshpura, Hathipole, Udaipur-313001
Telephone: 0294-2413979, 2421482
Mobile: 9414167979, 9950783379, 9829409860

'प्रत्यूष' के 16वें वर्ष में प्रवेश पर हार्दिक शुभकामनाएं

BDGH since 1980 Together we make a difference

बिलासी देवी गट्टानी हॉस्पीटल

36 Years of Quality care
Gattani Hospital

शास्त्री सर्कल, उदयपुर (राज.) मो. 9414162750, 9414169339, 9214460062

Web site - www.pileshospitaludaipur.com, www.childvaccinationudaipur.com

पाइल्स (क्रायो द्वारा) फिशर,फिस्टूला चिकित्सा का एक मात्र विश्वसनीय केन्द्र

पाइल्स
(क्रायो द्वारा)
एक दिन में छुट्टी
20,000 से अधिक सफल ऑपरेशन

बच्चेदानी ऑपरेशन
(बिना टाँके / दूरबीन द्वारा)
रियायती दरों पर
सामान्य प्रसव एवं सिजेरियन

डॉ. मुकेश देवपुरा
एम.बी.बी.एस., डी.सी.एच.
मो. 94141-69339

नि:संतानता एवं स्त्री रोग चिकित्सा

शिशु चिकित्सा एवं टीकाकरण केन्द्र

पेट एवं गर्भाशय केंसर का आधुनिकतम इलाज

डॉ. कल्पना देवपुरा
एम.बी.बी.एस., एम एस.
मो. 94141-62750

सभी प्रकार के दूरबीन ऑपरेशन (हर्निया, पथरी)

ताम्र बर्तन में संग्रहित पानी के फायदे

तांबे के बर्तन में रखा पानी सेहत के लिए वरदान है। इस पानी के पीने से शरीर से विषैले तत्व बाहर निकल जाते हैं। शरीर के तीनों दोष वात, कफ और पित्त भी संतुलित रहते हैं। तांबे के बर्तन में 8 घंटे तक रखा पानी ही लाभकारी है।

-डॉ. शोभालाल औदिच्य

जब पानी तांबे के बर्तन में संग्रहित किया जाता है तब तांबा धीरे से पानी में मिलकर उसे सकारात्मक गुण प्रदान करता है। इस पानी के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि यह कभी भी बासी नहीं होता और इसे लंबी अवधि तक संग्रहित रखा जा सकता है।

बैक्टीरिया का नाश: तांबे की प्रकृति में ओलीगोडिनेमिक के रूप में बैक्टीरिया नाशक तत्व है और इसमें रखे पानी के सेवन से बैक्टीरिया आसानी से नष्ट हो जाते हैं। तांबा आम जलजनित रोग जैसे डायरिया, दस्त और पीलिया को रोकने में मददगार है।

थायरॉयड ग्रंथि पर नियंत्रण : थायरेक्सीन हार्मोन के असंतुलन के कारण ही थायराइड की बीमारी होती है। थायराइड के प्रमुख लक्षणों में तेजी से वजन घटना या बढ़ना, अधिक थकान महसूस होना आदि हैं। कॉपर थायरॉयड ग्रंथि के बेहतर कार्य करने की जरूरत का पता लगाने वाले सबसे महत्वपूर्ण मिनरलों में से एक है। थायराइड विशेषज्ञों के अनुसार, तांबे के बर्तन में रखे पानी को पीने से शरीर में थायरेक्सीन हार्मोन नियंत्रित होकर इस ग्रंथि की कार्यप्रणाली को भी नियंत्रित करता है।

मस्तिष्क में उत्तेजना : तांबे में मस्तिष्क को उत्तेजित करने वाले और विरोधी ऐंठन गुण होते हैं। इन गुणों की मौजूदगी मस्तिष्क के काम को तेजी और अधिक कुशलता के साथ करने में मदद करते हैं।

गठिया में फायदेमंद : गठिया या जोड़ों में दर्द की समस्या आजकल कम उम्र के लोगों में भी होने लगी है। यदि आप भी इस समस्या से परेशान हैं, तो रोज तांबे के पात्र में रखा पानी पीएं। तांबे में एंटी-इफ्लेमेटरी कारण बने गठिया और रुमेटी गठिया के मामले में विशेष रूप से फायदेमंद हैं।

त्वचा को बनाए स्वस्थ : त्वचा पर सबसे अधिक प्रभाव आपकी दिनचर्या और खानपान का पड़ता है। इसीलिए अगर आप अपनी त्वचा को सुंदर बनाना चाहते हैं तो रात भर तांबे के बर्तन में रखें पानी को सुबह पी लें। ऐसा इसलिए क्योंकि तांबा हमारे शरीर के मेलेनिन के उत्पादन का मुख्य घटक है। इसके अलावा तांबा नई कोशिकाओं के उत्पादन में मदद करता है जो त्वचा की सबसे ऊपरी परत की भरपाई करने में मदद करती है। नियमित रूप से इस नुस्खे को अपनाने से त्वचा स्वस्थ और चमकदार लगने लगेगी।

पाचन क्रिया दुरुस्त : पेट संबंधी समस्याएं जैसे ऐसिडिटी, कब्ज, गैस आदि के लिए तांबे के बर्तन का पानी अमृत के समान है। आयुर्वेद के अनुसार अगर आप शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालना चाहते हैं तो तांबे के बर्तन में कम से कम 8 घंटे रखा हुआ पानी पिएं। इससे पेट की सूजन में राहत मिलेगी और पाचन की समस्याएं भी दूर होंगी।

आयु वृद्धि : अगर आप त्वचा पर फाइन लाइन को लेकर चिंतित हैं तो तांबा आपके लिए प्राकृतिक उपाय है। मजबूत एंटी-ऑक्सीडेंट और सेल गठन के गुणों से समृद्ध होने के कारण कॉपर मुक्त कणों से लड़ता है, जो झुर्रियां आने के मुख्य कारणों में से एक है और नए और स्वस्थ त्वचा कोशिकाओं के उत्पादन में मदद करता है।

सलाह

सर्दी से करें यूं बचाव

सर्दी के मौसम को वैसे तो हेल्थी सीजन कहा जाता है, लेकिन जरा सी लापरवाही इस मौसम का मजा किरकिरा कर सकती है। जैसे ही सर्दियों का मौसम आता है वैसे ही जुकाम-बुखार का भी मौसम शुरू हो जाता है और आप डॉक्टरों के पास चक्कर लगाने लगते हैं। लेकिन अगर थोड़ी सी सावधानी बरती जाए और कुछ पुराने घरेलू नुस्खों का इस्तेमाल किया जाए तो इस परेशानी से बचा जा सकता है।

रेणु शर्मा

हल्दी सर्वोत्तम एंटीबायोटिक है। इसके सेवन से रक्त का प्रवाह सुचारू होता है, सर्दी के मौसम में होने वाले नजला-जुकाम से राहत मिलती है। कफ को दूर करती है। वायु प्रदूषण के चलते आजकल जिस तरह लोगों को सांस संबंधी तकलीफ हो रही है, कच्ची हल्दी उसमें बचाव करेगी। कच्ची हल्दी इन दिनों बाजार में सहज उपलब्ध है।

मीठी चटनी

हल्दी की मीठी चटनी बनाने के लिए एक पाव कच्ची हल्दी की गांठें लें। उनका छिलका उतार लें और धोकर कद्दूकस कर लें। अब एक कड़ाही में चार चम्मच देसी घी गरम करें। उसमें एक छोटा चम्मच धनिया के साबुत दाने, एक छोटा चम्मच अजवाइन, बीज निकाली हुई तीन-चार लाल मिर्चें डाल कर तड़का लें। तड़का तैयार हो जाए, तो उसमें कद्दूकस की हुई कच्ची हल्दी डाल कर चलाएं। ऊपर से करीब सौ ग्राम गुड़ के टुकड़े डालें। चीनी का इस्तेमाल न करें। एक छोटा चम्मच काला नमक और एक बड़ा चम्मच सोंठ का पाउडर भी मिला लें। इन सबको गाढ़ा हो जाने तक चलाते हुए पकाएं। इस चटनी को एक कांच के जार में भर कर रख लें। भोजन करते समय एक चम्मच रोज चटनी की तरह खाएं। अगर रोज न खा सकें, तो जब मन हो तो खाएं। सर्दी के आने वाले दो महीनों में अगर इसका लगातार सेवन करेंगे, तो न सिर्फ रक्त शुद्ध होगा, बल्कि शरीर को गरमी मिलेगी और जोड़ों के दर्द और सांस फूलने जैसी समस्याओं से भी मुक्ति मिलेगी। कच्ची हल्दी की चटनी ऐसी रेसिपी है, जिसे सर्दी में बचाव की औषध भी कह सकते हैं।

शहद-नीबू का सेवन

सर्दी-जुकाम में माता-पिता पारंपरिक तरीके से घरेलू नुस्खों से चटपट उपचार कर देते थे। वे शहद और नीबू तथा अन्य रसों का प्रयोग करते हैं। आप भी बच्चों को शहद और नीबू का प्रयोग कर सर्दी-जुकाम से दूर रख सकते हैं। जुकाम में नीबू और शहद का इस्तेमाल पुराना फैशन जरूर है लेकिन लोगों को इसे अपनाना चाहिए। क्योंकि शहद और नीबू आमाशय में बनने वाले अम्ल को नियंत्रित करता है और भोजन को तोड़कर पचने लायक बनाता है। यह तो सब जानते हैं कि बीमारी पैदा होने का मूल ही उदर है, पेट में गड़बड़ अर्थात् पाचन तंत्र में गड़बड़ी हुई नहीं कि रोग तैयार। अतएव सर्दी में कोशिश यही होनी चाहिए कि पाचन तंत्र बिगड़ने न पाए। यही मौसम है, जब आप सन्तुलित और पोषक आहार लेकर अपने स्वास्थ्य को बेहतर मुकाम दे सकते हैं।

'प्रत्यूष' ने निश्चय ही 15 वर्ष की प्रकाशन यात्रा पूर्ण कर रचनात्मक पत्रकारिता को आगे बढ़ाया है। राजस्थान में लम्बी दीर्घावधि से निकलने वाली यह ऐसी पत्रिका है, जिसे हर वर्ग और आयु वालों के लिए उपयोगी कहा जा सकता है।

बधाई ..... बधाई।

- कैलाश 'मानव'

संस्थापक-चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

वसुन्धरा सरकार के 4 साल

4437 सरकारी विद्यालय बने आदर्श विद्यालय — फर्निचर, कम्प्यूटर लैब, खेल के मैदान जैसी सुविधाएं

सातवां वेतन आयोग लागू
8.5 लाख कर्मचारियों एवं 3.8 लाख पेंशनर्स को प्रतिवर्ष रु 10,400 करोड़ का लाभ

1.5 लाख कर्मचारी पदोन्नत

48000 ई-मित्र केन्द्रों पर 350 सरकारी सेवाएं

सभी ग्राम पंचायतों पर ई-मित्र प्लस ए.टी.एम. से मिलेंगी 350 सरकारी सेवाएं

1 करोड़ से ज़्यादा परिवारों को बायोमैट्रिक पहचान से राशन वितरण

दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना में 22 लाख घरेलू बिजली कनेक्शन

- ग्रामीण क्षेत्रों में 22-24 घंटे बिजली
- बिजली की बेहतर उपलब्धता पर काम, छीजत 8 प्रतिशत घटाई

1.6 लाख कृषि बिजली कनेक्शन

मुख्यमंत्री राजश्री योजना में बेटियों को विभिन्न चरणों में रु 50 हज़ार की सहायता

सुराज के 4 साल

सोच नई, काम कई.

श्रीमती वसुन्धरा राजे
माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान

2 लाख से ज़्यादा युवाओं को कौशल प्रशिक्षण, रोज़गार व स्व-रोज़गार के 13 लाख नये अवसर

47000 कि.मी. सड़कों का निर्माण, 5600 से ज़्यादा गांवों-ढाणियों को जोड़ा

3500 गांवों में सीमेंट-कंक्रीट सड़कों का निर्माण

पेंशन, नरेगा, जननी सुरक्षा जैसी 31 सरकारी योजनाओं के 11000 करोड़ रुपये भामाशाह से सीधा लोगों के बैंक खातों में

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना में 4.5 करोड़ लोगों को कैशलेस इलाज के लिए बीमा कवर

किसानों को विभिन्न योजनाओं में रु 33,000 करोड़ से अधिक का अनुदान

रिसर्जेन्ट राजस्थान समिट: निवेश प्रस्तावों (MoU) की Conversion Rate – 60% – देश में सबसे अधिक

191 शहरों में 500 अन्नपूर्णा स्मार्ट रसोई वैन से 5 रुपये में नाश्ता व 8 रुपये में खाना

मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान में 7742 गांवों में 2.2 लाख से ज़्यादा पानी के ढांचे बनाये

14880 नये गांवों-ढाणियों को पीने का पानी

9890 गांवों में जन कल्याण शिविर आयोजित, 48 लाख लोगों को लाभ

राजस्व लोक अदालतों में बरसों से अटके 95 लाख से अधिक मामले निपटाए

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
राजस्थान सरकार

नहीं रहे बॉलीवुड के प्रिंस चार्मिंग

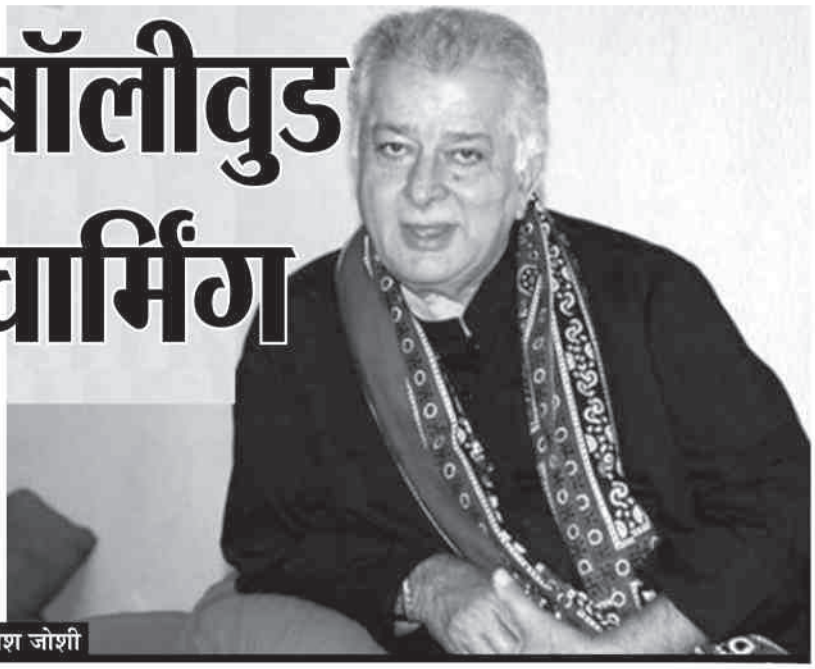

सत्तर और अस्सी के दशक में 'रोमांस ऑफ स्क्रीन आयकन' के तौर पर फेमस थे शशि कपूर ..... । उन्हें बॉलीवुड का प्रिंस चार्मिंग भी कहा जाता था.... । वे अपनी मोहक मुस्कान के लिए भी जाने जाते थे..... ।

-प्रकाश जोशी

पहले पर्दे पर अपनी रूमानी अदाओं से लोगों को दीवाना बना देने वाले दिग्गज अभिनेता शशि कपूर का 4 दिसम्बर को निधन हो गया। वे 79 वर्ष के थे। मुंबई में अंतिम संस्कार के वक्त फिल्म जगत की जानी-मानी हस्तियां, उद्योगपति, राजनेता, समाजसेवी व प्रशंसक मौजूद थे। शशिकपूर, पृथ्वीराज कपूर के सबसे छोटे बेटे और राजकपूर व शम्मी कपूर के भाई थे। जेनिफर उनकी जिंदगी की पहली महिला थीं, पहली प्रेमिका जो पत्नी बन गई। उनकी तीन संतानें हैं, बेटे कुणाल एवं करण, बेटी संजना कपूर। पृथ्वीराज कपूर के घर 18 मार्च, 1938 को जन्मे शशि कपूर ने चार वर्ष की आयु से अपने पिता द्वारा निर्मित-निर्देशित नाटकों में काम करना शुरू किया। 'जब-जब फूल खिले', 'आमने-सामने', 'हसीना मान जाएगी', 'शर्मिली', 'प्यार किए जा', 'वक़्त', 'प्यार का मौसम', 'आ गले लग जा', 'रोटी, कपड़ा और मकान' तथा 'चोर मचाए शोर' से उनके कॅरिअर में नया मोड़ आया। अमिताभ बच्चन और शशि कपूर की जोड़ी ने मल्टीस्टारर फिल्मों के तहत काफी नाम और दाम कमाया। दरअसल अमिताभ बच्चन को फिल्मी दुनिया की एन्ट्री कराने वाले शशिकपूर ही थे, जिन्होंने उन्हें तराश कर हीरा बना दिया।

सदाबहार और खुशगवार बने रहे जीवन भर

शशि की आंखों में एक चमक थी। वैसी ही चमक, जो झरने के शफ्फाक पानी पर सूरज की किरणों से पैदा होती है। यह चमक उनके अभिनय में भी दिखाई देती है। फिल्म 'त्रिशूल' में जब वह कहते हैं 'मोहब्बत बड़े काम की चीज है' तो वह महज़ अभिनय करते नहीं दिखते, बल्कि उन शब्दों को उनके सम्पूर्ण अर्थों के साथ जीते दिखाई पड़ते हैं। एक अन्य फिल्म में 'आज मेरे पास गाड़ी है, बंगला है, बैंक बैलेंस हैं... तुम्हारे पास क्या है ?' के जवाब में शशि कपूर कहते हैं, 'मेरे पास मां है', तो पारिवारिक वात्सल्य, ममत्व, स्नेह का एक निर्मल प्रपात-सा बह निकलता है। 'जब-जब फूल खिले' फिल्म में जब शशि अभिनेत्री नंदा के साथ कश्ती चलाते नज़र आते हैं। फिल्म की मासूम कहानी और कर्णप्रिय संगीत 'परदेशियों से ना अँखियां मिलाना.....' आज भी लोग पसंद करते हैं।

शशिकपूर शर्मीले व रोमांटिक सदाबहार अभिनेता के रूप में लाखों दर्शकों को याद आते रहेंगे। 116 हिन्दी फिल्मों में अभिनय करने वाले और 'जुनून', 'कलयुग', '36 चोरंगी लेन', 'उत्सव' जैसी बेहतरीन फिल्मों का निर्माण करने वाले शशिकपूर का अलविदा होना फिल्म जगत की अपूरणीय क्षति है। उन्हें पद्मभूषण (2011), दादासाहेब फाल्के अवार्ड (2015), न्यू देहली टाइम्स के लिए बेस्ट एक्टर का नेशनल अवार्ड (1986), फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेन्ट पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का बोम्बे जर्नलिस्ट एसोसिएशन अवार्ड, स्पेशल जूरी का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला।

आप सबकी मेहनत से 'प्रत्यूष' की

पहचान बन गई है तथा ये अतिवाद से मुक्त है। मेरी बधाई। 15 वर्ष पूरे करना, वर्तमान में एक मध्यमवर्गीय पत्रिका के लिये, बुलंद हौसले की बात है।

With Best Compliments, Complition fifteen year's of the 'Pratyush'

प्रत्यूष
सफलता के 15 वर्ष

Darcl
Logistics

Darcl Logistic Limited

(Formerly known as Delhi Assam Roadways Corporation Limited)

Branch Office :

2nd Floor, 26-NB Complex, Ahmedabad Road, Pratap Nagar Chauraha, Udaipur (Raj.)
Tel. : +91-294-3296769, 3297688, Fax : +91-294-2494142
Email : surender.sharma@delhiassam.com | www.darcl.com

नहीं रहीं मधुर कंठी मांड गायिका मांगीबाई आर्य

उदयपुर। राजस्थान की सुप्रसिद्ध मांड गायिका मांगी बाई आर्य(धर्मपत्नी स्व. रामनारायण जी आर्य) का 23 नवम्बर 2017 को हृदयाघात से निधन हो गया। वे 88 वर्ष की थीं। प्रतापगढ़ के कमलाराम आर्य एवं मोहनबाई के यहां जन्मी मांगीबाई को गायकी विरासत में मिली। उनके पिता शास्त्री संगीत क मशहूर कलाकार थे। लोक मांड गायकी को देश-विदेश तक पहुंचाने में मांगीबाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 'केसरिया बालम आवो नी पधारो म्हारे देश' के सुमधुर कंठ से बरबस ही सभी को आकर्षित करने वाली आर्य को आकाशवाणी महानिदेशालय 'ए' ग्रेड कलाकार का दर्जा प्राप्त था। मांगीबाई को 1982 में महाराणा कुंभा संगीत परिषद पुरस्कार, 1984 में मुम्बई के सिद्धार्थ मेमोरियल ट्रस्ट, 1987 में बीएन नोबल्स महाविद्यालय प्रबंध समिति 1994 में तत्कालीन मुख्यमंत्री भैरासिंह शेखावत

के हाथों राज्य स्तर पर 2003 में मरूधरा संस्था कोलकाता, 2006 में राजस्थानी भाषा साहित्य अकादमी बीकानेर, 2007 में राज्यपाल के हाथों राज्य स्तरीय पुरस्कार, 2008 में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी जोधपुर, 2008 में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील द्वारा केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार सहित कई सम्मान मिले। कई सीरियल व एलबम में भी आर्य की आवाज बुलंद हुई। 20 वर्ष तक उन्होंने सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर को लोकगायन शिक्षित के बतौर सेवाएं दी। वे अपने पीछे पुत्र गिरिधारी, मदन, माणिक तथा ओम आर्य व पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनके निधन पर मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, गृहमंत्री गुलाब चन्द कटारिया, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास सहित विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं व संगठनों ने गहरा शोक प्रकट किया है।

प्रत्यूष ने पन्द्रह बरस तक सीमित संसाधनों के बावजूद पत्रकारिता के सर्वमान्य सिद्धांतों और नियत आदर्शों पर चल कर प्रिन्ट मीडिया में अपना विशेष स्थान बनाया। प्रकाशन यात्रा की कठिन डगर पर चलते हुए भी प्रत्यूष ने सपनीली भोर को दृष्टि से कभी ओझल न होने दिया। प्रकाशक श्री पंकज शर्मा और प्रधान सम्पादक श्री विष्णु शर्मा हितैषी के मजबूत इरादों और कार्यों का मैं तहेदिल से साधुवाद संप्रेषित करता हूँ, जिन्होंने अल्प समय में ही इस पत्रिका को हिन्दी मीडिया की शिखर यात्रा का यात्री बनाया।

गुरप्रीत सोनी, उद्योगपति

With Best Compliments, Complition fifteen year's of the Pratyush'

ad vision

(Travel Division)

Sanjay Kothari
94141-56521

Authorised Rail Travellers Service Agency.

International & Domestic

❖ Ticketing (Air, Rail, Bus) & Complete Travel Assistance

387-A, First Floor, I-1 Road, Bhupalpura, Udaipur
Ph. : 0294-2427066, 2418518, E-mail : railagt@gmail.com

With Best Compliments, Complition fifteen year's of the 'Pratyush'

प्रत्यूष सफलता के 15 वर्ष

Dealer

इंडियनऑयल

IndianOil

Corporation Ltd.

Distributors :

ador WELDING

ADOR WELDING LTD.

J.R. Bhandari & Co.

Deals in :

All type of welding rods,
welding accessories,
Lubricants, Grease,
Furance oil & Cotton Waste

Outside Hathipole, Chetak Marg, Udaipur (Raj.)
Ph. : 0294-2524592, 2529617 (O) Fax : 0294-2524592

वर्षफल 2018

इस वर्ष आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

वर्षफल 2018

गोचर एवं दिन दशा से यह वर्ष अभीष्टप्रद। मई एवं जून में अति आत्मविश्वासी बने रहेंगे। जुलाई-अगस्त न्यूनता का अनुभव कराएंगे। इस वर्ष यात्राओं के योग अधिक बनेंगे। मित्र, सम्बन्धी एवं सहयोगियों से अपेक्षित सहयोग में कमी। पुरुषार्थ के अनुरूप परिणामों में कमी रहेगी। आर्थिक लाभ, जमा राशि एवं स्थिर सम्पत्ति में वृद्धि के योग। वर्ष में स्थान परिवर्तन के योग। कार्यक्षेत्र, व्यवसाय, नौकरी में बाधाओं का अभाव रहेगा, चिन्ता बनी रहेगी। वार्षिक गोचर गणना अनुरूप, सुयोग 40 प्रतिशत तथा कुयोग 60 प्रतिशत।

वृषभ

वर्षफल 2018

इस वर्ष आपके सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक, व्यवसायिक कर्म मध्यम। अप्रैल, मई, सितम्बर, अक्टूबर माह विशेष फलप्रद बनेंगे। अगस्त माह में विशेष सावधानी। अपनी शक्ति से परे जाकर आर्थिक एवं नवीन योजना नहीं बनाएं। जो है उसमें ही सन्तुष्ट वाला सूत्र आत्मसात करें। प्रारम्भिक माह जनवरी-फरवरी में साझेदारी से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। भाग्य भरोसे न रहें, पुरुषार्थ से ही लाभदायक स्थिति। हर किसी भी विश्वास करना नुकसानदायी। इस वर्ष आपके लिए सुयोग 30 प्रतिशत एवं कुयोग 70 प्रतिशत।

मिथुन

वर्षफल 2018

मार्च-अप्रैल अगस्त में सावधान रहें। जून, सितम्बर में अनिष्ट की संभावना। दिन-दशा, ग्रह-गोचर के अनुसार वर्ष अनुकूल। नया कार्य प्रभार बढ़ेगा। मानसिक मनोविकार एवं गुप्त चिन्ताएं बढ़ेगी। लेन-देन आर्थिक व्यवहार में उदारवृत्ति नहीं रखें। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा बनी रहेगी, सम्मानित हो सकते हैं। सन्तान पक्ष की चिन्ताएं दूर। व्यवसाय गति पकड़ेगा। पैतृक सम्पत्ति के मामले पेचीदा होंगे, धैर्य बनाए रखें। जीवनसाथी के स्वास्थ्य से चिन्ता। धर्म कार्यों में रुचि रहेगी। वर्ष में कुयोग 60 एवं सुयोग 40 प्रतिशत।

कर्क

वर्षफल 2018

यह वर्ष सुयोगप्रद नहीं है। वर्षपर्यंत किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति। कार्यकुशलता, क्रियाशक्ति, मनोत्साह, बौद्धिक गुणधर्म, कला योग्यता का पूर्ण लाभ। विवादित एवं अवरोधित कार्य समस्या का समाधान बनेगा। नवीन योजना, नवसम्पर्क, नवनिर्माण आदि रचनात्मक कार्यों को गति मिलेगी। मांगलिक कार्यों में वृद्धि, स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव। संतान, स्त्री पक्ष से चिन्ता एवं मित्र-बन्धुओं से सहयोग अपेक्षित रहेगा। आय पक्ष श्रेष्ठ रहने के साथ ही अवरोधित रकम का आगमन एवं बचत में वृद्धि होगी। इस वर्ष सुयोग 70 प्रतिशत एवं कुयोग 30 प्रतिशत।

सिंह

वर्षफल 2018

यह वर्ष शुभ फलदायी प्रतीत होता है। कला योग्यता, पात्रता, गुण एवं कर्म के अनुसार सफलता के अवसर प्राप्त करेंगे। मनोत्साह बना रहेगा, राज्यपक्ष-भाग्य-पुण्यप्रताप-कर्मयोग शुभ परिणाम देंगे। नवसम्पर्क, नवकार्य योजना एवं वरिष्ठजनों का परामर्श, आपकी क्रियाशक्ति में उत्तरोत्तर उन्नति। पारिवारिक दृष्टि से स्त्री, संतान पक्ष चिन्तायुक्त। अधिकारी संतुष्ट रहेंगे। फरवरी, मार्च, अगस्त, सितम्बर माह श्रेयकर। जनवरी, जुलाई में सावधानी जरूरी। वर्ष में सुयोग 70 प्रतिशत एवं कुयोग 30 प्रतिशत।

कन्या

वर्षफल 2018

विगत वर्ष की अपेक्षा यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु प्रखर विकास-प्रगति एवं आत्मसंतोष कारक नहीं। कला, योग्यता, पात्रता, गुण, धर्म एवं क्रियाशक्ति अनुसार यथोचित लाभ नहीं। उच्च अभिलाषा, नवीन कार्य श्रेष्ठजनों के परामर्श से ही सम्पादित करें। भाग्य-राज्य-कर्म-पुण्यप्रताप-यश-सम्पदा सामान्य रहे। मार्च, अप्रैल, जून, सितम्बर श्रेष्ठ एवं जनवरी, फरवरी, अगस्त माह नकारात्मक परिणाम देंगे। स्थाई सम्पत्ति में विस्तार, पैतृक सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद आपके पक्ष में बनेंगे। आकस्मिक धन लाभ के योग। वर्ष में सुयोग 60 प्रतिशत एवं कुयोग 40 प्रतिशत।

तुला

वर्षफल 2018

इस वर्ष गोचर गतिपथ अनुकूल प्रतीत हो रहा है। नीति-रीति, व्यवहार कुशलता, चिन्तन-मनन-विवेक अपने पक्ष में रहेंगे। स्वयं का पुरुषार्थ, पराक्रम, कर्मभाव, राज्यपक्ष का गतिक्रम उत्तम। कार्य, व्यवसाय, उद्योग धंधे में मनोत्साह बना रहेगा। कार्य क्षेत्र में बाधाएं एवं स्थान परिवर्तन के योग। पराक्रम से सम्मान मिलेगा। प्रतियोगी परिक्षाओं में सफलता की प्रबल सम्भावनाएं, जीवनशैली में परिवर्तन सम्भव। कार्य क्षेत्र में अपने प्रतियोगियों से आगे निकलेंगे, स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। सुयोग 60 प्रतिशत एवं कुयोग 40 प्रतिशत।

वृश्चिक

वर्षफल 2018

इस वर्ष गोचर ग्रह संरचना आपके अनुकूल प्रतीत नहीं है। नीति-रीति, विवेक, व्यवहार, गुणधर्म पक्ष पर विशेष ध्यान। किसी पर अनायास विश्वास न करें अन्यथा आर्थिक विषमता एवं ऋण प्रमाद उलझन। चल रही व्यवस्थाओं पर ही ध्यान देकर आगे बढ़ाएं। कुछ अलग करना कष्टकारक। जनवरी, फरवरी, मई विशेष फलदायी एवं जुलाई, अगस्त कष्ट साध्य। मित्र, बन्धु, सहयोगी, परिवारजनों से असंतोष एवं वैचारिक मतभेदों का सामना करना पड़ेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से मध्यम, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा हानि की सम्भावनाएं। लोकसेवक सावधान रहें। सुयोग 40 प्रतिशत एवं कुयोग 60 प्रतिशत।

धनु

वर्षफल 2018

गोचरप्रद सुखद नहीं जान पड़ता है। नित्य जीवन में अभीष्टप्रद नहीं। अतः नीति-रीति, व्यवहार-विवेक को ध्यान में रखकर ही व्यवहार करें। लोभ-प्रलोभ, अनैतिक कार्यों से दूर रहें। मेहनत के अनुरूप फल प्राप्ति नहीं। चल रहे कार्य में अवरुद्धता आएगी। राज्य-कर्म-पुण्यप्रताप, वर्चस्व अधिकार में कमी। अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार ही कार्य करें। परिवार पक्ष, बन्धु वर्ग, अधिकारी, सहयोगियों से प्रतिकूल व्यवहार रहेगा। दुर्घटना से बचें। वर्ष में सुयोग 30 प्रतिशत एवं कुयोग 70 प्रतिशत।

मकर

वर्षफल 2018

गृह दशाओं एवं गोचर के अनुसार यह वर्ष सामान्य प्रतीत होता है, विगत वर्ष के अनुपात में कोई विशेष परिवर्तन नहीं, जो चल रहा है उसे ही गति दें। कुछ नया करना प्रतिकूल प्रभाव दे सकता है। शारीरिक स्वास्थ्य की चिन्ता बनी रहेगी। निर्णयों की कमी का अनुभव। सामाजिक जीवन में भी उथल-पुथल, आकस्मिक दुर्घटना, व्यय प्रभावित करेंगे। साझेदारी एवं सहयोगियों से दूरी बनाए रखें। कर्म क्षेत्र, व्यापार-धंधे, नौकरी में कठिनाइयां। दाम्पत्य जीवन में टकराव की संभावना। वर्ष में सुयोग 30 प्रतिशत एवं कुयोग 70।

कुम्भ

वर्षफल 2018

इस वर्ष में उत्तम फल प्राप्त होने की संभावनाएं। आपकी कला योग्यता, पात्रता, गुणधर्म, कार्यकुशलता के अनुसार प्रतिफल प्राप्त होंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आकस्मिक घटना एवं व्यय प्रभार बढ़ेंगे। भाग्य-राज्य-कर्मभाव, पुण्यप्रताप एवं कार्य साधना हेतु प्रतिफल उत्तम रहेगा। आगे के लिए स्थिर कार्य करने की नवीन योजनाएं बन सकती। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। दाम्पत्य जीवन भी श्रेयकर। परिवार पक्ष, मित्र-बान्धव, अधिकारी से व्यवहार उत्तम कोटि का। अपनी उदार मनोवृत्ति पर अंकुश लगाएं। व्यवसाय, नौकरी, धन्धा, शासकीय एवं न्यायिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। आय पक्ष उत्तम, भाग्य का साथ रहेगा। वर्ष में सुयोग का 60 प्रतिशत एवं कुयोग का अनुपात 40 प्रतिशत।

मीन

वर्षफल 2018

दिनमान एवं गोचर सुख सम्पदा का कारक प्रतीत होता है। वर्ष में आपकी कार्यशक्ति, मनोत्साह तथा कार्यकुशलता का प्रारूप श्रेष्ठ बना है। भाग्य-राज्य-कर्मभाव-पुण्यप्रताप की अभिवृद्धि अनुकूल चरितार्थ रहेगी। अवरोधित एवं प्रतिबन्धित कार्यों में सफलता मिलेगी एवं नवनिर्माण के अवसर। भौतिक सुखों में वृद्धि। तात्कालिक असंतोष एवं विक्षिप्तता आपको असहज बना सकती है। नवयोजना में आपके सहयोगी अधिकारी, मित्रगण पूर्ण सहयोग करेंगे। शरीर सुख एवं स्वास्थ्य श्रेष्ठ। मनोत्साह बना रहेगा। आय पक्ष श्रेष्ठ, स्थायित्व के कार्यों में वृद्धि होगी। सुयोग 70 प्रतिशत एवं कुयोग 30 प्रतिशत।

With Best Compliments, Complition fifteen year's of the 'Pratyush'

प्रत्यूष
सफलता के 15 वर्ष

Shrinath Tourist Agency (Regd.)
Nandu Travels

3 Town Hall Road, Near Udaipur Filling Station, Udaipur (Raj)
Telephone No.:- 0294-2414841/42/43/45/47 Mobile :- 9214377777/8094002424

A PREMIUM A.C. & NON A.C. SLEEPER COACH (2X1) SERVICE FOR AGRA, DELHI, GANGANAGAR, HANUMANGARH, HARIDWAR, GANDHIDHAM, KUTCH BHUJ.

Please Visit
www.shrinathnandutravels.com
For Online Booking
Email
nandusnudp@gmail.com

A PREMIUM CLASS A.C. (HOT AND COOL) ATTACH TOILET SLEEPER COACH (2X1) SERVICE FOR
BIKANER

With Best Compliments

DHL EXPRESS INDIA PVT. LTD.

DHL

Office :- 53, Panchwati, Udaipur, Tel. : 0294-2414388
E-mail : savvyan2006@yahoo.co.in I savvyan@sancharnet.in

ग्रहों के संयोग पर निर्भर दाम्पत्य सुख-दुःख

प्राचीन काल में प्रत्येक कार्य संस्कार से आरंभ होता था। उस समय संस्कारों की संख्या भी 40 के करीब थी। समय के बदलाव के साथ कुछ संस्कार विलुप्त होते गए और कुछ संशोधित होकर आज भी जनजीवन में प्रचलित हैं। हिन्दू धर्म में षोडश संस्कारों का जन्म से लेकर मृत्यु तक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनमें से एक अतिमहत्त्वपूर्ण संस्कार है, पाणिग्रहण यानी विवाह संस्कार, जो सुखद और प्रेमपूर्ण परिवार का आधार है। लेकिन इसमें ग्रहों की भूमिका भी खास है।

प्रारब्ध कर्मानुसार व्यक्ति की जन्मपत्रिका में कुछ ऐसी ग्रह स्थितियां निर्मित हो जाती हैं, जिसके फलस्वरूप वह दापत्य सुख से वंचित हो जाता है। कलहपूर्ण दाम्पत्य अत्यंत कष्टप्रद और नारकीय जीवन के समान होता है। वैसे भी हर पुरुष सुलक्षणा व सुंदर पत्नी और स्त्री स्वस्थ चित्त व धनवान पति की कामना करते हैं। जीवन में किसी का साथ मनुष्य के लिए बेहद आवश्यक हो जाता है। कोई साथ हो या दाम्पत्य साथी अनुकूल हो तो हर तरह की परिस्थितियों का सामना किया जा सकता है। लेकिन यदि दाम्पत्य जीवन में दोनों में किसी एक व्यक्ति का व्यवहार यदि अनुकूल नहीं रहता है तो रिश्ते में कलह और परेशानियों का दौर लगा रहता है। पति-पत्नी के बीच मधुर सम्बन्ध ही एक सुसंस्कृत परिवार की आधारशिला है।

पं. हीरालाल नागदा

कुंडली से अनुमान

जन्मपत्री में दाम्पत्य-सुख का विचार सप्तम भाव और सप्तमेश से किया जाता है। इसके अतिरिक्त शुक्र भी दापत्य-सुख का प्रबल कारक होता है, क्योंकि शुक्र भोग-विलास और शैय्या सुख का प्रतिनिधि है। पुरुष की जन्मपत्रिका में शुक्र पत्नी और स्त्री की जन्मपत्रिका में गुरु पति का कारक माना गया है।

पाप ग्रह या नीच ग्रह

सूर्य, शनि, राहुल अलगाववादी स्वभाव वाले ग्रह हैं, वहीं मंगल और केतु मारक स्वभाव वाले ग्रह। ये सभी दाम्पत्य-सुख के लिए हानिकारक हैं। कुंडली में सप्तम या सातवां घर विवाह एवं दाम्पत्य जीवन से संबंध रखता है। यदि इस घर पर पाप ग्रह या नीच ग्रह की दृष्टि है तो वैवाहिक जीवन परेशानियों से रूबरू होता है।

वैदिक षोड़श संस्कार

1. गर्भाधान
2. पुंसवन
3. सीमन्तोन्नयन
4. जातकर्म
5. नामकरण
6. निष्क्रमण
7. अन्नप्राशन
8. चूड़ाकर्म
9. विद्यारंभ
10. कर्णवेध
11. यज्ञोपवीत
12. वेदारंभ
13. केशांत
14. समावर्तन
15. पाणिग्रहण(विवाह)
16. अन्त्येष्टि

सप्तम का सूर्य

यदि जातक की जन्मकुंडली में सप्तम भाव में सूर्य हो तो उसकी पत्नी शिक्षित, सुशील, सुंदर और कार्यों में दक्ष होती है, किन्तु ऐसी स्थिति में सप्तम भाव पर यदि किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो दाम्पत्य जीवन में कलह और सुखों का अभाव बन जाता है।

मंगली योग

यदि जन्म कुंडली में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, द्वादश स्थान स्थित मंगल होने से जातक को मंगली योग होता है। इस योग के होने से जातक के विवाह में विलम्ब, विवाहोपरांत पति-पत्नी में कलह, पति या पत्नी के स्वास्थ्य में शिथिलता, तलाक और क्रूर मंगली होने पर जीवन साथी की मृत्यु तक हो सकती है।

सातवां राहु अशुभ

राहु, सूर्य और शनि पृथकतावादी ग्रह हैं जो दाम्पत्य और कुटुम्ब भावों पर विपरीत प्रभाव डालकर वैवाहिक जीवन को नारकीय बना देते हैं। यदि अकेला राहु सातवें भाव में और अकेला शनि पांचवें भाव में बैठा हो तो तलाक हो जाता है। किन्तु ऐसी अवस्था में शनि को लग्नेश नहीं होना चाहिए।

शनि और राहु की दृष्टि

यदि लग्न में मंगल हो या सप्तमेश अशुभ भावों में स्थित हो और द्वितीयेश पर मारणात्मक ग्रहों का प्रभाव हो तो जीवनसाथी की मृत्यु के कारण दाम्पत्य सुख से वंचित होना पड़ता है। सप्तम भाव पर सूर्य, शनि और राहु की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री को दाम्पत्य सुख प्राप्त नहीं होता। किसी भी परिस्थिति में कुंडली का मिलान यथा समय से करवा समुचित उपाय अगर अपनाया जाए तो पीड़ा कम हो सकती है।

With Best Compliments, Complition fifteen year's of the Pratyush'

"श्री आदिनाथाय नमः"

Rishabh Jain

JAI-MEWAR

TOURIST AGENCY

शत् शत् नमन

An ISO 9001:2008 Certified Company

Contractor,
Trave Agents & Tour
Operator of A.C. Luxury Coaches
& Mini Coaches, Tempo Travellers
Tavera, Innova, Luxury Cars etc. &
Hotel Reservations for Group Tours,
Packages, L.T.C./L.F.C. All India Tours,
Marriages, Picnics etc. Passport
& Visa Assistance

(O) #0294-2485289, 3258999
+91 9414161999, (R) # 0294-2485669
jainmewar999@rediffmail.com
www.jaimewartravels.com

15, City Station Road, Nr. Hotel Pathik, Udaipur (Raj.) 313 001

जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल : अपनी तरह की पहली सफल कैंसर सर्जरी

उदयपुर। जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में पिछले महीने गर्भवती के तलवे में हुई कैंसर की गांठ के सफल ऑपरेशन को अंतरराष्ट्रीय जनरल में शामिल किया गया है। अंतरराष्ट्रीय कमेटी ने इसका विश्व के पहले केस के रूप में चयन किया है। ग्रुप डायरेक्टर मेडिकल सर्विसेज डॉ. दिनेश शर्मा, ग्रुप डायरेक्टर डॉ. आनन्द झा ने ईएनटी विभागाध्यक्ष डॉ. कनिष्क मेहता का इस उपलब्धि के लिए अभिनन्दन किया गया।

सीडलिंग द वर्ल्ड सकूल के नवीन भवन का शुभारम्भ

उदयपुर। सिडलिंग मॉडर्न पब्लिक स्कूल के नवीन भवन का शुभारम्भ 15 दिसम्बर को हुआ। समारोह की मुख्य अतिथि अति. आयुक्त(जनजाति) रूक्मणि आर. सिहाग, अति. पुलिस अधीक्षक(एटीएस) रानू शर्मा एवं प्रिंसिपल डायरेक्टर मोहिनी बक्षी थी। निदेशक हरदीप बक्षी एवं मोनिटा बक्षी ने बताया कि नए भवन में बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु बेहतर शैक्षणिक वातावरण एवं सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

डीपीएस को सर्वश्रेष्ठ मार्चपास्ट ट्रॉफी

उदयपुर। दिल्ली के वसंतकुंज स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल में 1 से 4 दिसम्बर 2017 तक आयोजित राष्ट्रीय इन्टर डीपीएस फुटबॉल प्रतिस्पर्द्धा सम्पन्न हुई। जिसमें स्कूल की उदयपुर ब्रांच को सर्वश्रेष्ठ मार्चपास्ट की ट्रॉफी खेल निदेशक डॉ. डी. के. सैनी एवं चेयरमैन वी. के. शुंग्लू ने प्रदान की। उदयपुर स्कूल के प्रभारी प्राचार्य संजय नरवारिया ने इस उपलब्धि पर टीम की सराहना की।

सिटी पैलेस के वार्षिक कैलेण्डर का लोकार्पण

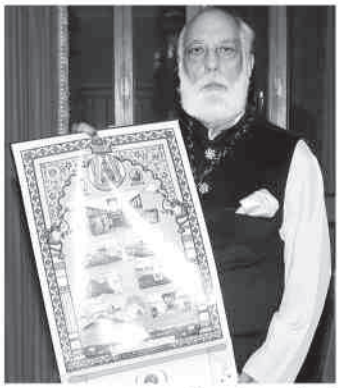

उदयपुर। एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स के चेयरमैन एवं महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी अरविंद सिंह मेवाड़ ने गत दिनों शंभूनिवास पैलेस में सिटी पैलेस के वार्षिक कैलेंडर का लोकार्पण किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने विक्रम संवत 2075 के श्री मेवाड़ विजय पंचाग का भी विमोचन किया। महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन्स ट्रस्ट के प्रबंधक गिरिराज सिंह ने बताया कि वर्ष 2018 के वार्षिक पैलेस कैलेंडर के प्रथम पृष्ठ पर श्री एकलिंगनाथजी, वरदायक महर्षि हारित जोशी, तोरण बावड़ी, सुंदर बावड़ी, ओझा बावड़ी, महासतियां कुण्ड, गंगोद्भव कुण्ड, नवलखा बावड़ी, राज राजेश्वर बावड़ी के रंगीन चित्र प्रकाशित किए गए हैं।

चतुर्थ ध्वजारोहण महोत्सव

उदयपुर। आदिनाथ मानव कल्याण समिति, कविता(बड़गांव) में पिछले दिनों नूतन जिनालय का चतुर्थ ध्वजारोहण महोत्सव मनाया गया। मुख्य अतिथि समाजसेवी किरणमल सावनसुखा थे। इस अवसर पर रणजीत सिंह मेहता, विष्णु शर्मा हितैषी, मनोहर तलेसरा, डॉ. ओमप्रकाश महात्मा, काननबाला लोढ़ा, विशिष्ट अतिथि थे। संस्थापक सुधर्म सागर महाराज ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए बताया कि 25 अप्रेल 2018 को महावीर केवल ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा।

वागीश को पीएचडी

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय ने वागीश शर्मा को 'श्रीनाथजी पुष्टिमार्गीय चित्रकला के बदलते आयाम' विषयक शोध कार्य पर पीएचडी उपाधि प्रदान की है। उन्होंने डॉ. गिरीशनाथ माथुर के निर्देशन में शोध कार्य पूर्ण किया।

शोध में उन्होंने 1750 तक चित्रकारों द्वारा श्रीनाथजी के 12वर्षीय बाल स्वरूप के चित्रांकन में परम्परागत एवं सर्वश्रेष्ठ रंगों के उपयोग एवं वर्तमान में बाजारीकरण की मांग के फलस्वरूप आए बदलावों के बारे में बताया है।

गांधी बने सह संयोजक

उदयपुर। भारतीय जनता पार्टी राजस्थान प्रदेश सहकारिता प्रकोष्ठ के संयोजक जगदीश सिंह ने प्रदेश अध्यक्ष के निर्देश पर उदयपुर के वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता गौतम प्रकाश गांधी को सहकारिता प्रकोष्ठ की प्रदेश कार्यकारिणी में सहसंयोजक पद पर मनोनीत किया है।

आरएमवी में श्रीमद्भागवत कथा शुरू

कार्यालय का उद्घाटन करते मेवाड़ महामण्डलेश्वर रासबिहारी शरण शास्त्री, महासम्मेलन अध्यक्ष अनिल नाहर, समाजसेवी किरणमल सावनसुखा, जयन्तीलाल पारख एवं अन्य।

उदयपुर। उदयपुर जिला वैश्य महासम्मेलन द्वारा उदयपुर के राजस्थान महिला विद्यालय परिसर में श्रीमद्भागवत कथा 25 दिसम्बर से भागवत् कथा प्रारम्भ हुई। भागवत कथा की व्यवस्थाओं का सुचारू रूप से संपादित करने के लिए 8 दिसंबर को विद्यालय परिसर के पास कार्यालय का उद्घाटन मेवाड़ महामंडलेश्वर रास बिहारी शरण शास्त्री, प्रमुख समाजसेवी किरणमल सावनसुखा व महासम्मेलन अध्यक्ष अनिल नाहर ने पदाधिकारियों की मौजूदगी में किया। इससे पूर्व निमंत्रण पत्र का विमोचन बोहरा गणेशजी मंदिर में किया गया। प्रथम वंदनीय गणेशजी का आशीर्वाद पाने के लिए महामंत्री के एम जिंदल, कोषाध्यक्ष प्रकाश चेचाणी, पंकज तोषनीवाल, पिंकी मांडावत सहित समाज के कई सदस्य उपस्थित थे।

अंडर-14 प्रीमियर लीग ट्रॉफी का अनावरण

प्रत्यूष सफलता के 15 वर्ष

उदयपुर। उदयपुर में 26 दिसम्बर से प्रारम्भ अंडर-14 अर्चना प्रीमियर लीग ट्रॉफी का अनावरण पूर्व क्रिकेटर गगन खोड़ा ने शिकारबाड़ी ग्राउंड पर किया। प्रीमियर लीग में दो ग्रुप में आठ टीमें भाग ले रही हैं। इस अवसर पर जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष मनोज भटनागर, उद्योगपति सौरभ पालीवाल एवं मुख्य कोच मनोज चौधरी भी उपस्थित थे।

रंगारंग भोमट महोत्सव

झाड़ोल। राजस्थान बाल कल्याण समिति की ओर से भोमट महोत्सव का रंगारंग आगाज 25 नवम्बर 2017 को हुआ। संस्था द्वारा संचालित स्कूल के बच्चों की गवरी, भवई और राजस्थानी लोक नृत्य प्रस्तुतियों ने सबके दिल जीत लिए। आजाद मैदान में 100 स्टॉल्स पर बच्चों ने खाने-पीने की वस्तुएं रखीं। संस्था की ओर से राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात के आदिवासी इलाकों में किए जा रहे विकास कार्य की प्रदर्शनी, मनोरंजन के लिए झूले आदि भी लगाए गए। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए यूरोपीय विदेश मामलात यूके की पूर्व अध्यक्ष बेरोनेस संदीप वर्मा ने कहा कि महोत्सव से प्रतिभाओं को पहचान तो मिलेगी ही, विभिन्न गतिविधियों से उनका सर्वांगीण विकास भी होगा। इससे पहले वर्मा, मुक्तिश्री ग्रुप के चेयरमैन अजयराज सुमार्गी, रविन ग्रुप के चेयरमैन विजय कारिया, हिन्दुजा फाउण्डेशन के वाइस प्रेसिडेन्ट ब्रिगेडियर एच. चुकरबुति, हिन्दुस्तान स्काउट गाइड के स्टेट सेकेट्री नरेन्द्र औदिच्य, निर्मल थापा एवं सहायक निदेशक कॉलेज शिक्षा विभाग की डॉ. वीणा आदि ने समिति के संस्थापक पं. जीवतराम शर्मा की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। समिति के प्रबंधक गिरिजा शंकर शर्मा ने संस्था प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

सम्मान

श्रीसीमेंट व जे. के. सीमेंट को सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता अवार्ड

अवार्ड प्राप्त करते श्रीसीमेन्ट के पी एण्ड ए हैड नीरज शर्मा।

अवार्ड प्राप्त करते जे. के. यूनिट हैड एस. के. राठौर, एम. एस. शेखावत।

जयपुर। द एम्पालायर्स ऑफ राजस्थान के 53वें स्थापना दिवस पर 24 नवम्बर को यहां हेरीटेज होटल ग्रांड उनियारा में आयोजित एक भव्य समारोह में 'सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता 2016 अवार्ड' प्रदान किए गए। राजस्थान के श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ. जसवन्त सिंह यादव ने देश एवं राज्य के प्रमुख सीमेंट उद्योगों को भी कौशल विकास के लिए उनके द्वारा किए गए अद्वितीय कार्यों के लिए सम्मानित किया। श्रीसीमेंट की ओर से अवार्ड पीएण्डए हैड नीरज शर्मा ने ग्रहण किया। मीडिया को-ऑर्डिनेटर कमल मोरठिया ने बताया कि यह अवार्ड उद्योग द्वारा बहुआयामी कौशल विकास के लिए प्रदान किया गया। वृहद उद्योगों की श्रेणी में आउट स्टेण्डिंग परफोरमेन्स देने पर जे. के. सीमेंट वर्क्स, निम्बाहेड़ा के यूनिट हेड एस. के. राठौड़, सहउपाध्यक्ष एचआर एम. एस. शेखावत, ईआर दिलीप सिंह कृष्णावत, श्रम संघ अध्यक्ष नाहर सिंह , महामंत्री प्रवीण सक्सेना, सत्यनारायण मेनारिया (मांगरोल) एवं महामंत्री शंकर गुर्जर ने अवार्ड प्राप्त किया।

नाहर को बेस्ट प्रेसिडेंट अवार्ड

उदयपुर। राजस्थान प्रदेश वैश्य महा सम्मेलन की जयपुर में हुई बैठक में उदयपुर जिला वैश्य महा सम्मेलन के अध्यक्ष अनिल नाहर को बेस्ट प्रेसिडेंट और उदयपुर जिले को बेस्ट डिस्ट्रिक्ट सम्मान दिया गया। नाहर को यह सम्मान मुख्य सचिव अशोक जैन, महा सम्मेलन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक अग्रवाल, अंतरराष्ट्रीय महा सचिव बाबूराम गुप्ता एवं प्रदेश वैश्य महा सम्मेलन के अध्यक्ष आत्माराम गुप्ता ने प्रदान किया।

अवार्ड के साथ अनिल नाहर।

डॉ. कोठारी को पारख पुरस्कार

उदयपुर। प्रयास संस्थान की ओर से चुरू के सूचना केन्द्र में आयोजित समारोह में उदयपुर के साहित्यकार डॉ. देव कोठारी को राजस्थानी साहित्य में उनके योगदान के लिए कन्हैयालाल पारख राजस्थानी साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया। इस मौके पर लेकसिटी की युवा साहित्यकार रीना मेनारिया को भी दुर्गेश युवा साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया। पूर्व मंत्री अश्क अली टांक ने डॉ. कोठारी को 51 हजार रुपए तथा रीना को 51 सौ रुपए नकद और प्रमाण पत्र प्रदान किए।

प्रशान्त अग्रवाल पुरस्कृत

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल को अंतरराष्ट्रीय विकलांग दिवस 3 दिसम्बर 2017 को जयपुर के नेहरू भवन सभागार में राज्यस्तरीय विशेष योग्यजन पुरस्कार दिया गया। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. अरुण चतुर्वेदी ने उन्हें यह पुरस्कार दिव्यांगों की सेवा, चिकित्सा और पुनर्वास में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया।

भटनागर की ब्रिटिश उच्चायुक्त से भेंट

उदयपुर। रॉकवुड्स इंटरनेशनल स्कूल के प्रधानाचार्य आशीष भटनागर ने नई दिल्ली में ब्रिटिश उच्चायुक्त डोमिनिक एस्क्विथ से मुलाकात की। इस दौरान भारत वर्ष में कैंब्रिज विश्वविद्यालय से जुड़े विद्यालयों में से कुछ चुनिन्दा प्रधानाचार्य सम्मिलित हुए। भटनागर ने श्री एस्क्विथ को रॉकवुड्स स्कूल की गतिविधियों से परिचित करवाया और उदयपुर आने का निमंत्रण भी दिया जिसे उन्होंने स्वीकार किया। कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा आयोजित फोकस ग्रुप डिस्कशन श्वर्ल्ड रेडी 2030 के तहत हुए इस आयोजन में कैंब्रिज इंटरनेशनल एजुकेशन के सीईओ माइकल ओ सुलिवान, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस के मैनेजिंग डायरेक्टर रोड स्मिथ, कैंब्रिज असेसमेंट इंग्लिश के सीईओ शाऊल नासे और कैंब्रिज इएलेटी के मैनेजिंग डायरेक्टर माइकल पलुसे शामिल हुए।

मिराज मार्ट का शुभारंभ

उदयपुर। देश के प्रमुख औद्योगिक समूह में शुमार मिराज ग्रुप के नए उपक्रम मिराज मार्ट का 10 दिसम्बर 2017 को उदयपुर में प्रथम शोरूम का शुभारम्भ हुआ। पंचवटी स्थित मिराज हाउस परिसर में मिराज ग्रुप के चेयरमेन मदन पालीवाल ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच फीता काटकर मार्ट का उद्घाटन किया। शुभारंभ पर पालीवाल ने कहा कि कंपनी का यह 7वां स्टोर है और जल्द ही देश भर में मिराज मार्ट के 1000 मार्ट खोलने की योजना है। उन्होंने बताया कि कंपनी सस्ते दाम पर क्वालिटी प्रोडक्ट उपलब्ध कराती है। मार्ट में सभी तरह के उत्पाद उपलब्ध रहेंगे। समूह के एफएमसीजी हेड संजीव जोशी ने बताया कि ग्राहकों के लिए कई आकर्षक स्कीम भी उपलब्ध कराई जा रही है। इस अवसर पर प्रकाश पुरोहित, विकास पुरोहित, ओ पी मालपानी, संजीव, लक्ष्मण दीवान आदि मौजूद थे।

डॉ. सिंह डिजिटल मार्केटिंग में प्रथम

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक्स के सीईओ डॉ. अरविन्दर सिंह एडवांस डिजिटल मार्केटिंग कोर्स में प्रथम रहे। डॉ. सिंह को बेस्ट स्टूडेंट ऑफ द ईयर अवार्ड दिया गया। यह रैंकिंग वेब डिजाइनिंग सोश्यल मीडिया मार्केटिंग, गूगल मार्केटिंग सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन मापदंडों पर आधारित मॉड्यूल से की गई।

डॉ. सिंह ने एप बनाकर गूगल प्ले स्टोर पर लॉन्च कर राजस्थान लेवल पर रिकॉर्ड बनाया। यह कोर्स देहली स्कूल ऑफ इन्टरनेट मार्केटिंग उदयपुर शाखा में हुआ। फेकल्टी शुभम सिन्हा ने बताया कि कोर्स छात्रों और प्रोफेशनल्स के लिए उपयोगी है। संस्थान के निदेशक दीपक मित्तल और अंकित देवपुरा ने डॉ. सिंह को सर्टिफिकेट प्रदान किया।

कस्टमर केयर डे पर विविध आयोजन

उदयपुर। टाटा मोटर्स के सर्विस डीलर सी. के. मोटर्स के सिटी स्टेशन रोड स्थित शोरूम पर पिछले दिनों नेशनल कस्टमर केयर डे मनाया गया। इस अवसर पर रक्तदान, वाहन चालकों का नेत्र परीक्षण एवं बच्चों के लिये चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। महाप्रबन्धक बी. चक्रवर्ती ने बताया कि समारोह का प्रारम्भ टाटा मोटर्स के स्टेट सर्विस हेड लोकेशनाथ चौहान एवं अनूप पचौरी ने दीप प्रज्वलन कर किया। इस अवसर पर ड्राईवरों को हाई माईलेज अवार्ड एवं अन्य विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

महिला समृद्धि बैंक का एएचवी से एमओयू

उदयपुर। दी उदयपुर महिला समृद्धि अरबन को-ऑप. बैंक लि., उदयपुर ने प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत ऋणियों को सब्सिडी उपलब्ध कराने के लिये नेशनल हाउसिंग बैंक से हुए एमओयू पर हस्ताक्षर कर राजस्थान का पहला सहकारी बैंक होने का गौरव प्राप्त कर लिया है। बैंक अध्यक्ष श्रीमती विद्या किरण अग्रवाल ने बताया कि महिला समृद्धि बैंक की ओर से मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनोद चपलोत एवं नेशनल हाउसिंग बैंक की ओर से उपमहाप्रबंधक विशाल गोयल ने नई दिल्ली में 6 दिसम्बर 2017 को उक्त एमओयू पर हस्ताक्षर किए। महिला समृद्धि बैंक यह योग्यता हासिल करने वाला राजस्थान का पहला सहकारी बैंक है। अध्यक्ष ने बताया कि पिछले दिनों उदयपुर में सम्पन्न हुई सहकार भारती की राष्ट्रीय संगठन समिति की बैठक में बैंक के मुख्य कार्यकारी विनोद चपलोत को सहकारी भारती राजस्थान प्रदेश बैंकिंग प्रकोष्ठ प्रमुख का दायित्व भी सौंपा गया। श्रीमती अग्रवाल ने बताया कि अखिल भारतीय सहकार सप्ताह के दौरान मोबाइल बैंकिंग की भी शुरुआत कर दी है। मोबाइल बैंकिंग एप की लांचिंग गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने की। बैंक अध्यक्ष ने बताया कि वर्तमान में बैंक में 127 करोड़ की जमाएं और 50 की करोड़ की लोनिंग हो चुकी है।

साध्वी ऋतंभरा करेंगी, 'श्रीमद् भागवत कथा'

बीएन कॉलेज मैदान में तैयारियां जोर-शोर से आरंभ

उदयपुर। बी. एन. विश्वविद्यालय के विशाल प्रांगण में साध्वी ऋतंभरा जी 22 से 28 जनवरी 2018 तक 'श्रीमद् भागवत कथा' करेंगी। इस आयोजन में उदयपुर एवं आसपास गांवों के हर परिवार को शामिल होने के लिए पीले चावल दिए गए है। शहर भाजपा अध्यक्ष दिनेश भट्ट, आयोजन समिति के अध्यक्ष हैं। मुख्य संयोजक प्रकाश अग्रवाल, प्रचार प्रमुख मनोज जोशी, महिला समिति की अध्यक्ष वीणा अग्रवाल, राजेन्द्र श्रीमाली, दिनेश मकवाना, चित्रा मेनारिया, मानक अग्रवाल आदि घर-घर प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि साध्वी दीदी के उदयपुर आगमन पर उनका भव्य स्वागत किया जाएगा।

नर्सिंग छात्रों का सिल्वर जुबली कार्यक्रम

उदयपुर। नर्सिंग ट्रेनिंग सेंटर महाराणा भूपाल चिकित्सालय के 1988-91 के विद्यार्थियों का सिल्वर जुबली कार्यक्रम अशोका पैलेस सभागार में हुआ। नर्सिंगकर्मियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। 50 विद्यार्थियों ने पहली बार नर्सिंग का सिल्वर जुबली कार्यक्रम आयोजित किया। महाराणा भूपाल चिकित्सालय के अधीक्षक डॉ. विनय जोशी, एकीकृत महासंघ के जिलाध्यक्ष सत्यवीर सिंह तंवर, लक्ष्मीलाल वीरवाल, पन्नालाल पंवार, शंकरलाल जिनगर, भूपेन्द्र सिंह शेखावत, हेमन्त आमेटा, पवन कुमार, लक्ष्मीनारायण, दुर्गपाल सिंह समारोह के विशिष्ट अतिथि थे।

शोक समाचार

उदयपुर। प्रौढ़ शिक्षाविद् **गोवर्धन सिंह राव कुराबड़ (98)** का 21 नवम्बर, 2017 को सुखदेवी नगर, बेदला स्थित आवास पर स्वर्गवास हो गया। उन्होंने व उनकी पत्नी स्व. राजकुमारी ने राजस्थान विद्यापीठ के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर अनेक वर्षों तक सेवाएं दीं। वे अपने पीछे सुयोग्य पुत्र पत्रकार उग्रसेन राव व कवि अजातशत्रु सहित पौत्र-पौत्रियों एवं दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर विभिन्न सामाजिक संगठनों एवं राजनैतिक दलों के नेताओं-कार्यकर्त्ताओं ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। ज्ञानेश बिल्डर्स, हिमालय रसायन आदि प्रतिष्ठान के **श्री लोकेश चौधरी** का 30 नवम्बर 2017 को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती मंजू चौधरी, पुत्र आयुष व अनिश चौधरी तथा भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रयों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। सामाजिक कार्यों में भी सेवा के लिए चौधरी हमेशा आगे रहे। उनके निधन पर विभिन्न संगठनों ने गहरा दुःख व्यक्त किया है।

उदयपुर। हॉकी व फुटबाल में 1950-60 के दशक में मेवाड़ का गौरव बढ़ाने वाले **बुद्धिसागर हिंगड़** का 25 नवम्बर 2017 को 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। मैदान में सेंटर हॉफ पोजिशन पर खेलने वाले हिंगड़ खिलाड़ियों के बीच चायना वॉल नाम से लोकप्रिय थे। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती राजकुमारी, पुत्र राजकुमार, नितिन एवं डॉ. नीरव हिंगड़ तथा पुत्रियां डॉ. सुरेखा बाबेल, डॉ. अर्चना मेहता पौत्र-पौत्रियों दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। जाने-माने उद्यमी एवं समाजसेवी **श्री चन्द्रसिंह जी तलेसरा** (सुपुत्र स्व. श्री डूंगरसिंह जी तलेसरा) का 12 दिसम्बर 2017 को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती कमला जी तलेसरा, पुत्र सीए पवन तलेसरा, गगन, लोकेश एवं पौत्र-पौत्रियों तथा भाई-भतीजों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री दीपक कुमार शर्मा (पुत्र स्व. दधिमथी लाल शर्मा) का 28 नवम्बर 2017 को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल माता श्रीमती कमला देवी, पत्नी श्रीमती प्रीति शर्मा, पुत्र वेदांत व भाई-भतीजों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती नर्बदा देवी अग्रवाल धर्मपत्नी स्व. श्री कचरूलाल देसवारी का 13 दिसम्बर को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे पुत्र ओमप्रकाश, राजकुमार व सुनील, पुत्री कलावती, कान्ता व उषा सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

राजनगर (राजसमंद)। स्थानीय श्रीनाथ नर्सिंग कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राजकमल महात्मा की दादी एवं डॉ. लक्ष्मीलाल जी महात्मा की धर्मपत्नी **श्रीमती कंचन देवी** का 1 दिसम्बर 2017 को निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र डॉ. सत्यनारायण एवं स्व. दिनेश कुमार की पत्नी मीना देवी सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई है।

CHUNDA
PALACE

MAJESTIC INVITING TRANQUIL

JOYFUL MAGICAL POETIC

SUBLIME ETERNAL INSPIRING

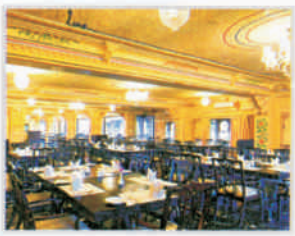

MUCH MORE THAN A HOTEL

1 Haridas Ji Ki Magri, Main Road,
Udaipur 313001, Rajasthan, India

Reservations: +91-294-2430251-252, 2430492
Facsimile: +91-294-2430889

E-mail: info@chundapalace.com
Website: www.chundapalace.com

St. Anthony's Sr. Sec. School
Affiliated to CBSE, New Delhi
Wishing you all
a
Merry Christmas
&
A Happy Peaceful & Prosperous New Year 2018
478/479, Sector - 4, Hiran Magri, Udaipur
School Ext. Goverdhan Vilas, Udaipur

अरिहन्त वाटिका
45000 वर्ग फीट का हरा भरा लॉन
12 कमरे व 2 हॉल उपलब्ध
आकर्षक विद्युत सज्जा
पार्किंग की पूरी व्यवस्था
मो.: 9414902400 9414166467
सेंट ग्रिगोरियस स्कूल के पीछे, शनि महाराज मन्दिर के सामने, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर - 313001

VNP
vijeta
Namkeen
Perfect rising snacks.
VIJETA NAMKEEN PRODUCTS
Main Road Bhupalpura, Udaipur-313001, Rajasthan INDIA,
Contact No. : 0294-2415817, Mob. : 09828555227
E-mail ID. : vijetanamkeen@gmail.com

WITH BEST COMPLIMENTS

BANSWARA

Yarn

Fabric

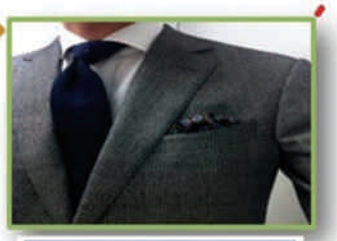
Garments

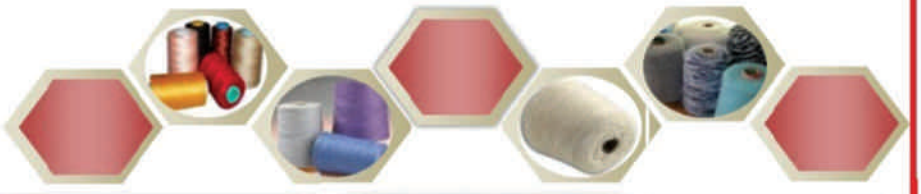

A Global Player in the Business of Fashion offering integraged Textile Solution to leading Brands World-wide & An Ideal Garment Solution Provider to Domestic & Global Readymade Brands

BANSWARA SYNTEX LTD

Regd. Office & Mills
Industrial Area, Dahod Road,
BANSWARA-327 001 (RAJ)
Ph.+91-2962-27676,79-81,257195-97
Fax.+91-2962-240692
Email:info@banswarasyntex.com

Mumbai Office
Gopal Bhavan (5th Floor)
199, Princess Street
MUMBAI -4000 02
Phoe:+91-22-66336571-76
Email:info@banswarasyntex.cim

Visit us at :www.banswarasyntex.com

Garment Unit:
Banswara Garments
98/3, Village Kadaiya
Nani Daman (U.T.)
Phone::+91-260-2221345, 2221505
Email: info@banswarasyntex.com

Surat Unit:
Plot No.5-6, G.I.D.C. Apparel Park
SEZ Sachin
SURAT-394230 (GUJARAT)
Phone:+91-261-2390363
Email:info@banswarasyntex.com

BADALA CLASSES
NO. 1 INSTITUTE IN COMMERCE EDUCATION
BADALA CLASSES
A new era for professionals
CA-CPT JUNE-17
1st RANK 192/200 MARKS
ZIYA NATH
BADALA CLASSES
ALL OTHERS (In Udaipur)
% SHARE OF BADALA
TOP 8 RANKS 8 0 100%
TOTAL SELECTIONS 203 87 70%
1st RANK in RAJASTHAN (June 2016) 190/200 MARKS
APARNA DAGA
ALI HUSSAIN VAGPURA 186Marks
PULKIT SISODIA 186Marks
SHUBHAM JAIN 186Marks
TAIKHUM BANDOOKWALA 186Marks
CHELSY SOMANI 185Marks
KANCHI AGRAWAL 185Marks
VAISHALI SHRIMALI 182Marks
YASH DAK 180Marks
NISHANT MANDAWAT 178Marks
ARWA SHAH 177Marks
KRINA KOTHARI 175Marks
MAHIMA RATHORE 174Marks
HIMANSHU BAHEDIA 173Marks
AASHI DESAI 171Marks
HUSSAIN GUMANI 171Marks
SHREYA SAMAR 171Marks
JAYESH RATHI 170Marks
RIDDHI JAIN 170Marks
SHUBHAM SOMANI 170Marks
AZEEM DEHLIWALA 170Marks
AISHWARYA POKHARNA 170Marks
CS FOUND. JUNE-17
CAPTURED 5 ALL INDIA RANKS IN ONE ATTEMPT
AIR 17 DIVYA SHARMA
AIR 20 NIKITA JAIN
AIR 21 SOMYA KHICHA
AIR 22 ASMITA PANCHARIYA
AIR 25 MONIKA NACHANI
Courses Offered
CA, CS, CMA, CFA, MBA, XII, XI, B.Com, BBA, M.Com, NIOS, RSOS
BADALA CLASSES (A Unit of Badala Classes Pvt. Ltd.)
STUDY CENTRE : KHALSA PUBLIC SCHOOL, SIKH COLONY, UDAIPUR
OFFICE : VINAYAK COMPLEX - B, I-FLOOR, DURGA NURSERY ROAD, UDAIPUR
Contact : 0294-2481120, 9413495256, 9602609338, 9460253289